तरुण-भारत-ग्रन्थावली—सं० ५

ग्रीस का इतिहास ।

लेखक

बाबू प्यारेलाल गुप्त ।

प्रकाशक

तरुण-भारत-ग्रन्थावली-कार्यालय
दारागंज, प्रयाग ।

बद्रीप्रसाद पाण्डेय के प्रबन्ध से नारायण प्रेस, प्रयाग में छपा ।

द्वितीय आवृत्ति
१००० | सं० १९८० वि० | मूल्य १=)

निवेदन ।

हमारी मातृभाषा में इतिहासग्रन्थों की कितनी न्यूनता है, यह किसी से अविदित नहीं है। इतिहास का महत्व बहुत बड़ा है—यहां एक विषय ऐसा है कि, जिसके अध्ययन से हम राष्ट्र के उत्थान और पतन के कारणों को जानते हुए अपने राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं। इतिहास, फिर चाहे वह अपने देश का हो, चाहे विदेश का हो, उसका अध्ययन प्रत्येक देश-हितचिन्तक के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

ग्रीस का इतिहास, संसार के इतिहासों में अत्यन्त महत्व का इतिहास है। भारत के प्राचीन इतिहास से इसका बहुत कुछ मेल है। अनेक क्रान्तियों से भरे हुए इस इतिहास को पढ़ कर, आशा है, हमारे देशभाई, अपने देश के लिए बहुत कुछ सोच सकेंगे। यहां पर यह कहने की आवश्यकता नहीं कि, यह इतिहासग्रन्थ उन्हीं लोगों के लिए तैयार किया गया है कि जो राष्ट्रीय भाषा हिन्दी के द्वारा नवयुवकों को इतिहास की शिक्षा देने-दिलाने का शुभ विचार रखते हैं। हमें आशा है कि, भारत की देशी संस्थाओं को, मातृभाषा में इतिहास की शिक्षा देने के लिए, इस पुस्तक का अच्छा उपयोग होगा।

यह पुस्तक प्रसिद्ध महाराष्ट्र इतिहासिक श्रीयुक्त गोविन्द सखाराम सरदेसाई बी० ए० के आधार पर लिखी गई है, अतएव उक्त विद्वान् महाशय को हम यहां पर हार्दिक धन्यवाद देते हैं। आपकी कृपा से ही यह पुस्तक राष्ट्रीय भाषा में प्रस्तुत हो सकी है।

प्रयाग, आश्विन शु० १,
सं० १९७५ } लक्ष्मीधर वाजपेयी।

अनुक्रमणिका ।

ग्रीक इतिहास का महत्व।

इतिहास का विषय इतना व्यापक, उपयुक्त और गहन है कि उसके स्वरूप का वर्णन, थोड़े में करना एक प्रकार से असम्भव है। सृष्टिक्रम के आरम्भ से आज तक मनुष्य की जो उन्नति होती गई, उसके तात्त्विक विवेचन को ही इतिहास कहना चाहिए। हम इस सृष्टिरूपी विराट शरीर के जीते-जागते घटकावयव हैं। यह शरीर अत्यन्त मंदगति से, किन्तु एक समान, वृद्धि को प्राप्त हो रहा है। इस वृद्धि की कथा प्रत्येक को समझ लेनी चाहिए। अर्थात् मनुष्य के अखिल जीवनक्रम और उसके अद्भुत विकास का ज्ञान हमें जब भली भांति हो जावेगा तभी हमारी इहलोक की यात्रा सुख-पूर्वक पूरी होगी। इधर कुछ दिनों से अनेक विद्वानों ने, बड़े परिश्रम के साथ, उपर्युक्त विकास को स्पष्ट और सुसंबद्ध करके दिखलाया है।

सच्चा और मार्मिक इतिहास लिखने का काम पहले पहल ग्रीकों ने ही किया था। ईस्वी सन् के चार सौ वर्ष पहले हिराडाटस नामक एक ग्रीक इतिहासकार उत्पन्न हुआ। उसने कानों सुनी हुई और आखों देखी हुई घटनाओं की कहानियों का वर्णन करके अपने अप्रतिम बुद्धि-कौशल का अपूर्व परिचय दिया है; और इसी कारण वह "इतिहास का जनक" कहा जाता है। हिराडाटस का ग्रन्थ पढ़ने ही योग्य है, फिर चाहे वह मूल हो या अनुवाद।

जैसा कि मुखपृष्ठ के अवतरण में कहा गया है, ग्रीस कुछ एक देश न था; और न उसे एक राष्ट्र ही कह सकते हैं। पश्चिम में स्पेन के तट से पूर्व की ओर यूफ्रेटिस नदी तक और दक्षिण में आफ्रिका के उत्तर किनारे से, उत्तर में काले समुद्र तक, जो बड़ा भारी मैदान है, उसके अनेक प्रदेशों में और अनेक द्वीपों में, स्थान स्थान पर ग्रीकों की बस्तियां थीं। अन्य राष्ट्रों के सदृश ग्रीक राष्ट्र कुछ एक ही निश्चित स्थान पर नहीं बसा था। फिर भी ग्रीक लोग जहां जहां बसे थे वहां वहां अपनी भाषा का व्यवहार करते थे, अपने स्वतंत्र विचार प्रकट करते थे और अपने कला-कौशल की उन्नति करते थे। उनकी इन्हीं सब बातों को, अर्थात् प्राचीन ग्रीक लोगों के सर्वसाधारण विचारों और आन्दोलनों को, ग्रीस संज्ञा दी जाती है। यूरोप महाद्वीप के आग्नेय कोण में जो छोटा सा प्रायद्वीप है, केवल उसी को प्राचीन ग्रीस देश नहीं समझना चाहिए। उक्त प्रायद्वीप के अंतर्गत जो प्रदेश है वह पहाड़ी और संकुचित है। वहां बस्ती के योग्य अधिक स्थान नहीं। आसपास के दो सौ मील में जो द्वीप हैं, वे भी ऐसे जान पड़ते हैं, मानो समुद्र से डुबकी मार कर ऊपर निकले हुए कोई पर्वत ही हैं! इन द्वीपों की भी गणना ग्रीस देश में ही थी। मुख्य प्रायद्वीप का प्रदेश अधिक से अधिक दो सौ मील लम्बा और सौ मील चौड़ा होगा। उसमें भी अनेक स्थानों पर खाड़ियां इत्यादि हैं। अतएव बराबर मिला हुआ पटपर प्रदेश बहुत ही थोड़ा है।

ऐसे प्रदेश के निवासियों के इतिहास को इतना महत्व क्यों दिया जाता है? यह बात तो कुछ है ही नहीं कि प्राचीन

काल में केवल ग्रीकों ने ही मनुष्य के निर्वाह योग्य साधन ढूंढ निकाले हों। ग्रीकों के पहले भी ऐसे अनेक राष्ट्र थे जो जमीन जोत कर खेती करना, धातुओं के हथियार बनाना, दूर देश में व्यापार करना, सुंदर और बड़ी इमारतें बनाना जानते थे। ऐसे सुख-साधनों के विषय में हिन्दू और चीनी राष्ट्र ग्रीक लोगों से बहुत आगे बढ़े हुए थे। तब फिर क्या कारण है कि ग्रीकों के इतिहास को इतना महत्व दिया जाता है? बात यह है कि, सांसारिक व्यवहार में विचारशक्ति का स्वतंत्ररूप से उपयोग करनेवाले प्रथम ग्रीक ही हुए। उदाहरणार्थ, ग्रीकों ने छोटे छोटे अनेक प्रजासत्ताक राज्य स्थापित किये। जब कि एक ओर पृथ्वी की पीठ पर अनेक राजा अपने सैन्यबल से बड़े बड़े राष्ट्रों पर कठोर शासन कर रहे थे, तब इधर ग्रीक लोगों ने भिन्न भिन्न नगरों में सब को सुखी रखनेवाली लोकसत्ताक राज्यप्रणाली प्रचलित की। ग्रीक साहित्य को देखिये तो उसमें भी यही बात पाई जाती है। कवि, इतिहासकार, वक्ता और साधु, सबों ने, अपनी निज की बुद्धि लड़ा कर और स्वतंत्र विचार करके अपने उद्योग की पराकाष्ठा कर दी है। प्रत्येक ग्रीक मनुष्य के हृदय में यह विचार बिलकुल दृढ़ हो गया था कि, जो बात हमारी विचारशक्ति में उचित जँचेगी वही सत्य है; और किसी विषय में भी हम दूसरों के गुलाम नहीं बनेंगे। यही कारण है कि, ग्रीक राष्ट्र और ग्रीक भाषा का अस्त हुए बहुत काल हो जाने पर भी, ग्रीकों की ही विचारशक्ति के ज़ोर पर यूरोप की इतनी उन्नति हुई है। धर्म, नीति, भौतिकशास्त्र, राजनीति, इत्यादि विषयों में जो उन्नति आज-कल यूरोप में दृष्टिगोचर हो रही है, उसका मूल कारण ग्रीस ही है। नीति-

शास्त्र, तर्कशास्त्र और भूमिति के विषय तो ग्रीकों के द्वारा ही पूर्णत्व को प्राप्त हुए हैं। हिराडाटस के मुकाबिले का इतिहासकार आज तक कोई नहीं हुआ। गतकालीन परिस्थिति पर यथायोग्य विचार करके कार्यकारण भाव का मार्मिक विवेचन सब से पहले इसी ने किया है, उसकी निरीक्षण-शक्ति और अन्वेषक बुद्धि बहुत ही बढ़ी-चढ़ी थी। हिराडाटस के पश्चात् दूसरा प्रसिद्ध ग्रीक इतिहासकार थ्यूसिडायडिज हुआ। पेरिक्लीज के समय के एथेन्स के शासन का और पिलापोनेशन युद्ध का उसने जो वर्णन किया है, वह अप्रतिम है। सारांश यह है कि, नवीन विचार और नूतन कल्पनाएँ जैसी ग्रीक ग्रंथों में पाई जाती हैं, वैसी दूसरी भाषा में कहीं नहीं देखी जातीं। प्रायः सभी विषयों के विख्यात ग्रंथकार ग्रीस देश में उत्पन्न हुए। ग्रीस की ही सारी सभ्यता रोम ने स्वीकार की; और वही फिर सारे यूरोप में फैल कर, उसकी वर्तमान उन्नति का कारण हुई है।

ग्रीस देश के प्रसिद्ध ग्रंथकारों की सूची और उनका काल।

काल (ईसा के पहले)	कवि और नाटककार	वक्ता	इतिहासकार	तत्ववेत्ता और वैज्ञानिक
७०० के पहले.. कभी न कभी	होमर			
६००–५०० ...	सोलन ज़ेनोफेन्स इबिकस अनाक्रयोन		हेकेटियस	थेल्स पायथेगोरास ज़ेनोफेन्स
५००–४०० ...	सिमोनीडाज पिंडार क्रेटिनस यूपोलिस अरिस्टोफेनिस	ऍंटिफोन ऍंडासिडिज	हेलानिकस हिराडाटस थ्युसिडायडिज	पार्मेनिडिज एंपिडाक्लिज अनेक्ज़गोरास
४००–३०० ...		लिसियास इसोक्रेटिस डेमास्थेनिस लायकरगस हायपराइड्स डिनार्कस	ज़ेनोफन थिओपापस एफोरस	साक्रेटि स प्लेटो अरिस्टाटल

ग्रीस देश के प्रसिद्ध ग्रंथकारों की सूची और उनका काल।

काल (ईसा के पहले)	कवि और नाटककार	वक्ता	इतिहासकार	तत्ववेत्ता और वैज्ञानिक
३००–२०० ...	केलिमेकस अरेटस थिओक्रिटस मोस्कस बियोन		मानीथो बेरोज़स	यूक्लिड आर्किमिडिज ज़ेनोडोटस अरिस्टोफेनिस स्टोइक तत्ववेत्ता
२००–१०० ...	अपोलोनियस हाडियस निकँडर		पोलिबियस	अरिस्टार्कस अपोलोडोरस
१००–१ ...		डायोनिसियल	डिओडोरस सिक्युलस डायोनिसियस	
ईसा के पश्चात् १–१००	बाबियस	...	स्ट्रेबो जोज़ोफस प्लूटार्क	एपिक्टेटस
१००–२०० ...	ओप्पियन	हर्मोजिनिज अरिस्टाइड्ज़ ल्यूसियन	एर्यन ओप्पियन पाज़ोनियस	पोलक्स टालेमी आथीनियस पोलिएनस मार्कस आरेलियस

ग्रीस का इतिहास।

पहला अध्याय।

आरम्भ।

ग्रीस देश यूरोप के आग्नेय दिशा में है। प्राचीन समय में उसका विस्तार वर्तमान समय की अपेक्षा बहुत अधिक था। देश के मध्य भाग में कारिंथ की खाडी है, और उससे देश के दो भाग हो गये हैं। प्राचीन ग्रीस देश में, इन दो भागों के सिवा, ईज्यन समुद्र, आयोनियन समुद्र और भूमध्य समुद्र के समस्त द्वीप और एशिया माइनर का कुछ भाग भी शामिल था। इन दूर दूर के प्रदेशों में ग्रीकों ने बहुत प्राचीन समय में बस्तियाँ बसाई थी।

मुख्य ग्रीस देश में पहले हेलन नाम के लोग रहते थे। इस नाम का ग्रीक लोग अब भी व्यवहार करते हैं, और इसी से वे अपने देश को हेलास भी कहते हैं। ग्रीस बडा ही सुन्दर देश है। वहां पहाडो की अनेक श्रेणियां हैं, और इस कारण स्वाभाविक ही उसके बहुत से विभाग हो गये हैं। प्रत्येक विभाग में प्राचीन समय से भिन्न भिन्न जाति के लोग रहते थे। प्रत्येक जाति के लोगों का स्वतन्त्र राज्य और स्वतन्त्र

व्यवस्था थी। इस कारण देश में, भिन्न भिन्न समय पर, अनेक छोटे छोटे राज्य उत्पन्न हुए; और समय पाकर उनका विकास भी हुआ।

हेलन लोगों के पहले ग्रीस में पेलास्जान्स नामक एक जंगली जाति के लोग रहते थे। बाद को हेलन्स पूर्व की ओर से ग्रीस देश में आये। उन्होंने पहले थेसली प्रान्त में अपनी बस्ती बसाई; और धीरे धीरे दक्षिण की ओर बढ़ते गये। इस प्रकार उन्होंने अनेक स्वतंत्र राज्य स्थापित कर लिये।

कहते हैं कि, हेलन लोगों का मूल पुरुष हेलन नामक एक राजा था। यह राजा ग्रीकों के देवता जुपिटर का पुत्र था। आगे चलकर इसी राजा का नाम इन लोगों को प्राप्त होगया। परन्तु यह बात ऐतिहासिक नहीं, काल्पनिक है, इसलिये विश्वास करने योग्य नहीं।

ग्रीस के इतिहास का पहला भाग वीर-काल कहलाता है। इस वीर-काल में देश में अनेक वीर पुरुष उत्पन्न हुए। उनकी अनेक कथाएं और कविताएँ, जो उस समय उपलब्ध थीं, उन्हीं के आधार पर, उस समय का इतिहास लिखा गया है। ग्रीक लोग समझते थे कि, इन वीर पुरुषों का अवतार देवताओं से हुआ है; और इसलिए वे उनकी पूजा देवताओं के सदृश करते थे। बाद को ग्रीस देश में बड़े बड़े सरदार घराने उत्पन्न हुए। ये सरदार उपर्युक्त वीर पुरुषों में से किसी एक को अपने अपने घराने का मूल पुरुष समझते थे। इन वीर पुरुषों का काल लगभग २०० वर्षों का—अर्थात् हेलन्स लोग पहले पहल जब ग्रीस देश में आये तब से लगा कर ट्राय की चढ़ाई तक—समझा जाता है। इसी काल में ग्रीकों के राज्य

स्थापित हुए; और उनकी संस्थाएं उत्पन्न हुईं। इन राज्यों और संस्थाओं के विषय में अनेक दंतकथाएं कही जाती हैं, जो निरी काल्पनिक हैं। उदाहरणार्थ, कहते हैं कि, सेक्राप्स नामक एक राजा था। उसने एथेन्स की स्थापना की थी; और इजिप्ट देश की अनेक उपयुक्त बातें ग्रीस देश के एटिका प्रान्त में प्रचलित की थीं। उसने कुल बारह शहर बसाये थे, उनमें एथेन्स सब से बड़ा था। एथेनी नाम की एक देवी थी। उसकी कृपा देश पर सर्वदा बनी रहे—इस हेतु से उस शहर का नाम उसने एथेन्स रक्खा। कहते हैं कि, यह बात सन् ईस्वी के १५५० वर्ष पहले हुई। पर एथेन्स शहर की स्थापना के साथ ईजिप्ट देश का कुछ सम्बन्ध होना बहुत कम संभव जान पड़ता है। एथेन्स फिनीशियन जाति के लोगों का बसाया हुआ जान पड़ता है। फिनीशियन एशिया के पश्चिमी किनारे पर रहते थे; और बड़ी सभ्य दशा में थे। उन्होंने भूमध्य समुद्र के किनारे पर व्यापार के अनेक स्थान नियत किये थे। उनके समय में ग्रीक लोग असभ्य अवस्था में थे; और रोम का जन्म भी न हुआ था। ऐसी दशा में यह कदापि संभव नहीं है कि, एथेन्स के समान व्यापार का स्थान फिनीशियन लोगों की दृष्टि में न आया हो। एक दंतकथा ऐसी भी है कि, कड्मस नामक एक फिनीशियन सज्जन ने ग्रीस देश में पहले-पहल अपनी लिपि का प्रचार किया और थीब्स नामक शहर बसाया। इस कथा को यदि झूठ भी मान लें, तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि, ग्रीकों के प्राचीन इतिहास के साथ फिनीशियन लोगों का कुछ भी सम्बन्ध न था।

प्रत्येक राज्य की स्थापना के विषय में इसी तरह की एक न एक दन्तकथा है। प्रत्येक के मूल पुरुष भिन्न भिन्न हैं; और वे उनके पूज्य हैं। किन्तु, यह मानने का कुछ भी आधार नहीं है कि, वास्तव में ऐसे कोई पुरुष थे। जो हो, ग्रीकों का इन पर पूर्ण विश्वास था, और इन वीर पुरुषों का ग्रीकों के सम्प्रदाय, रहन-सहन, राजनैतिक और धार्मिक संस्थाओं पर बड़ा प्रभाव पड़ा था।

प्राचीन ग्रीक मूर्तिपूजक थे। उनके देवताओं की संख्या बहुत अधिक थी। उन देवताओं का एक राजा भी था। उस का नाम था जुपिटर या ज़ियस। थेसली प्रान्त में आलिंपस नामक एक पर्वत है। उसके शिखर पर उक्त देवता का दर-बार लगता था। जुपिटर के नीचे अपोलो नामक देवता का दरजा था। यह विद्या और संगीत कला का अधिष्ठाता माना जाता था। इसके सिवा पशुओं का संरक्षण करने, पापाचरण पर दंड देने तथा देवराज जुपिटर की आज्ञाएँ मनुष्यों तक पहुँचाने का भी काम इसी के अधिकार में था।

ग्रीक धर्म के मुख्य वीर पुरुष हर्क्युलीज, थीसियस, ट्रिप्टोलिमस, एस्क्यूलेपियस और मायनोज़ (Minos) हैं। इनके नीचे अगमेम्नान, अकीलीज, नेस्टार और यूलिसीज़ की गणना की जाती है। इनके सिवा ट्रोजन युद्ध में प्रसिद्धि पाये हुए अनेक वीर पुरुषों को भी ग्रीक लोग पूजनीय समझते थे।

प्राचीन ग्रीक इतिहास में अधिक विश्वसनीय बात ट्राय का घेरा अर्थात् ट्रोजन युद्ध है। यह युद्ध ईसा के लगभग तेरह सौ या एक हज़ार वर्ष के पहले हुआ था। इस युद्ध का वर्णन प्राचीन कविता में किया गया है। युद्ध समाप्त होने के

दो तीन सौ वर्ष बाद होमर नामक एक विख्यात कवि हुआ। उसी ने इस युद्ध का वर्णन कविता में किया, जिसका सारांश इस प्रकार है :—

प्राचीनकाल में एशिया के पश्चिमी किनारे पर एक समृद्धि-शाली राज्य था। उसकी राजधानी ट्राय शहर में थी। प्रायम उसका राजा था। उसके पेरिस नामक एक पुत्र था। पेरिस एक बार ग्रीसदेशान्तर्गत स्पार्टा के राजा मेनिलास के दरबार में गया। मेनिलास ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। पर पेरिस ने बड़ी कृतघ्नता दिखलाई—वह मेनिलास की स्त्री हेलन को अपने साथ ट्राय भगा ले गया। इस दुष्टता का बदला लेने के लिए मेनिलास ने समस्त ग्रीक राजाओं को एकत्र करके प्रायम के साथ युद्ध आरम्भ किया; और ट्राय शहर को चारों ओर से घेर लिया। शहर की किलेबंदी मज़बूत थी, अतएव यह घेरा दस वर्ष तक बना रहा। अन्त में ग्रीकों ने युक्तिपूर्वक शहर अपने अधिकार में कर ही लिया। इस युद्ध में अनेक वीरों ने नाना प्रकार के अघटित और अपूर्व शूरता के कार्य किये। ग्रीकों ने अंतिम युक्ति यह की कि, उन्होंने लकड़ी का एक बड़ा भारी घोड़ा बनाया, और उसे कोट के बाहर रख दिया। घोड़े के पेट के भीतर मेनिलास और अनेक अन्य योद्धागण, गुप्त रीति से, बैठे हुए थे। शेष सेना घेरा छोड़ कर चले जाने का बहाना कर दूर जा छिपी थी। ट्राजन लोगों ने जब देखा कि शत्रु चले गये तब वे उक्त लकड़ी के घोड़े को खींचते हुए शहर के भीतर ले आये। रात होने पर मेनिलास, अपने योद्धाओं सहित, घोड़े के पेट से बाहर निकला, और किले का दरवाज़ा खोल कर अपनी सेना को भीतर ले आया। इस तरह

ट्राय शहर पर अधिकार करके ग्रीकों ने उसे विध्वंस कर डाला और मेनिलास की स्त्री हेलन को वापस ले आये।

यह सब करके ग्रीक राजा जब स्वदेश को लौटे तब क्या देखते हैं कि, विदेशियों ने उनके राज्यों पर अधिकार जमा लिया है! इस लिए उन्हें फिर युद्ध करना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि, कुछ राजाओं को तो उनका राज्य वापस मिल गया; परन्तु कुछ को राज्य न मिलने के कारण देश परित्याग करना पड़ा। देश त्याग करनेवालों में आडिसियस उर्फ़ यूलिसीज़ नामक इथाका द्वीप का राजा था। ट्राय का युद्ध होने के बाद दस वर्ष तक वह अनेक कारणों से स्वदेश लौट न सका। इस लिए लोगों ने समझा कि, वह समुद्र में डूब कर मर गया। पेनिलोप नामक उसके एक स्त्री थी। उसके पति को मरा जान-कर अनेक राजाओं ने उससे विवाह करना चाहा। पर पेनिलोप पतिव्रता थी; उसने दुबारा विवाह करना स्वीकार न किया। उसने कोई काम बतला कर कह दिया कि, जब तक यह पूरा न होगा, मैं विवाह न करूंगी। दिन भर वह उपर्युक्त काम करती रहती; परन्तु रात को सब बिगाड़ डालती थी; अतएव यूलिसीज़ के आने तक उसका वह काम पूरा ही न हुआ। बाद को एक दिन यूलिसीज़ भिखारी के वेश में अपने महल में वापस आया; और अपनी स्त्री तथा पुत्रों को अपना परिचय दिया। उसके एक पुत्र का नाम टैलेमेकस था। इस पुत्र की सहायता से यूलिसीज़ ने अपनी स्त्री और राज्य को फिर वापस पाया; और शत्रुओं को पराजित किया। इस प्रकार ट्राय के युद्ध और यूलिसीज़ के प्रत्यागमन की कथाओं का वर्णन महाकवि होमर ने क्रमशः अपने इलियड और ओडिसे

नामक दो काव्य-ग्रंथों में किया है। आगे चल कर ग्रीक लोगों की जब उन्नति हुई तब वे इन ग्रंथों का अध्ययन करने लगे। प्रत्येक विद्यार्थी को यह ग्रंथ पढ़ने पड़ते थे। ग्रीक भाषा सीखने वाले अब भी इन ग्रंथों का अध्ययन करते हैं।

यद्यपि यह बात प्रसिद्ध है कि, उपर्युक्त दोनों ग्रंथ होमर के लिखे हुए हैं, तथापि इस विषय में अभी तक मतभेद है कि, होमर अकेले ने ही वे ग्रंथ लिखे, या उनके भिन्न भिन्न भाग, भिन्न भिन्न समय पर, भिन्न भिन्न कवियों द्वारा लिखे गये हैं। ग्रीस देश में उस समय अनेक कवि थे। बड़े बड़े उत्सवों के अवसरों पर वे नाना प्रकार की स्वतंत्र कविताएं रच कर सभाओं में सुनाते थे। निस्सन्देह उन कविताओं में ट्रोजन युद्ध का भी वर्णन अवश्य रहता होगा। संभव है कि, होमर ने ऐसी अनेक फुटकर कविताओं का संग्रह करके उसे "इलियड" नाम दे दिया हो। होमर एशिया में आयोनिया का रहनेवाला था। उसके समय में शायद ग्रीकलिपि का आविर्भाव भी नहीं हुआ था। ऐसी दशा में, यह भी संभव है कि, उसकी संग्रह की हुई कविताएं, पहले, लोगों ने कंठाग्र कर ली हों; और कुछ समय तक वे वैसी ही प्रचलित रही हों।

ईस्वी सन् के छै सौ वर्ष पहले तक ग्रीकों ने कागज पर लिखने की कला नहीं सीखी थी। वे लकड़ी, पीतल अथवा पत्थर पर अपना लेख खोद कर रखते थे। ई० स० के ५७२ वर्ष पहले इजिप्ट देश में राज्यक्रांति हुई; और अमासीज़ नामक पुरुष को वहां का राज्य प्राप्त हुआ। उसने ग्रीकों से मित्रता जोड़ी; और उन्हें अपने राज्य में आकर बसने तथा व्यापार करने की आज्ञा दी।

इजिप्ट देश में पेपिरस नामक वनस्पति बहुत होती थी। वहां उससे एक प्रकार का कागज तैयार किया जाता था। आज-कल अङ्गरेज़ी में जो कागज को 'पेपर' कहते हैं, वह इसी 'पेपिरस' पर से निकला है। ग्रीक लोग पेपिरस के बहुत से वृक्ष अपने देश में लाये; और उनसे कागज बनाना आरम्भ किया। कागज का आविष्कार होने से ग्रीस देश में सर्वत्र लेखनकला का प्रचार हो गया। इसी समय होमर के ग्रंथ भी लिपिबद्ध हुए। इसके पहले वे मुखाग्र याद रक्खे जाते थे। होमर एशिया के पश्चिमी किनारे पर रहता था। वहां से कोई ये ग्रंथ ग्रीस देश में लाया; और वर्तमान स्वरूप में उनको लिखा। इन ग्रन्थों के निर्माण-काल में ग्रीक लोगों की जो दशा थी; और उनमें जो रीति-रवाज प्रचलित थे, उन सब के जानने का एक मात्र साधन यही ग्रंथ है।

ट्रोजन युद्ध समाप्त होने के बहुत काल पश्चात् होमर का जन्म हुआ था। अनुमान है कि, ईसवी सन् के लगभग नौ सौ वर्ष पहले वह उत्पन्न हुआ होगा। इसी बीच में ग्रीस के उत्तरीय भाग के थेसली प्रान्त से डोरियन जाति के लोग दक्षिण में आये; और सारा देश उन्होंने अपने अधिकार में कर लिया। अर्थात् जैसे नार्मन लोगों ने इँगलैंड पर चढ़ाई करके सेक्सन लोगों को जीता, उसी तरह डोरियन लोगों ने चढ़ाई करके हेलन लोगों को पराजित किया। इन डोरियन लोगों के युद्धों का वृत्तान्त पूर्ण रूप से उपलब्ध नहीं है। परन्तु उन्होंने ग्रीस में बहुत से राज्य स्थापित किये। उस समय से, फिर ग्रीक लोगों में तीन भिन्न भिन्न जातियां दिखाई पड़ने लगीं।

वे इस प्रकार हैं—ईओलियन्स, आयोनियन्स और डोरियन्स। यद्यपि ये तीनों जातियां ग्रीक ही कहलाईं, तथापि इनमें पारस्परिक भेद सदैव बना रहा। उदाहरणार्थ, अथीनियन लोग आयोनियन जाति के और स्पार्टन लोग डोरियन जाति के थे। ऐसा ही भेद-भाव इँगलैंड में भी सेक्सन और नार्मन जाति में बहुत काल तक बना हुआ था, सो इँगलैंड के इतिहास में प्रसिद्ध ही है।

दूसरा अध्याय।

होमर के समय में ग्रीस की अवस्था।

होमर के काव्यों से ग्रीस देश का जो हाल मालूम होता है, उससे जाना जाता है कि, उस समय ग्रीस के उत्तरी प्रान्त के छै भाग थे;—उत्तर में आयोनियन किनारे पर थेसली, इटोलिया, और आकरनेनिया; मध्यभाग में डोरिस और फोसिस; तथा कारिंथ की खाड़ी के किनारे पर लोक्रिस। उत्तरी और दक्षिणी भाग कारिंथ की संयोगीभूमि से जुड़े हुए हैं; और उसके बीचो बीच पर्वत की एक श्रेणी दक्षिणोत्तर चली गई है। दक्षिण ओर इस श्रेणी की अनेक शाखाएँ हो गई हैं; अतएव दक्षिणी भाग, जो पिलापोनेसस कहलाता है, उसके अनेक विभाग हो गये हैं। उन विभागों को आकेया, आर्केडिया, एलिस, मेसेनिया, आर्गोलिस और लेकोनिया कहते थे। स्पार्टा शहर लेकोनिया प्रान्त में है। उपर्युक्त सब प्रान्त भिन्न

भिन्न स्वतन्त्र राज्यों के रूप में थे, परन्तु उन सब की राज्य-व्यवस्था प्रायः एक ही ढँग की थी। मुख्य राजा की गद्दी वंश-परम्परा के लिए चलती रहती थी। युद्ध के अवसर पर समस्त अधिकार राजा के हाथ में रहते थे, पर शान्ति के समय, राज्यकार्य करने के लिए, राजा के नीचे एक सभा रहती थी। मुख्य न्यायाधीश का काम भी राजा के ही हाथ में था, और इसके लिए वह न्यायसभा में आया करता था। न्यायसभा बाजार के चौक में, अथवा और कही खुली जगह में, हुआ करती थी। न्यायाधीशों के लिए शिलासन बने हुए थे, और वे अर्धवृत्ताकार घेरे के बीच में रक्खे रहते थे।

होमर के समय में ग्रीक लोग बहुत कुछ सभ्यदशा में थे, और उन्हें उपयुक्त कलाओं का ज्ञान भी अच्छा हो गया था। तथापि वह ज्ञान सर्वसाधारण में नही फैला था, अतएव शिल्पज्ञ लोगों को कवि अथवा वैद्यों के समान ही ऊचा मान मिलता था। ऊन के वस्त्र बुनना तथा मिट्टी के भद्दे बर्तन बनाना उनको मालूम था। उस समय ग्रीस देश में इजिप्ट से मलमल और बाबिलान, टायर तथा सिडोन से गलीचे आते थे। अनेक धनवानों के यहां चांदी के प्याले भी रहते थे, पर शायद वे विदेश से बन कर आते होंगे।

होमर के समय में, और उसके पश्चात् भी, ग्रीक लोगों के साधारण व्यवसाय खेती करना, शराब बनाना और पशु पालना इत्यादि थे। परन्तु चूकि उस समय भिन्न भिन्न राज्यों में युद्ध हुआ ही करते थे, अतएव बीच बीच में ये व्यवसाय बन्द पड़ जाते थे, और चाहे किसान हो, या ग्वाला हो, उसे युद्ध में आना ही पड़ता था।

राजधानी के मध्यभाग में, अथवा उसके निकट किसी स्थान पर, लकड़ी का एक किला बना हुआ था और तत्कालीन राजा लोग वहीं रहा करते थे। इस किले को आक्रोपोलिस कहते थे। धनवान् लोगों के महल भी लकड़ी के ही होते थे; और यद्यपि उनको महल कहते थे, तथापि भद्दे ढंग से बने हुए वे केवल लकड़ी के घर थे। पाहुनों के लिए इन घरों में बड़े बड़े दालान बने होते थे। क्योंकि ग्रीस देश में पाहुनों का बड़ा आदर-सत्कार किया जाता था। सच्चे हृदय से उनका मान-सन्मान करना वहां के निवासी अपना परम कर्तव्य समझते थे। वे पहले पहल यह नहीं देखते थे कि आगत मनुष्य शत्रु है या मित्र।

डेन्स लोग जिस प्रकार पहले सामुद्रिक चोरियां करके इंगलैंड पर छापा मारा करते थे, उसी प्रकार प्राचीन समय में, अनेक ग्रीक लोगों ने सामुद्रिक चोरी करके बहुत सा धन कमाया था। उस समय वहां के राजा तक सामुद्रिक छापा मार कर लूट-मार करना बड़ी शूरता और गौरव का कार्य समझते थे। इस तरह की लूट मार मचाने में वे जिनजहाज़ों का उपयोग करते थे वे आकार में लम्बे तथा कुछ गोल हुआ करते थे। उनके साथ एक डोंगी तथा पाल और बल्लियां भी रहा करती थीं। उनमें बहुतेरे तो इतने बड़े होते थे कि, उनमें सौ सौ मनुष्य तक समा सकते थे। तथापि उस समय दिशा-सूचक यंत्र का आविष्कार न होने के कारण, वे समुद्रतट से बड़ी दूर नौका न ले जा सकते थे।

सामुद्रिक चोरी का यह धंधा उस समय बहुत मामूली

समझा जाता था। किसान जब अपनी खेती का काम करने जाता था तब उसे लड़ाई का सामान साथ लेकर जाना पड़ता था; क्योंकि लुटेरे कब आकर हमला करेंगे, इसका कुछ ठिकाना न था। इन अत्याचारों से लोगों को बचाने के लिए सब राज्यों ने मिलकर एक प्रतिनिधि-सभा स्थापन की थी। इस सभा में प्रत्येक राज्य के दो प्रतिनिधि रहते थे। यह सभा वर्ष भर में दो बार होती थी। एक बार वर्षा ऋतु में थर्मापिली में और दूसरी बार बसंत ऋतु में डेल्फाय में। इस सभा का नाम एम्फिक्टिओनिक (Amphictyonic), अर्थात् परस्पर प्रेम-सम्वर्धक सभा था। युद्ध तथा शांति के समय में समस्त राष्ट्रों में जिन नियमों का पालन किया जाता था, उनका निर्धारण यही सभा करती थी। इसके सिवा, यह सभा उन लोगों का भी विचार करती थी जो धर्म-सम्बन्धी नियमों का उल्लंघन करते थे। निर्धारित किये हुये नियमों का समुचित रीति से पालन किया गया या नहीं, इसकी जांच भी इसी सभा की छमाही बैठक में होती थी। इस सभा के सभासद पांच वर्ष में एक बार, अपने समस्त कुटुम्ब को डेलास में एकत्र करके एक बड़ा धर्मोत्सव करते थे।

ग्रीक लोगों के धर्म में त्योहारों और उत्सवों का बड़ा महत्व था। होमर के ग्रंथों से यद्यपि इस विषय में बहुत कम बातें मालूम होती हैं, तथापि देश के सब लोग एकत्र होकर देवोत्सव और यज्ञयाग किया करते थे। साथ ही भजन भी गाये जाते थे; और जुलूस भी निकलता था। ग्रीक लोगों में सार्वजनिक भजन का यहीं से आरम्भ है। इन भजनों के गाते समय डफ और झांझ का उपयोग किया जाता था।

होमर के समय में ग्रीक लोगों के मंदिर यद्यपि छोटे और लकड़ी के ही होते थे, तथापि बड़ी बड़ी फुलवाड़ियों या बगीचों के भीतर बने होते थे; और भीतर दीपक लगे होते थे। बाद को जब देश में सम्पति की वृद्धि हुई तब लकड़ी के स्थान पर पत्थर का उपयोग करने लगे। जिन अमराइयों के भीतर ये मंदिर होते थे, उनके वृक्ष कभी काटे न जाते थे। यदि कोई अपराधी इन बगीचों में जा छिपता था, तो फिर उसके पकड़े जाने का डर नहीं रहता था। ग्रीक लोगों में पुरोहितों की कोई अलग श्रेणी न थी। सार्वजनिक त्योहारों में, कोई भी योग्य पुरुष, पुरोहित का कार्य करने के लिए, चुन लिया जाता था; और प्रत्येक कुटुम्ब का मुखिया अपने अपने घर पुरोहित का काम कर लेता था।

होमर के समय में सम्पूर्ण लोगों की तीन श्रेणियां थीं। पहली श्रेणी उन लोगों की थी जिन्होंने युद्ध में पराक्रम दिखलाकर, और विजय सम्पादन करके, अन्य देशों को जीता था; ये अपने को सरदार अथवा योद्धा समझते थे। दूसरी श्रेणी विजित लोगों की थी; और तीसरी श्रेणी गुलामों की थी।

प्राचीन ग्रीकों की रहन-सहन बिलकुल सादी थी। उनके घर में मेज, कुर्सी और बेंचें इत्यादि रहा करती थीं; कुछ धनवानों के घर पलँग भी रहते थे। पलँग पर बाघ अथवा अन्य पशुओं के चमड़े के गद्दे पड़े रहते थे। गरीब लोग जमीन पर भेड़ों का चमड़ा बिछाकर अथवा सूखे पत्तों का बिछौना बना कर सोते थे। पुरुष लोग ऊपर से नीचे तक सारा अंग ढांकने वाली धोती पहनते थे; और ऊपर से एक ऊन की शाल ओढ़ लेते थे। स्त्रियां एक लम्बा सा झगा पहनकर ऊपर

से पुरुषों के समान ही ऊन की शाल ओढ़ लेती थीं। यह तो हुआ धनी लोगों के पहनावे का वर्णन। अब गरीबों का पहनावा क्या होता था, सो सुनिये। ये बेचारे बकरों या मेढ़ों की खाल पहना करते थे। युद्ध के अवसर पर सरदार लोग जिरह-बख़्तर पहन कर रथ पर आरूढ़ होते थे। युद्ध ही उनका मुख्य कार्य समझा जाता था, इसलिए शस्त्र, घोड़े और रथ उनकी मुख्य सम्पत्ति थी।

घर में वे किस प्रकार से रहते थे, इसका पूर्ण रूप से पता नहीं लगता। बड़े बड़े भोजों के अवसरों पर लोग दालान के चारों ओर की दीवारों से पीठ लगाकर बैठते थे; और प्रत्येक मनुष्य के सन्मुख छोटी सी चौक पर पात्र रक्खा जाता था। दालान का मध्य भाग खाली रहता था; और इसमें बाजंत्री लोग बाजा बजाते हुए महमानों का मनोरंजन करते रहते थे। गोमांस, मेढ़े, बकरी और सुअर का मांस, पनीर (Cheese) और फल इत्यादि खाने के मुख्य पदार्थ थे। शराब और पानी का मिश्रण पहले ही से एक बड़े घड़े में तैयार कर रक्खा जाता; और वही पीने के लिए भोजन के समय परोसा जाता था। प्रत्येक मनुष्य शराब का प्याला मुंह में लगाने के पहले थोड़ी सी शराब ज़मीन पर डालकर कहता कि, "अपोलो, यह तुम्हें अर्पण किया," देवी, यह तुझे अर्पण किया इत्यादि। बर्तन और प्याले प्रायः मिट्टी ही के रहा करते थे। परन्तु धनवानों के यहां बड़े बड़े भोजों के अवसर पर, चांदी के प्याले भी देखे जाते थे।

तीसरा अध्याय।

एथेन्स का राज्य।

पहले हम यह कह चुके है कि, ग्रीस देश में बहुत से छोटे छोटे राज्य थे। इन राज्यों में एथेन्स और स्पार्टा, मुख्य, और विशेष प्रबल थे। एथेन्स की स्थापना कब हुई, यह ठीक नही कहा जा सकता। पहले एटिका प्रान्त के अनेक छोटे छोटे विभाग थे। प्रत्येक विभाग में एक एक स्वतत्र राजा था। सच पूछिये तो ये विभाग बहुत ही छोटे, अर्थात् दो दो, तीन तीन गांव मिलकर बने थे। अतएव इन विभागों को राज्य कहने की अपेक्षा रियासतें कहना ठीक होगा। इन भिन्न भिन्न रियासतों में सर्वदा लडाई-झगड़े हुआ करते थे। कुछ काल के पश्चात् बारह रियासतों ने एका किया, और अपना मुखिया एथेन्स को बनाया, उस समय यह निश्चित हुआ कि, परस्पर एक दूसरे को सहायता करके सब की रक्षा की जाय। सेक्राप्स और उसके बारह शहरों के विषय में जो कथा प्रचलित है, वह शायद इन्ही बारह रियासतों की एकता पर से निकली है। कुछ समय के पश्चात् उन बारहों रियासतों का एक ही राज्य बन गया, और एथेन्स उसकी राजधानी हुई, तथा सब राज्यकार्य वही स होने लगा।

एक दतकथा है कि, थीसियस नामक राजा ने उक्त बारह रियासतों की एकता की, और एथेन्स शहर को बढ़ाया। उसी ने मदिर बनाये, तथा समस्त एटिका प्रान्त के लिए कानून

और कायदे तैयार किये। उक्त थीसियस राजा वास्तव में कोई मनुष्य था, या केवल काल्पनिक ही था, यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। इतनी बात सच है कि, एथीनियन उसे परम पूज्य मानते थे; और देवता के सदृश उसकी पूजा करते थे। तथापि जान पड़ता है कि, वह काल्पनिक ही पुरुष था। क्योंकि एथेन्स के कायदे-कानून किसी एक ही के बनाये नहीं हैं, वे भिन्न भिन्न समय में तैयार हुए हैं। एटिका प्रान्त के निवासियों का एक राज्य बनाने पर, सम्पूर्ण लोगों के चार भाग किये गये; और फिर प्रत्येक भाग के तीन विभाग किये गये। इन विभागों को फ्रेट्रिया, कहते थे। फ्रेट्रिया का मतलब है—एक जाति। प्रत्येक फ्रेट्रिया में कई गोत्रों के, अर्थात् अनेक मूल पुरुषों से वृद्धि पाये हुए, लोगों की गणना होती थी। एक गोत्र में कई कुटुम्ब होते थे। इन सब विभागों में जितने लोगों की गणना होती थी, उन्हीं को "एथेन्स के नगरवासी" की संज्ञा दी जाती; उन्हें कुछ विशिष्ट हक़ भी दिये जाते थे। एक फ्रेट्रिया में लगभग तीन गोत्र होते थे। प्रत्येक गोत्र के विशिष्ट कुलाचार थे; और उनके मुर्दों के गाड़ने की जगह अलग रहती थी। प्रत्येक कुटुम्ब के धार्मिक संस्कार भिन्न भिन्न थे, जो उन कुटुम्बों में सदैव प्रचलित रहते थे। जब किसी कुटुम्ब के निर्वंश हो जाने पर उसके संस्कार बंद हो जाते थे तब लोग समझते थे कि बस अब सारे देश पर ईश्वर का कोप होगा; और अब बहुत जल्द कोई न कोई आपत्ति आवेगी।

ईसवी सन् के नौ सौ वर्ष पहले एथेन्स की राजसत्ता भंग हो गई; और धीरे धीरे प्रजासत्ताक राज्य स्थापन होने लगा। सब से पहले राजा के स्थान पर "आर्कन" नामक एक मुख्य

अधिकारी, अर्थात् मजिस्ट्रेट, नियुक्त हुआ। उसका अधिकार उसके सारे जीवन स्थिर रहता था। एक दन्तकथा है, जिस से इस परिवर्तन का कारण जान पड़ता है। एक बार पिला-पोनेसस की सेना ने एटिका पर चढ़ाई की। उस समय डेल्फाय के अपोलो का शकुन उठाने के लिए एथेन्स से कुछ वकील भेजे गये। वे वकील देवी का शकुन उठा कर यह समाचार ले आये कि, जब एथेन्स का राजा मरेगा, तभी शत्रु पराजित होगा। यह संदेशा जब एथेन्स के राजा कोड्स ने सुना तब वह अपने प्राण देने को तैयार हुआ। एक दिन वह स्वयं ही, किसी को न बतलाते हुए, शत्रुओं की सेना में घुस गया; और शत्रुओं ने उसे न पहचान कर मार डाला। पीछे जब शत्रुओं को यह बात मालूम हुई तब वे, एथेन्स को जीतना दुर्घट समझकर स्वदेश को वापस चले गये। इधर एथेन्स वालों ने राजा के स्थान पर आर्कन की नियुक्ति कर ली।

उपर्युक्त डेल्फाय के शकुन का महत्त्व राज्यकार्य में बहुत अधिक था। राष्ट्र के राजकीय अथवा निजी व्यवहार में इतनी छोटी सी बात पर अवलम्बित रहकर कार्य करना इतिहास में शायद ही कहीं मिलता हो। ग्रीक लोगों की, और आगे चल कर रोमन लोगों की भी, यही समझ थी कि, इन शकुनों के द्वारा देवता अपनी इच्छा प्रकट करते हैं। प्राचीन काल में ग्रीस देश में ही नहीं, किन्तु उस समय के मूर्तिपूजक अन्य राष्ट्रों में भी, अपोलो का बड़ा मान था। डेल्फ़ाय की एक अमराई में अपोलो का मंदिर था; और उसकी मूर्ति सोने की थी। मंदिर पुष्पहारों से सदैव सजा रहता था। वहां सदा ही

पुजारी रहते थे। सब लोगों के प्रश्नों के उत्तर इन्हीं पुजारियों के द्वारा मिला करते थे; अतएव इनका महत्व बहुत ही बढ़ा-चढ़ा हुआ था। सब ग्रीक लोगों को यह पूर्ण विश्वास था कि, ये उत्तर स्वयं अपोलो की ओर से ही मिलते हैं। परन्तु बात असल में यह थी कि, ये पुजारी राज्य के मुखिया लोग थे; इस लिए ये अपनी इच्छा के अनुसार लोगों के प्रश्नों का उत्तर दिया करते थे। पहले तो वह मन्दिर एक बड़े अवघड़ स्थान पर बना हुआ था; और फिर उसके नीचे एक बड़ी गुफा थी। उस गुफा से दुर्गंधयुक्त हवा ऊपर आया करती थी। गुफा का मुंह सदैव बन्द रहता था; परन्तु प्रश्न पूछते समय गुफा के मुँह पर एक पिताई रख देते थे, और उस पर एक स्त्री को बैठाते थे। इस स्त्री को पायथिया कहते थे। स्त्री के तिपाई पर बैठने के बाद गुफा का मुंह खोल दिया जाता था। मुंह खोलते ही दुर्गंधि ऊपर उठती; और वह स्त्री दुर्गन्धि के मारे घबड़ा कर हाथ-पैर पटकने तथा अंड-बंड बकने लगती थी। उसकी इस दशा को देख कर लोग समझते थे कि, अब उस पर देवता आ गया। ऐसी अवस्था में वह जो कुछ बकती थी, पुजारी लोग लिख लिया करते थे; और फिर बाद को उसको कविता बनाकर पृच्छकों को दे दिया करते थे। इन कविताओं की शब्दयोजना ऐसी कुछ गड़बड़ और गोलमाल हुआ करती थी कि, जैसा जी चाहे वैसा अर्थ निकाल सकते थे। यही कारण है कि, परिणाम कुछ भी हो, भविष्य की सत्यता पर लोगों का विश्वास कराने में कोई अड़चन न पड़ती थी। इसलिए देवता का शकुन मिथ्या होने का कभी अवसर ही नहीं आता था।

इस प्रकार डेल्फाय के शकुन का महत्व अत्यन्त बढ़ा हुआ था। पहले पहल पायथिया का काम करने के लिए नीच कुल की कोई स्त्री रख ली जाती थी। एक बार मन्दिर में उसका प्रवेश हो जाने पर फिर मन्दिर छोड़कर जाने अथवा विवाह करने की उसे मनाई थी। एक बार एक युवती उपर्युक्त नियमों का उल्लंघन करके मन्दिर से भाग गई; तब से यह नियम बना दिया गया कि, पचास वर्ष से कम अवस्था की स्त्री इस कार्य के लिए न रक्खी जावे। पहले पहल बहुत दिनों तक पायथिया का काम केवल एक ही स्त्री से लिया जाता था, पर बाद को पृच्छकों की संख्या बढ़ती हुई देखकर दो स्त्रियाँ रक्खी गईं। इनके अतिरिक्त एक तीसरी स्त्री भी मन्दिर में तैयार रक्खी जाती थी कि, जिससे किसी पायथिया के, दुर्गन्ध-युक्त वायु के कारण, बीमार हो जाने पर काम बन्द न हो।

डेल्फाय के देवता की सेवा में प्रतिनिधि भेजने के लिए एथेन्स के लोगों ने सरकारी जहाज़ बनाये थे। ये जहाज़ बड़े पवित्र समझे जाते थे। अन्य धार्मिक महोत्सवों में भी इन जहाज़ों का उपयोग होता था। यह पीछे बतलाया जा चुका है कि, डोरियन लोगों ने जब एथेन्स पर चढ़ाई की, तब देवता का शकुन राजा कोड्रस को बतलाया गया; उसके अनुसार जब राजा ने अपने प्राण दे दिये, तब आगे से नवीन राजा की नियुक्ति न करते हुए एथियन लोगों ने आर्कन नामक एक अधिकारी के नियुक्त करने की प्रथा प्रचलित की। इस प्रकार एथेन्स का राजवंश मिट गया। आर्कन की नियुक्ति भी पहले-पहल वंशपरम्परा की थी। यह चाल १६० वर्ष तक चलती

रही। इसके बाद यह निश्चय हुआ कि, प्रत्येक दस वर्ष में नये आर्कन की नियुक्ति हुआ करे। इसके कुछ समय बाद अल्प-सत्ताक, अर्थात् नौ मंत्रियों की राज्यव्यवस्था शुरू हुई। अर्थात् राज्य के नौ प्रमुख सरदारों के हाथ में राज्य की बाग-डोर दी गई। इन नौ सरदारों में एक प्रधान मंत्री था; दूसरा मुख्य धर्माधिकारी और तीसरा सेनापति था। शेष छै राज्य के मुख्य न्यायाधीश थे।

इस प्रकार सारी सत्ता जब राज्य के धनवान और प्रमुख सरदारों के हाथ में चली गई तब प्रजा की बड़ी हानि होने लगी। ये सरदार मनमाने कानून बनाते; और प्रजा को चूसते रहते थे। इन्होंने प्रजा पर इतने अधिक कर लगाये कि, उन करों को चुकाने के लिए लोगों को अपनी ज़मीन गिरवी रखनी पड़ती, या भारी व्याज पर कर्ज़ लेना पड़ता था। परिणाम यह हुआ कि, लोग क़र्ज में डूब गये। उनकी सारी ज़मीन चली गई; और वे गुलाम बन गये। क्योंकि उस समय यह कायदा था कि, जो मनुष्य अपना क़र्ज़ चुकाने में असमर्थ हो उसे अपने साहूकार का गुलाम बनकर, या उसकी मज़दूरी करके, अपना कर्ज़ अदा करना होगा। अनेक लोगों ने तो इस कर्ज़ के कारण अपने बाल-बच्चे तक बेच डाले। कानून ने, अठारह वर्ष से कम उम्र के लड़के, और अविवाहित लड़कियां या बहनें बेचने की सब को स्वतंत्रता दे रक्खी थी। इधर दरिद्रता के कारण लोग नाना प्रकार के अपराध करने लगे; और अधिकारियों ने, ऐसे अपराधों को बंद करने के लिए, और अधिक कड़े कानून बनाये। कड़े कानून बनाने वालों में ड्रेको नामक एक मुख्य आदमी था। वह स्वभाव का

बड़ा दुष्ट और निर्दयी था। उसकी सदा यही इच्छा रहती थी कि, कठोर कानून बना कर लोगों को दबाते रहें। एथेन्स के प्रारम्भिक कानून ड्रेको ही के बनाये थे। प्रायः सभी अपराधों में चूंकि मृत्यु की ही सज़ा निश्चित की गई थी; अतएव उस समय यह कहावत प्रचलित हो गई थी कि, ड्रेको के क़ानून रक्त के द्वारा लिखे गये हैं!

किन्तु, इसका परिणाम अच्छा न हुआ। इससे सर्वसाधारण में बड़ा असंतोष फैल गया। सायलोन नामक एक सरदार था। उसने यह मौका पाकर बलवा मचा दिया। कुछ और साथी एकत्र करके उसने एथेंस का क़िला अपने अधिकार में कर लिया। पर सरकारी सेना ने क़िले पर चढ़ाई करके उसे अपने हस्तगत कर लिया। किन्तु सायलोन भाग गया, और उसके साथी एथिना देवी के मंदिर में जा छिपे। तब उन लोगों को यह वचन देकर कि, "तुम्हारे सारे अपराध क्षमा कर दिये जायँगे" मन्दिर से बाहर निकाला; और विश्वासघात करके सब को मार डाला।

इस विश्वासघात के कारण एथेन्स में राज्यक्रांति होगई। सब लोग घबड़ा गये। अब यह चिन्ता सब के सिर पर सवार हुई कि इस विश्वासघात का बदला देवी जी न जाने किस तरह लेती हैं, इस लिए सच्चे अपराधियों को दण्ड देकर देवी का कोप शांत करने के लिए तीन सौ नगरनिवासियों की एक सभा हुई। सभा ने सब अपराधियों को देशनिकाले का दण्ड दिया। इसके बाद सोलन नामक एक महाशय ने नये क़ानून बना कर एथेन्स का राज्यशासन नये ढंग से आरंभ किया। यह घटना सन् ई० के ५६४ वर्ष पहले की है।

प्राचीन ग्रीक इतिहास में सोलन का बड़ा नाम है। वह बड़ा बुद्धिमान और सज्जन माना जाता है। उसने पहले गिरवी रक्खी हुई रियासतों के छुड़ाने का कानून बनाया। दूसरा कायदा उसने यह बनाया कि, कर्ज़दार गुलाम नहीं बनाये जा सकते। उसने बड़ी खूबी के साथ सिक्के की कीमत बदल दी। एथेन्स का सिक्का ड्राक्मा कहलाता था। सोलन ने यह निश्चित कर दिया कि, ७३ पुराने ड्राक्मों की कीमत १०० नये ड्राक्मा समझी जावे; और जो लोग ७३ ड्राक्मा दें उनकी १०० की वसूली लिखी जावे। राज्यव्यवस्था में उसने एक बड़ा परिवर्तन यह किया कि, अमुक एक परिमाण की सम्पत्ति पास होने पर सब लोगों को आर्कन का पद मिल सकता है। इस रियासत से सरदार और सर्वसाधारण लोगों के बहुत से भेद मिट गये; और लोगों के हाथ में भी बहुत सी सत्ता आगई। इससे, धनवान् लोग ग़रीबों पर जो जुल्म करते थे वह बहुत कुछ कम होगया।

पहले राज्य की कुल ऊँची नौकरियां धनी सरदारों को ही मिलती थीं। परन्तु सोलन के कानून से एक निश्चित जायदाद रखने वाले लोग समान योग्यता के होगये। उसने सर्वसाधारण लोगों के चार विभाग किये। जिनकी वार्षिक आय पांच सौ माप या उससे अधिक थी, वे पहले विभाग में आये; फिर उनकी माप अनाज, शराब अथवा अन्य चाहे जिस पदार्थ की हो, कोई हर्ज नहीं। प्रत्येक माप का मूल्य एक ड्राक्मा निश्चित था। इस पहले विभाग का प्रत्येक मनुष्य, सोलन के कायदे से, आर्कन बन सकता था। दूसरा विभाग सवार लोगों का था। इस विभाग के लोगों के लिए यह-

नियम था कि, वे कम से कम एक युद्धोपयोगी घोड़ा अवश्य रखें, और युद्ध छिड़ने पर बिना वेतन लिये लड़ा करें। तीसरे विभाग में छोटे छोटे किसान थे। ये 'पैदल' कहलाते थे। इन्हें अपने पास से हथियार रखने पड़ते थे। चौथा विभाग स्वतंत्र मज़दूरों का था। इनको यद्यपि कोई भी सरकारी काम नहीं दिया जा सकता था; तथापि प्रत्येक सार्वजनिक संस्था में उपस्थित रहने और आर्कन तथा अन्य अधिकारियों के चुनाव में अपना मत देने का इनको अधिकार था। पहले तीन विभागों के लोगों को, न्यूनाधिक परिमाण से, सरकार को कर देने पड़ते थे; चौथे विभाग पर कोई भी कर नहीं था।

कहते हैं कि, फौजदारी मुकद्दमों का निर्णय करने के लिए सोलन ने एरिओपेगस नामक एक अदालत का संगठन किया था। पर, एथेन्स में मार्सहिल नामक पहाड़ी पर सोलन के पहले भी एक अदालत बैठा करती थी। (इसी स्थान पर सेंटपाल ने एथिनियन लोगों को उपदेश दिया था, जिसका उल्लेख बाइबिल में है) फिर भी इसमें संदेह नहीं कि, सोलन ने इस अदालत को पहले से अधिक अधिकार दिये थे, तथा उसके संगठन में अनेक नवीन परिवर्तन किये थे। इस अदालत के चबूतरे का ध्वंसावशेष अब भी एथेंस में देखा जाता है।

सोलन ने उपर्युक्त अदालत को एक विशेष अधिकार यह दे रक्खा था कि, वह लोगों के नैतिक आचरण पर निगरानी रक्खे। उसने न्यायाधीशों को यह अधिकार दिया कि वे जब जी चाहे तब, किसी के घर में घुस कर इस बात की जांच करें कि उसका आचरण शुद्ध है या नहीं, अथवा

वह फिजूलखर्ची तो नहीं है। इन अधिकारों के कारण लोग एरिओपेगस अदालत से बड़े भयभीत रहा करते थे। इस अदालत के न्यायाधीशों के सामने कोई हँसता तक न था। कर लगाने का अधिकार भी इन्हीं को दिया गया था, अतएव प्रत्येक मनुष्य को अपनी ज़मीन, सम्पत्ति और आमदनी का सारा वृत्तान्त इस अदालत के सामने उपस्थित करना पड़ता था।

सोलन ने सब मिलाकर दस अदालतें स्थापित की थीं; और प्रत्येक अदालत के फैसले सुनने के लिए छै सौ मनुष्यों को जूरी नियत कर दी थी। उसने विदेशी कारीगरों को बुला कर अपने राज्य में अनेक उद्योग-धंधे आरंभ किये। एथेन्स के जंगी जहाज भी इसी ने तैयार कराये। इस विषय में उस ने यह नियम कर दिया था कि, उपर्युक्त चार विभागों में से प्रत्येक विभाग को बारह जहाज युद्ध के लिए तैयार कर देने चाहियें। इसी प्रकार उसने यह भी नियम बनाया कि, इतनी आमदनी वाले प्रत्येक पुरुष को जहाज का कप्तान नियत करना चाहिये; और इसके लिये एक वर्ष का व्यय भी उसी को उठाना चाहिये। इन लोगों को ट्रायराकस (Tricrarchs) कहते थे।

मध्यम स्थिति के लोगों की दशा सुधारने के लिये सोलन ने और भी अनेक कायदे बनाये, और बड़े लोगों का अत्याचार बिलकुल बंद कर दिया। परन्तु उसकी सभी बातें लोगों को पसन्द नहीं आईं। अतएव, देशपर्यटन और ग्रन्थ-लेखन का कार्य हाथ में लेकर वह एथेन्स को छोड़ बाहर चला गया। उसके कायदे लकड़ी के तख्तों पर खुदे रहते थे। पहले

वे सब लोगों में घुमाये जाते थे; बाद को प्रथम क़िले में; और फिर सार्वजनिक सभागृह में रक्खे गये।

चौथा अध्याय।

स्पार्टा का राज्य।

कारिंथ की खाड़ी से ग्रीस देश के दो भाग हो गये हैं। उसके दक्षिणी भाग के बिलकुल दक्षिणी सिरे को लेकोनिया कहते हैं। इसी लेकोनिया प्रान्त में स्पार्टा शहर है। प्राचीन काल में डोरियन लोगों ने इसे जीत कर इसका नाम लेसिडीमन रक्खा। धीरे धीरे डोरियन लोगों ने आस पास के प्रान्तों को भी जीत कर उन पर कर लगाया। डोरियन लोग मूल निवासियों को अपना ताबेदार समझते थे और अपने को स्पार्टन्स या लेसिडिमोनियन्स कहते थे। विजित लोगों को लेकोनियन्स नाम दिया गया। इन दोनों जातियों में परस्पर बेटी-व्यवहार बंद था। विजित जाति को उन्होंने अपनी बराबरी के अधिकार कभी नहीं दिये, इस लिए इन दोनों में अनेक शताब्दियों तक भेद-भाव बना रहा। विजित लोगों को राजनैतिक कोई भी अधिकार नहीं थे; और उन्हें सरकारी नौकरी भी कभी नहीं दी जाती थी। वे केवल व्यापार या खेती करके अपनी जीविका चलाते थे। स्पार्टन लोग अपने को योद्धा सम-

झते थे; और इस लिए उन्हें व्यापार या खेती का काम तुच्छ जान पड़ता था।

इन दोनों जातियों के सिवा, स्पार्टा की रियासत में हेलाट नामक गुलाम जाति के बहुत से लोग थे। ये कृषि-कार्य किया करते थे। इन्हें ज़मीन के क्रय-विक्रय करने का भी अधिकार था। जिन ज़मीनों को ये जोतते-बोते थे। उनके मालिक दूसरे ही थे; पर उन मालिकों का इन गुलामों पर कुछ बहुत अधिकार न था। ये हेलाट गुलाम सरकार की मालकी में समझे जाते थे; सरकार ही इनको गुलामी से मुक्त कर सकती थी। हेलाट जाति की मूल उत्पत्ति का कुछ पता नहीं चलता; पर बहुत करके ये देश के मूल निवासी होंगे; और उस समय के ज़मीदारों के नौकर बन कर रहते होंगे। स्पार्टनों ने उन पर बड़े बड़े अत्याचार किये थे; और अनेक बार सैकड़ों लोगों को उन्होंने कतल किया था, अतएव इन की स्थिति बडी ही शोचनीय थी। स्पार्टन लोगों ने इनका ऐसा बन्दोबस्त किया था कि, ये उनकी सत्ता के विरुद्ध चूं तक न कर सकते थे। कहा जाता है कि, एक बार दो हजार हेलाटों को भोजन के लिए निमंत्रण देकर, स्पार्टनों ने उनको क़तल कर डाला। हेलाट लोगों के अनेक कुटुम्ब अपने खेतों पर घर बना कर रहते थे; और कितने ही स्पार्टनों के घर मज़दूरी करते रहते थे। युद्ध के अवसर पर प्रत्येक स्पार्टन अपने साथ हेलाट जाति के साथ गुलाम रखता था। स्पार्टन जाति के पैदलों के समान हेलाट लोगों को बढ़िया शिरस्त्राण और जिरह-बख़्तर नहीं दिये जाते थे; अतएव इनका उपयोग हलकी सेना के सदृश होता था।

स्पार्टा की राज्यव्यवस्था अन्य सारी ग्रीक रियासतों से अत्यन्त भिन्न थी। स्पार्टा में सदैव दो राजा राज्य किया करते थे। दोनों के अधिकार समान थे। इन दोनों में से यदि कोई मर जाता तो उसके स्थान पर उसका लड़का, अथवा अन्य कोई निकट का अधिकारी राज-पद पाता था। इन दोनों राजाओं के विषय में एक दंतकथा इस प्रकार हैः—हर्क्यूलीस नामक पुरुष ने पहले-पहल स्पार्टा को जीतकर वहां राज्य स्थापित किया। उसके पश्चात् उसका लड़का अरिस्टोडिमस (Aristodemus) राजा हुआ। यह वीर पुरुष कुछ वर्षों तक राज्य करके मृत्यु को प्राप्त हुआ। मरते समय उसने अपना राज्य यूरिसथेनिस (Euresthenes) और प्राक्लीस (Procles) नामक अपने दो लड़कों को दिया। ये दोनों लड़के साथ ही साथ, स्पार्टा का राज्य करने लगे। बस, उसी समय से स्पार्टा में दो राजाओं के रहने की चाल पड़ गई। परन्तु यह कहातव बिलकुल काल्पनिक जान पड़ती है। फिर भी दो राजाओं की उत्पत्ति ऐसे ही किसी कारण से, अथवा यमज भाइयों के कारण, हुई होगी। कदाचित् दो सरदारों ने इस राज्य को जीता हो; और फिर दोनों में परस्पर यह समझौता हो गया हो कि, दोनों ही मिल कर राज काज किया करें।

सन् ईसवी के नौ सौ वर्ष पहले तक स्पार्टा का इतिहास विशेष उपलब्ध नहीं है। नवीं सदी के लगभग लायकरगस नामक एक पुरुष स्पार्टा में उत्पन्न हुआ। इसने वहां बहुत से नये क़ानून चलाये। इसके भतीजे चारिलास (Charilaus) की उम्र छोटी होने के कारण लायकरगस उसकी ओर से राज-काज देखता था। उसके

बनाये हुए सब कायदों की नीति एक ही तरह की थी। उसके कायदों का उद्देश्य इस प्रकार था कि, विजित जाति स्पार्टनों के विरुद्ध कभी सिर न उठाये; स्पार्टन लोग युद्ध के लिए सदा सुसज्जित रहें, वे कष्टसहिष्णु, दृढ़ और हृष्टपुष्ट हों; संकट के समय विचलित न होते हुए स्वराज्य-रक्षा के हेतु वे सब प्रकार का स्वार्थत्याग कर सकें; और स्त्री-पुत्रों की भी परवा न करते हुए अपने लोगों का राज्य बना रक्खें। लायकरगस के नियमों से स्पार्टन लोग यद्यपि शूर और साहसी बन गये; तथापि उनका स्वभाव भी क्रूर और निर्दय हो गया। उन्हें गृह-सुख से घृणा हो गई; और कुटुम्ब को एकत्र करने वाले सामाजिक बन्धन नष्ट हो गये।

लायकरगस ने बालकों के लिए पालन-गृह स्थापित किये थे। प्रत्येक स्पार्टन बालक सात वर्ष का होने पर अपने मां-बाप से अलग कर लिया जाता था; और उसी पालनगृह में रख कर, उससे सब प्रकार के व्यायाम लेते हुए, उसके सब अंग-प्रत्यंग खूब मज़बूत बनाये जाते थे। इस प्रकार वहां की सरकार लोगों को शूरवीर और साहसी बनाती थी। उनके शरीर पर सिर्फ एक ही छोटा सा वस्त्र रहता था, जिसे वे शरीर से लपेटे रहते थे। कठिन जगहों में घूमना, दौड़ना, कूदना, पेड़ पर चढ़ना, इत्यादि बातें उन लड़कों को सिखाई जाती थीं। उनको अन्न भी बहुत मोटा-झोटा दिया जाता था। घास बिछाकर उसी पर वे सोते थे। आस पास के खेतों में चोरी करना भी उन्हें सिखाया जाता था। यद्यपि ये बातें अच्छी नहीं थीं; पर उनकी शिक्षा का सारा रुख़ इसी ओर था कि, शत्रुओं के राज्य में अपना बचाव किस

प्रकार किया जाय। अपने राज्यकर्त्ताओं की आज्ञा का पालन करके उन्हें सम्मान देना, फ़िजूल बातें न करना, जहां तक हो सके, थोड़े शब्दों में अपने मन का भाव प्रगट करना, इत्यादि बातों का भी उनसे अभ्यास कराया जाता था। अंगरेज़ी भाषा में "लेकोनिक भाषण" की कहावत स्पार्टन लोगों की उपर्युक्त रीति से ही प्रचलित हुई है।

अठारह वर्ष की अवस्था होने पर लड़के अपने पिताओं के साथ सार्वजनिक भोजनगृहों में जाते थे। वहां मेजों के पास खड़े होकर पिताओं को भोजन परोसने का काम उनको करना पड़ता था। बीस वर्ष की अवस्था होने पर उनको सेना में भरती करके, सीमान्त प्रदेश की रक्षा करने के लिए, भेज देते थे। वहां से दस वर्ष के बाद वापस आने पर उन्हें सरकारी नौकरी मिल जाती थी, अथवा सेना में कोई पद दे दिया जाता था। इतना जब हो जाता, तभी उन्हें सार्वजनिक भोजनगृह में जाकर भोजन करने की आज्ञा मिलती थी, अन्यथा नहीं। सरकार ने खास तौर पर ये भोजन-गृह स्थापित किये थे कि; जिससे लोग घर में ऐश-आराम न करने पावें। यह रीति पहले क्रीट द्वीप में प्रचलित थी, उसकी नकल स्पार्टनों ने की। भोजन के लिए बड़े बड़े दीवानखाने बने रहते थे; और वहां प्रत्येक किसान को जौ का आटा, शराब, अंजीर, पनीर आदि भोजन की सामग्री भेजनी पड़ती थी। जब कभी लोग पशु-बल देते थे, तब उस बलि का कुछ भाग इन भोजनगृहों में भेजना पड़ता था। सरकार जंगलों को रक्षित रखती थी; और वहां से शिकार पकड़ कर भोजनगृहों में लाया जाता था। आगे चल कर नमक-मिर्च-मसाला तक के लिए

भी लोगों पर कर बिठाये गये। प्रत्येक मनुष्य को, चाहे वह राजा हो या रंक, इन सार्वजनिक भोजनगृहों में ही भोजन के लिए आना पड़ता था।

भोजनगृह के समान शयनगृह भी सरकार की ओर से तैयार कराये जाते थे। वहां आकर सब स्पार्टनों को सोना पड़ता था। इस तरह साठ वर्ष की अवस्था होने पर सैनिक सेवा समाप्त होती थी। इस बीच में यदि युद्ध का कोई अवसर न आता, तो कवायद या शिकार में समय व्यतीत करना पड़ता था। साठ वर्ष की उम्र के बाद सरकार की अन्य कोई सहज नौकरी करनी पड़ती थी, अथवा बैठे बैठे छोटे बच्चों का लालन-पालन करना पड़ता था। अत्यंत बुढ़ापा आने पर समान अवस्था वालों के साथ बैठ कर बात-चीत करते हुए समय व्यतीत करना पड़ता था। ऐसे मिलने-जुलने के घर प्रत्येक ग्रीक शहर में बनाये जाते थे। पर स्पार्टा में उनका उपयोग वृद्ध सैनिकों के अतिरिक्त दूसरे लोग नहीं कर सकते थे।

स्पार्टनों की स्त्रियों और लड़कियों के लिये ऐसा कोई सार्वजनिक प्रबंध नहीं था। वे अपने अपने घरों में ही रहती थीं। तथापि उनकी शिक्षा भी पुरुषों के समान ही कठोर थी। छुटपन में ही उन्हें भी व्यायाम करना पड़ता था। किसी प्रकार का भी सुख उन्हें नहीं लेने देते थे। पुरुषों के समान स्त्रियां भी सिर्फ एक ही वस्त्र पहना करती थीं।

स्पार्टन राजाओं के हाथ में अधिकार बहुत ही थोड़ा रहता था। साठ वर्ष की अवस्था के २८ बड़े लोगों की एक सभा राजकाज किया करती थी। इस सभा का अध्यक्ष राजा, या कभी कभी धर्माध्यक्ष अथवा सेनापति भी चुना जाता था।

स्पार्टा में, तथा डोरियन लोगों के अन्य सब शहरों में, ईफोर नाम के सरकारी निरीक्षक नियुक्त थे। ये लोगों की शिक्षा और उनके आचरण की देखरेख रखते थे। युद्ध के मौकों पर दोनों राजाओं को बारम्बार बाहर जाना पड़ता था, अतएव राज्य का सारा कारबार भी इन निरीक्षकों के ही हाथ में चला गया। वृद्ध मंत्रिसभा और सर्वसाधारण में मध्यस्थी दिखलाने के कारण उनकी सभी सूचनाएं पास होती गईं; और इस प्रकार उनकी सत्ता खूब बढ़ी। यहां तक कि, राज्य में उनके बिना एक पत्ता तक भी न हिलने लगा।

इधर स्पार्टा की सत्ता भी धीरे धीरे खूब बढ़ी। आसपास के राजाओं पर स्पार्टा की खूब धाक जम गई। लैकोनिया से मिला हुआ, नैऋत्य दिशा में मेसेनिया नामक एक प्रान्त था। उसे स्पार्टनों ने जीत कर अपने अधिकार में कर लिया। पर मेसेनियन भी कुछ कम न थे। मौका मिलते ही वे स्पार्टनों से लड़ने-भिड़ने में कभी न चूकते। पर अन्त में स्पार्टनों ने उन्हें युद्ध में पूर्णरूप से जीत लिया। इस युद्ध के कारण अनेक शहर धूल में मिल गये, देश विध्वंस हो गया; और हजारों मनुष्य काट डाले गये; किन्तु मेसेनियन लोग केवल चालीस वर्ष स्पार्टनों के अधिकार में रहे। सन् ईसवी के ६८५ वर्ष पहले आरिस्टोमिनिस नामक एक मेसेनियन शूरवीर देशभक्त स्वतन्त्रता के लिए स्पार्टन लोगों से लड़ने को आगे बढ़ा; उसने सब मेसेनियन लोगों को धैर्य्य देकर युद्ध के लिए तैयार किया, और बहुत पराक्रम दिखला कर स्पार्टनों को खूब छकाया। एक दिन रात को वह अकेला स्पार्टा शहर में घुस गया। शहर में कोट नहीं था। वहां सीधे मिनर्वा देवी के मंदिर

में वह चला गया, और मूर्ति के अंग में एक ढाल लगाकर वहां उसने लिख दिया कि स्पार्टन लोगों की जो सम्पत्ति मैंने लूटी उसमें से यह ढाल मैंने देवी को अर्पण की। सुबह स्पार्टन लोगों ने जब यह ढाल देखी तब वे बहुत ही घबड़ा गये, और यह समझा कि, अब देवी हमको छोड़ कर मेसेनियन लोगों पर कृपादृष्टि करने लगी।

इस युद्ध की अनेक मनोरंजक कहानियां लोगों में बतलाई जाती हैं। उनमें से एक यह है :—टिर्टियस नामक एक पुरुष एटिका प्रान्त का निवासी था। वह वास्तव में अध्यापक था, परन्तु वीररस की अनेक कविताएं भी लोगों को वह सुनाया करता था। डेल्फाय के शकुन से यह मालूम हुआ था कि, स्पार्टन लोगों में जब तक कोई एथेन्स का योद्धा सम्मिलित न होगा, तब तक विजय प्राप्त नहीं होगा। इस शकुन के अनुसार स्पार्टन लोगों ने एथेन्स से प्रार्थना की कि, हमारे लिए कृपा कर के एक उत्तम योद्धा भेज दीजिये। आर्कन सचमुच स्पार्टा को सहायता नहीं देना चाहता था। तथापि इस डर से, कि कहीं अपोलो नाराज़ न हो जाय, एथेंस के लोगों ने टिर्टियस को स्पार्टा भेज दिया; परन्तु टिर्टियस लँगड़ा था, युद्धकला का ज्ञान उसे बिलकुल ही न था; इसलिए एथेंस के लोगों ने यह नहीं समझा कि, उसके हाथ से कोई विशेष पराक्रम होगा। एथेंस की सारी दंतकथाएं चूंकि ऐसी हैं कि उनमें से आप चाहे जिसको लीजिए, डेल्फाय के अपोलो का भविष्य सच ही निकलना चाहिए; तदनुसार टिर्टियस की वीररस की कविताओं और उत्साहवर्धक गीतों से स्पार्टन सेना को खूब जोश चढ़ा, और उन्होंने मेसेनियन लोगों को फिर से जीत लिया।

इसका पता नहीं कि, टिर्टियस की स्पार्टा में कैसी प्रतिष्ठा थी, तथापि उसकी कविताएं स्पार्टन लोगों को बहुत अच्छी लगती थीं; और प्रत्येक सिपाही, रात के समय, भोजन के बाद उनको बड़े प्रेम से पढ़ता था। स्पार्टन और मेसिनियन लोगों का यह युद्ध सत्रह वर्ष तक चलता रहा। अन्त में मेसेनिया प्रान्त स्पार्टा के अधिकार में आगया। स्पार्टा के अन्तर्गत आर्केडिया प्रान्त के कारी नामक मुकाम में डायाना देवी का उत्सव प्रति वर्ष हुआ करता था। इस उत्सव से एक बार मेसेनियन लोग कितनी ही स्पार्टन लड़कियां भगा ले गये। पर उनके सरदार एरिस्टोमिनिस ने स्पार्टन लोगों से उचित दण्ड लेकर, वे लड़कियां उनको वापस कर दीं। इसी प्रकार की अनेक आख्यायिकाएं इस युद्ध के विषय में प्रचलित हैं। अन्त में एरिस्टोमिनिस निरुपाय हो गया, और मेसेनिया छोड़कर ह्रोड्स टापू में चला गया, और अपने जीवन के अन्त तक वहीं रहा। मेसेनियन लोग उसे बहुत पूज्य मानते थे। उसके ऊपर उन्होंने अनेक कविताएं और आख्यान रचे हैं, उनसे, तथा टिर्टियस की कविताओं से इस मेसेनियन युद्ध का वृत्तान्त ज्ञात हुआ है।

मेसेनिया जीतने के बाद स्पार्टा में अनेक क्रान्तिकारक घटनाएँ हुईं। अनेक स्पार्टन लोग युद्ध में काम आये, अतएव उनके अधिकार बहुत से लेकोनियन लोगों को दिये गये; इसके अतिरिक्त युद्ध में मरे हुए लोगों की विधवाओं के साथ विवाह कर लेने की भी आज्ञा उन्हें मिल गई। अतएव कितने ही कुटुम्ब कुलभ्रष्ट हो गये; और जिन्होंने दूसरी जाति के लोगों से विवाह नहीं किया वे अपने को

पवित्र समझने लगे। पहले-पहल सब स्पार्टन लोग समान ही दर्जे के थे; परन्तु मेसेनिया की विजय के बाद उनमें उच्चनीच भाव का प्रवेश हो गया। उपर्युक्त युद्ध में स्पार्टन लोगों को कारिंथ की सहायता मिली थी। एथेन्स की जलसेना सोलन ने सुधारी; परन्तु इसके पहले कारिंथ की ही जलसेना का सारे ग्रीस पर प्रभाव जमा हुआ था। मेसेनियन युद्ध के समय कारिंथ की सरकार ने जहाज बनाने के कार्य में खूब ही उन्नति की। वह बड़े बड़े विस्तृत और ऊंचे जहाज बनवाने लगी; बल्लियों की उन पर तीन तीन श्रेणियां रहती थीं। प्राचीन जहाजों में सिर्फ़ एक ही श्रेणी रहती थी। इस लिए इन नवीन जहाजों को ट्रायरीम, अर्थात् तीन रंग के जहाज, कहने लगे। आगे चल कर ज्यों ज्यों अधिक रंगों के जहाज बनते गये, त्यों त्यों उन्हें भी क्रमशः चार रंग के, पांच रंग के, इत्यादि कहते गये।

पांचवां अध्याय।

ईसवी सन् के छै सौ वर्ष पहले के ग्रीक लोगों के रीति-रवाज।

इस समय ग्रीक लोगों में कुछ विशेष सुधार नहीं हुआ था। निस्सन्देह एथेन्स शहर विद्या का घर और कारिंथ शिल्पादि कलाओं का मूल स्थान था; परन्तु यह इसके बहुत-

समय बाद की बात है। तथापि होमर के समय में ग्रीक लोगों की जो दशा थी, उसकी अपेक्षा इस समय वे बहुत कुछ उन्नत दशा में थे। लोगों के रीति-रवाज, और सम्पूर्ण देश का वैभव, होमर के समय से, अब बहुत कुछ परिवर्तित था। उनके शहर अब बहुत सुधर गये थे। लोग ईंटों और पत्थरों के घर बनाने लगे थे; और छतों पर खपड़े बिछाने लगे थे; इसी भांति भीतर अच्छी जगह निकाल कर, भली प्रकार सामान इत्यादि रखने लगे थे। ज़मीन में पत्थर की फर्श लगाकर दीवालों में सफेदी करने लगे थे; तथापि चित्र-विचित्र रंगों से घरों को सुचित्र करना उन्हें अभी नहीं मालूम था। घर के कमरों के दो अलग अलग भाग रहते थे। एक पुरुषों के लिए और दूसरा स्त्रियों के लिए। उस समय, हमारे यहां की चाल की तरह, वहां भी स्त्रियां पुरुषों से अलग रहती थीं। स्त्रियों को विशेष सन्मान देने की चाल नहीं थी। पति अपनी पत्नी को यद्यपि सहचारिणी समझता था, तथापि उसकी योग्यता वह अपने से कम मानता था। कुटुम्ब को देख रेख रखना ही सिर्फ स्त्रियों का काम था। इस लिए स्त्रियों को शिक्षा देकर उनका मन सुसंस्कृत बनाने की चाल नहीं थी। वे सर्वथा अशिक्षित ही रहा करती थीं।

नवजवान स्त्रियों को परपुरुष से मिलने की मनाई थी। वे सिर्फ बाप और भाई से ही मिल सकती थीं। तथापि बड़े उत्सवों के अवसर पर स्त्रियां पुरुषों के मेले में बाहर निकला करती थीं। ऐसे मेलों के अवसर पर नवजवान पुरुष अपनी स्त्रियां पसन्द करते थे। लड़की के मा बाप को यदि वर पसन्द आजाता तो उसका विवाह होजाता था। हां

लड़की की पसन्दगी अवश्यही उस समय कोई न पूछता था। स्पार्टा प्रान्त में स्त्रियों को अधिक स्वतन्त्रता थी। वहां नवजवान लड़कियों के लिये पड़दा नहीं था, किन्तु वे स्वतन्त्र रीति से घूम-फिर सकती थीं; और सार्वजनिक खेलों में खुल्लमखुल्ला वे बाहर निकलती थीं। परन्तु विवाहित स्त्रियों को वहां भी बाहर निकलने की स्वतन्त्रता न थी, सिर्फ अविवाहित नवयुवती निकल सकती थी।

एथेन्स के लोगों को अन्य रियासत की स्त्रियों से विवाह करने की मनाई थी। विवाह एकही कुटुम्ब में हुआ करता था। क्योंकि एक कुटुम्ब की लड़की यदि दूसरे कुटुम्ब के पुरुष से विवाह करती तो उसको अपने अधिकार से मिली हुई जायदाद के, पति के कुटुम्ब में जाने की सम्भावना रहती थी। बस, इसी लिए लड़की को अपने पास के सम्बन्धी से विवाह करना पड़ता था कि, जिससे एक कुटुम्ब की जायदाद दूसरे में न जावे—हां, यदि वह उससे विवाह करने को राज़ी न होता तो उससे विवाह करने का अधिकार अन्य किसी निकटस्थ पुरुष को प्राप्त होता था। यह नियम इतना कठोर था कि, चाहे किसी स्त्री का एक बार विवाह हो भी जावे और फिर कोई पास का रिश्तेदार उससे विवाह करने का अपना अधिकार जतलावे, तो पहले पति को, वह अपनी स्त्री, और उसकी सम्पत्ति, उसके सच्चे अधिकारी को देनी पड़ती थी।

कुटुम्ब की सम्पत्ति सब लड़कों को बराबर बराबर बांट मिलती थी। हां, अगर उनकी कोई बहिन होतीं, तो उनका विवाह पास के रिश्तेदारों से लगाना, और विवाह में जो खर्च

लगे वह लगाना, इत्यादि कार्य भी उन्हीं पर आता था। कोई लड़की यदि छुटपन से ही अनाथ होती; उसके कोई भाई भी न होते; और न उसके पास द्रव्य होता, तो जो कोई उसका निकट का रिश्तेदार होता वही उससे स्वयं विवाह कर लेता, अथवा उसके दहेज का प्रबन्ध करके उसके लिए दूसरा पति ढूंढ़ देता था। दहेज देने की चाल लायकरगस ने स्पार्टा से बिलकुल ही उठा दी थी। अतएव लड़की चाहे जितनी गरीब होती, उसके विवाह में अड़चन नहीं पड़ती थी।

ग्रीक लोगों में विवाह की चाल यह थी कि, वर-कन्या के रिश्तेदार एक स्थान पर जमा होते, उसी जगह वर-कन्या के सामने विवाह का प्रस्ताव होता; और उसी में दहेज तथा मुहूर्त का भी निश्चय होता था। विवाह के दिन सुबह हवन इत्यादि धार्मिक विधि होती; और शाम को वर की सवारी वधू के घर, उसे लेने के लिए, आती थी। इसके बाद बारात निकलती थी। उसमें वधू को सुन्दर साड़ी पहनाई जाती थी। वर के अंग में भी चित्र-विचित्र रंग के सुन्दर वस्त्र रहते थे। दोनोंके मस्तक पर सुशोभित पुष्पमालाओं के मुकुट रहते थे। वधू को एक सुन्दर रथ में बैठालते; उसके एक ओर वर और दूसरी ओर वधू के रिश्तेदार बैठते थे। बारात के आगे सुरीली तालों में बाजे बजाकर देवताओं के स्तोत्र कहते थे। गृहप्रवेश का द्वार लतापल्लवों के गुच्छों से सजाया जाता था; वधूवर का उसमें प्रवेश होते ही उनके आगे ज़मीन पर मिठाई डालते थे। इसके बाद भोज होकर विवाहोत्सव सम्पूर्ण होता था। दूसरे दिन इष्ट-मित्रों के यहां से भेंटें आतीं; और कुटुम्ब के लोगों में वधू का नाम दर्ज किया जाता था।

लड़के के जन्म पर भी उसके मा-बाप एक बड़ा उत्सव करते थे; और हमारे यहां की तरह वहां भी, कुटुम्ब के शुभ-चिन्तकों की ओर से बधाई की भेटें आया करती थीं। लड़का यदि पैदा होता तो घर को ओलिव नामक वृक्ष की शाखाओं से सजाते थे, और यदि लड़की होती तो ऊन से घर का शृङ्गार करते थे। शाम को एक भोज दिया जाता था, उस समय होमशाला में अग्नि की पूजा की जाती थी, और दाई जन्मे हुए बालक को हाथ में लेकर उसी अग्नि की प्रदक्षिणा करती थी, लड़के का नामकरण-संस्कार भी इसी अवसर पर होता था। इस सम्पूर्ण विधि का यह अर्थ था कि, यह बालक इस कुटुम्ब से ईश्वर को अर्पण किया जाता है। इस विधि के सांगोपांग पूर्ण होने की साक्ष रखने के लिए, उत्सव में आये हुए सब लोग, उस होमाग्नि की प्रदक्षिणा करते थे। लड़के का सिर्फ एक ही नाम रखा जाता था। ईसाई लोगों में अनेक नाम रखने की चाल है, पर ग्रीक लोगों में यह न थी। लड़के का नाम उसका बाप अपनी पसन्दगी के अनुसार रखता था; और यदि कभी उस नाम को बदल कर दूसरा नाम रखने का अवसर आता, तो लड़के का पिता वैसा भी कर सकता था।

ग्रीक लोग मुर्दों को गाड़ते थे। उनकी मृतकसंस्कार की विधि भी बड़ी महत्वपूर्ण थी। मनुष्य की मृत्यु के बाद तीसरे दिन सूर्योदय के पहले यह संस्कारविधि करते थे। खुली अर्थी पर शुभ्र वस्त्र से लपेट कर मृतक को स्मशान ले जाते थे। मृतक के मस्तक पर फूलों के गुच्छे चढ़े रहते थे। पुरुष मृतक के आगे और स्त्रियां पीछे चलती थीं। इनके अतिरिक्त और

भी बहुत से लोग ख़ास तौर पर बुलाये जाते थे, जो कि बाजे बजाते और शोकदर्शक भजन गाते हुए श्मशानयात्रा में सम्मिलित होते थे। ग्रीक लोग कभी कभी मृतक को चिता पर भी जलाते थे, और उसकी राख एक घड़े में भर कर जमीन में गाड़ देते, तथा उस पर समाधि बनाते थे। और जब कभी वे मुर्दे को गाड़ते, तब उसे मिट्टी की सन्दूक में रख कर, उसका मुँह पूर्व ओर करके, उसको गाड़ते थे। समाधियां या क़बरें प्रायः शहर के बाहर रास्ते के एक ओर रहा करती थीं। सूतक के वस्त्र काले होते थे, और एक मास तक सूतक मनाया जाता था। उस महीने में कुटुम्ब के मनुष्य एकान्त में रहते थे; बाहर समाज में नहीं निकलते थे।

इस समय भी ग्रीक लोगों का पहनावा पहले ही के समान था। उसमें विशेष अन्तर नहीं पड़ा था। एथेंस और अन्य कई शहरों के उच्च दर्जे के लोग एक लम्बा सा अँगरखा पहन कर ऊपर से धोती लपेट लेते थे। लेकिन सर्वसाधारण पहनावा, एक छोटी सी, बिना बाहों की, जाकिट थी। उस को चिटन कहते थे। पुरुषों का मुख्य वस्त्र धोती थी। स्त्रियां साड़ी पहनती थीं; जो पुरुषों की धोती से बहुत लम्बी-चौड़ी और पतली होती थी; उस पर कभी कभी कसीदे और ज़री का काम भी रहता था। इसके अतिरिक्त स्त्रियां जाकिट भी पहनती थीं; उनकी जाकिटें सुन्दर पतले वस्त्र की और कुहनियों तक रहती थीं; उनको हम अपने यहां की चोली ही कह सकते हैं।

वस्त्र बुनने की कला ग्रीक लोगों को पहले ही से मालूम थी। प्रत्येक कुटुम्ब में करघा रहता था, उसके द्वारा वे कुटुम्ब

के खर्च भर को वस्त्र गुलामों से बुनवा लिया करते थे। ऊन के, भांति भांति के, कपड़े बनाना भी वे जानते थे। जमी हुई ऊन की टोपियां यात्री, चरवाहे और किसान लोग लगाया करते थे।

ग्रीक लोग अपनी ज़मीन साल में तीन बार जोतते थे। उनके हल अनेक प्रकार के, किन्तु सादे, होते थे। खेत में ही, किसी ऊंची जगह खलियान बना कर, वे वहीं मड़ाई का काम किया करते थे। यह काम कभी कभी वे यंत्र से करते और कभी कभी पशुओं के पैरों के द्वारा करते थे। अनाज पत्थर की ओखली में खूब कूट कूट कर पीस लेते थे, अथवा पत्थर की चक्कियों का ही उपयोग कर लेते थे। चक्की पीसने का काम गुलाम स्त्रियों से लिया जाता था।

एटिका प्रान्त की ज़मीन गेहूं की फसल के लिए अच्छी न थी। व्यापार खास कर अनाज का ही होता था; और सरकारी लगान प्रायः बहुत सा उसी से वसूल होता था। अनाज के विषय में कानून बहुत ही कठोर थे। अनाज की बिक्री का भाव सरकार निश्चित करती थी। ठहरे हुए भाव से महँगा बेच कर यदि व्यापारी अधिक लाभ उठाते थे तो उन्हें मृत्युदण्ड दिया जाता था। एटिका प्रान्त में जितना अनाज पैदा होता था, वह सब एथेंस में लाकर ही बेचना पड़ता था। इसके सिवाय यह भी कानून था कि, परदेश से लाये हुए अनाज में से, कम से कम, दो-तृतीयांश एथेंस में लाकर बेचना चाहिए। एटिका की पैदाइश में मुख्य पैदाइश तेल और शराब की थी। अंगूरों के बागों और आलिव नामक तैलफलों के खेतों से सारा प्रान्त भरा हुआ था। अन्य फलों के बाग़

उन्हें मालूम ही न थे, और न सुन्दर बाग बनाने का ही उनको ज्ञान था। हां, सार्वजनिक उत्सवों में पुष्पमालाएं बनाने के लिए गुलाब, कमल और अन्य सुगन्धित पुष्पवृक्ष वे लगाया करते थे।

एपेस्थूरिया नामक एक उत्सव प्रति वर्ष एथेन्स में हुआ करता था। साल भर में जन्मे हुए सब लड़कों को नागरिकत्व के अधिकार देने के लिए यह उत्सव किया जाता था। यह तीन दिन होता रहता था। पहले दिन सब लोग एकत्र होकर शाम को ग्राम-भोजन कराया करते थे। दूसरे दिन मन्दिर में जाकर बलि इत्यादि देते थे। तीसरे दिन सब भाई-बन्द एक जगह जमा होते, वहा बाप अपना नवीन बच्चा हाथ में लेकर अपने गोत्रजों के सामने आता, और यह प्रश्न करता कि, "इसको नागरिक की स्वतन्त्रता देने में कोई हर्ज तो नही है ?" इस पर यदि कोई एतराज न करता तो उस लड़के का नाम नागरिकों में दर्ज किया जाता था। उसी समय कुल-देवता को बकरा या मेढा बलि देते थे। इस भांति यह उत्सव तीन दिन तक बडी धूमधाम से हुआ करता था, उसमें लड़कों से सुरीले गीत भी गवाये जाते थे, और जिसका गाना उत्तम होता उसे पारितोषिक दिया जाता था। इस उत्सव से यह जान पडता है कि, एथेंस के नगर-निवासी बनने में ग्रीक लोगों को कितना गौरव मालूम होता था।

इसके अतिरिक्त ग्रीक लोगों के अन्य धार्मिक महोत्सव भी अनेक थे। उनमें सम्पूर्ण राष्ट्र के चार मुख्य उत्सव थे। उन सब में ऑलिंपिया का व्यायामोत्सव अत्यन्त महत्त्व का था। यह उत्सव चार वर्ष में एक बार एलिस के मैदान में, आलि-

पिया में, जुपिटर को प्रसन्न करने के लिए, हुआ करता था। इसी महोत्सव से चार वर्षों की कालगणना ग्रीक लोगों में प्रारम्भ हुई; उसका नाम है "आलिंपियाड"। एलिस के राजा और स्पार्टा के राज्यनीतिज्ञ लायकरगस ने, सन् ईसवी के ७७६ वर्ष पहले, आलिम्पिया के ये खेल; जो कि बीच में बन्द होगये थे, फिर से प्रारम्भ किये। बस, उसी समय से यह वर्षगणना प्रारम्भ हुई। पहला आलिंपियाड, सन् ईसवी के ७७६ वर्ष पूर्व के ग्रीष्म ऋतु से ७७२ के ग्रीष्म ऋतु तक समझा जाता है।

आलिंपिया का यह उत्सव तथा अन्य सब महोत्सव, राष्ट्रीय दृष्टि से, ग्रीक लोगों को बहुत महत्व के मालूम होते थे। इन उत्सवों के लिए भिन्न भिन्न रियासतों के लोग एकत्र होते थे, इससे उनमें एक प्रकार का ऐक्य भाव बना रहता था। उत्सव के समय युद्ध भी स्थगित कर दिया जाता था; और उत्सवों का स्थान चूंकि बड़ा पवित्र समझा जाता था, अतएव वहां युद्ध का सम्पर्क तक न होने देते थे। जब तक उत्सव समाप्त न हो लेता; उत्सव के प्रान्त में युद्ध के हेतु प्रवेश करने के लिए दोनों दलों को मनाई रहती थी।

ग्रीस की भिन्न भिन्न रियासतों से इन उत्सवों में प्रतिनिधि भेजे जाते थे। वे प्रतिनिधि, इस मौके पर, खूब चढ़ा-ऊपरी करके, विशेष तैयारियां करते थे; और कीमती नजराने लाया करते थे। आलिंपिया का मुख्य मन्दिर एटिस नामक पवित्र अमराई में था। उत्सव में आया हुआ प्रत्येक मनुष्य, वहां के देवता के आगे, अपनी अपनी भेट समर्पित करता था; और पुजारियों को दक्षिणा देता था। एक पुजारी देवद्वार पर खड़े होकर, प्रत्येक यात्री पर लारेल के पत्तों से अभिषिचन करता

रहता था। आलिपिया के खेल में पहले सिर्फ पैदल दौड़ने की बाजिया हुआ करती थी। आगे चलकर फिर कुश्ती, कूदना, जंजीर के खेल, घूंसे का खेल, भाला फेंकना, रथों और गाड़ियों की बाजियां, इत्यादि खेल आरम्भ हुए। ईरानी लोगों ने जब ग्रीस देश पर पहले पहल चढ़ाई की, उसके पहले यह उत्सव एक ही दिन होता था, बाद को फिर वह पांच दिन होने लगा। आलिपिया के खेल में ऊचे दर्जे वाले लोग शामिल होते थे। बाजी जीतने में खूब चढ़ाऊपरी हुआ करती थी, और जीतनेवालों को बड़े बड़े पुरस्कार मिला करते थे। देवता की पवित्र अमराई के आलिव वृक्ष की शाखा तोड़कर उसकी कलॅंगी, शिरोभूषण के तौर पर, उनको दी जाती थी, और जिस प्रकार राजा के नाम का जयघोष करते हुए चोपदार लोग आगे चलते है, उसी प्रकार जीतनेवाले लोगों के नाम का जयघोष भी हुआ करता था। किसी बड़े राजा के समान उनका जलूस निकाल कर उनको नगर में ले जाते थे।

आलिपिया की भांति पायथियन खेल भी प्रसिद्ध थे। वे डेल्फाय नामक मुकाम में प्रति तीसरे वर्ष हुआ करते थे, और उनका सगठन प्रायः आलिपिया के खेल के समान ही हुआ करता था। हां, आगे चलकर इस उत्सव में गायनकला की परीक्षा भी लेकर पारितोषिक देने की चाल पड़ गई।

इनके अतिरिक्त नीमियन नामक एक राष्ट्रीय उत्सव प्रति आलिपियाड के दूसरे और चौथे वर्ष और इस्थमियन नामक उत्सव आलिपिया के पहले और तीसरे वर्ष हुआ करता था। नीमियन उत्सव पिलापोनिशन रियासत आर्गास के नीमिया नगर में और इस्थमियन उत्सव कारिन्थ में हुआ करता था।

इन स्थानों के खेलों में अनेक मंडलियां जमा होती थीं; और उनके गाने होते थे; अतएव बड़ा आनन्द आता था; और भोज, बलि, जलूस, मंडली, इत्यादि सारे सामाजिक कार्यों से इन खेलों को बहुत महत्व प्राप्त हुआ था। सब प्रकार के उत्सवों में बड़े बड़े मेले हुआ करते थे; उनमें तरह तरह का माल बिक्री के लिए आता था। इसके अतिरिक्त लोगों के मनोरंजन के भी अनेक साधन वहां उपस्थित रहते थे। जैसे एक बकरे की खाल फैला कर, उस पर तेल डाल कर, उसे रपटाऊ बनाते; और उस पर न गिरते हुए जो नाचता रहता उसी को वह खाल इनाम दे दी जाती थी!

इनके अतिरिक्त और छोटे छोटे उत्सव भी अनेक थे। डायोनिशिया नामक एक उत्सव सब छोटे-बड़े गावों में, साल में चार बार हुआ करता था। यह 'बेकस' अर्थात् कामदेव के सन्मानार्थ हुआ करता था। इस मदनोत्सव में मद्यपान और दंगा खूब हुआ करता था। इस प्रकार के तमाशों में अनेक गवांर लोग, नाना प्रकार के सोंग लेकर, नाचते थे। कुछ लोग बनदेवताओं का रूप धरते थे; और कुछ पुरुष स्त्रियों का रूप लेकर वनदेवियां बनते थे। इस डायोनिशिया उत्सव की उत्पत्ति मद्य तैयार करने के कार्य से हुई। यह उत्सव अनाज की कटाई के समय होता था; और उसमें गुलाम तथा अन्य सब लोग भी शामिल होते थे। यह उत्सव हमारे यहां के होलिकोत्सव के समान ही समझिये।

ग्रीक लोगों में अनेक गुप्त मंत्र और पूजा की विधियां जारी थीं। ये सब रात के समय एकान्त में हुआ करती थीं। इनमें बहुत थोड़े लोगों का समावेश होता था; और उनको, इन सब

विधियों का हाल गुप्त रखने की शपथ लेनी पड़ती थी। एटिका के इल्युसिस शहर में ऐसी विधियां बहुत हुआ करती थीं। कहते हैं कि, जब से डोरियन लोगों का प्रवेश ग्रीस देश में हुआ, तभी से पूजा की ये गुप्त विधियां वहां शुरू हुईं। उन लोगों में प्राचीन समय में जो धार्मिक चालें थीं, उनको बराबर जारी रखने के उद्देश्य से ही ये गुप्त विधियां प्रचलित हुईं। आगे चल कर उन विधियों के देवता भी निश्चित हो गये; और उन्हीं देवताओं की पूजा उन गुप्त विधियों से होने लगी। परन्तु इन सब का रहस्य केवल उन्हीं लोगों को मालूम रहता था कि, जो लोग उन गुप्त मंडलियों में शामिल रहते थे। उनका सम्पूर्ण समाचार इतना गुप्त रक्खा जाता था कि, उनके सच्चे उद्देश्य और सच्ची चालों के विषय में कुछ भी वृत्तान्त उपलब्ध नहीं है।

छठवां अध्याय।

सोलन से लेकर ईरानी युद्ध तक।

(सन् ईसवी से छठवीं शताब्दी पूर्व)
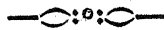
सोलन ने जब राजकार्य छोड़ दिया, तब उसके लिए तीन महाशय झगड़ने लगे। उस झगड़े में पिज़िस्ट्रेटस को सफलता हुई; और वही राजकाज देखने लगा। यह सोलन

का मित्र और अत्यन्त लोकप्रिय मनुष्य था। उसने एथेन्स का बहुत कुछ सुधार किया; और नाना प्रकार के भव्य और सुन्दर भवन बना कर शहर को सुशोभित किया। इन भवनों में अपोलो का मन्दिर और लायसियम नामक व्यायामशाला बहुत प्रसिद्ध थी। ग्रीक लोगों में व्यायाम का विशेष माहात्म्य था; और इसकी शिक्षा सब को दी जाती थी। लायसियम के अनेक बड़े बड़े भाग थे। इस व्यायामशाला के चारों ओर झाड़ियां और बाग़ थे। वहां एथेन्स के बालक शारीरिक खेल और व्यायाम करने के लिए आया करते थे। आगे चल कर, कुछ शताब्दियों के बाद, लायसियम के भवन में विद्वान् तत्ववेत्ता और कवि, इत्यादि रहने लगे; इस कारण वह विद्यापीठ बन गया।

पिज़िस्ट्रेटस ने एथेन्स में जो नवीन सुधार किये उनके लिए उसे लोगों पर कर लगाना पड़ा। यह कर ज़मीन की पैदाइश का दसवां हिस्सा था, इसके कारण लोगों में बहुत असन्तोष उत्पन्न हुआ। एक बार की बात है कि, पिज़िस्ट्रेटस देहात में घूम रहा था। वहां एक किसान किसी बेउपजाऊ भूमि में काम करता हुआ दिखाई दिया। पिज़िस्ट्रेटस ने उससे, अपने किसी नौकर के द्वारा, यह पुछवाया कि, "इस ज़मीन की पैदावार क्या है?" इस पर किसान झुँझला कर बोला, "पैदावार पूछते हो? पैदावार क्या है—यही मिहनत और कष्ट है, मुझे तो पिज़िस्ट्रेटस के कर की ही चिन्ता लगी रहती है; और क्या बतलाऊं?" उसका यह उचित उत्तर सुन कर पिज़िस्ट्रेटस ने उसका कर माफ़ कर दिया।

ग्रीक इतिहास में पिज़िस्ट्रेटस को एथेंस का "टायरंट"

कहते हैं। टायरट शब्द का अर्थ इस समय "क्रूर और जुल्मी राज्यकर्त्ता" है। परन्तु उस समय इसका यह अर्थ नहीं था। ग्रीक भाषा में टायरट उसको कहते थे कि, जो अपने ही चातुर्य से सारी राज्यसत्ता प्राप्त करके, अपनी ही इच्छा से राज्यकार्य चलाता था। अर्थात् ग्रीक लोगों का 'टायरट' सज्जन और परोपकारी हो सकता था, और पिजिस्ट्रेटस भी उसी प्रकार का था, यह बात इतिहास से प्रकट होरही है। पिजिस्ट्रेटस ने एक यह नियम बनाया कि, युद्ध में जो लोग लॅगडे हो जाते है उन सब का पालन सरकार को करना चाहिए। उसने विद्या-प्रचार के लिए भी बहुत से उपाय किये। ग्रीस देश का पहला पुस्तकालय उसी ने स्थापित किया। पीछे इस बात का उल्लेख हो चुका है कि, होमर कवि एशिया के पश्चिमी किनारे पर पैदा हुआ, और उसकी कविताए पहले पहल वहीं प्रचलित थीं, फिर जब ग्रीक लोग वहां रहने को गये तब वे उन्हें अपने साथ स्वदेश को ले आये। इन सब कविताओं को एकत्र करके, एक जगह लिख रखने का कार्य पिजिस्ट्रेटस ने ही किया। ग्रीक लोगों ने भिन्न भिन्न समय में, एशिया के किनारे जाकर, अपनी बस्तियां बसाई थी। एशिया के इन ग्रीक उपनिवेशों को अयोनिया कहते थे। आयोनिया में तेरह ग्रीक नगर-राज्यों का समावेश होता था। इसी भांति ग्रीक लोगों ने इटली के दक्षिणी किनारे पर और सिसिली टापू के किनारे पर भी बस्तिया बसाई थीं। ये सब पहले सीधे ग्रीस देश से ही बाहर निकल थे। इजिप्ट में भी इन्होंने अपना उपनिवेश बसाया था।

कहते हैं कि, चित्रकला और मिट्टी की मूर्तियां बनाने का कार्य पहले पहल कारिंथ के लोगों ने विशेष रूप से प्रचलित

किया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि, कारिंथ के साथ साथ आर्गास, ईजीना, ह्रोडस और क्रीट नामक ग्रीक रियासतों में भी उपर्युक्त कलाओं की उन्नति हुई थी।

पिज़िस्ट्रेटस के शासनकाल में डेलफाय का मन्दिर जल गया। उसे फिर से तैयार कराने के लिए, डेल्फाय के लोगों ने, सारी ग्रीक रियासतों में चन्दा एकत्र करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे, और एक चतुर्थांश खर्च अपने ऊपर लिया। सब रियासतों में बहुत सा चन्दा जमा हुआ। इजिप्ट के राजा अमासिस ने भी चन्दा भेजा। इस प्रकार डेलफाय का मन्दिर जो, पहले सादे पत्थर का था, अब बढ़िया पत्थर का बन गया। इस मन्दिर में तीन सौ टेलेंट, अर्थात् पन्द्रह लाख रुपया खर्च हुआ। पिज़िस्ट्रेट सन् ईसवी के ५२७ वर्ष पहले स्वर्गवासी हुआ।

इसके बाद पिज़िस्ट्रेटस के दो लड़के हिपियास और हिपार्कस (Hippias and Hipparchus) राजकाज देखने लगे। इन दोनों भाइयों ने भी अपने पिता का ही आदर्श सामने रख कर प्रजाहित के काम किये, और विद्या-कलाओं की उन्नति की। अनाक्रियान (Anacreon) और सायमोनाइड्स (Simonides) नामक दो कवियों को वे खास तौर पर एथेंस ले आये। दो वर्ष राजकाज करने के बाद, आरिस्टोजिटन (Aristogiton) और हार्मोडियस नामक दो मनुष्यों ने उन दोनों भाइयों को मार डालने का षड्यंत्र किया। इस षड्यंत्र के सफल होने पर वे दोनों राजकाज अपने हाथ में लेना चाहते थे। एथेन्स में मिनर्वा देवी के सम्मानार्थ पेनाथिनी (Panathenæ) नामक उत्सव हुआ करता था, उस समय सब लोग भाले और ढालें

लेकर मेला में आते थे। इसी उत्सव में उपर्युक्त षड्यन्त्र पूर्ण करने का विचार किया था। उसमें हिपार्कस मारा गया, लेकिन हिपियस बच गया, और उसने मुख्य मुख्य षड्यन्त्र-कारियों को पकड कर जान से मरवा डाला। इसके बाद उसने चार वर्ष और शासन किया, अन्त में वह लोगों को नापसन्द आया, और लोगों ने उसे पदच्युत करके कुटुम्ब-सहित देश से निकाल दिया।

इसके बाद क्लाइस्थेनिस (Cleisthenes) राज्यकार्य करने लगा। उसने अनेक सुधार किये, विशेष कर बडे लोगों का प्रभाव तोडकर मध्यम और निम्न श्रेणी के लोगों को ऊपर उठाने का उसने प्रयत्न किया। प्राचीन काल से लोगों में चार श्रेणियां चली आती थीं, उनको तोडकर उसने उनकी जगह दस नवीन श्रेणियां बनाईं। इन दस में से फिर प्रत्येक के दस दस अन्तर्विभाग बनाये, और उनको 'डेमीस' नाम दिया। डेमी में नगर अथवा गांव का समावेश होता था। प्रत्येक डेमी पर उसने डेमार्क (Demarch) नामक एक अधिकारी नियत किया। सम्पूर्ण डेमी की सभा करके सार्वजनिक प्रश्नों का फ़ैसला करना, अपनी अपनी हद में बन्दोबस्त रखना, और यह जानने के लिए कि, सब ने अपनी जमीन का लगान समय पर अदा किया या नहीं, खातेदारों का हिसाब रखना, इत्यादि काम डेमार्क के थे।

एथेंस में सब प्रकार के करों का ठेका एक ही व्यक्ति को देने की चाल थी। एक अथवा अनेक व्यक्तियों की एक मंडली को ठेकेदार बनाकर, तथा उससे एक निश्चित रकम लेकर, कर वसूल करने का सारा ठेका उसको दे दिया जाता था।

मार्गों का कर, माल की चुङ्गी, इत्यादि सब आमदनी के विभाग ठेके पर दे दिये जाते थे। भूमिकर का अवश्य ही कोई ठेका न था। उपर्युक्त विभागों को छोड़कर, और सब प्रकार के आने और जानेवाले माल पर दो प्रति सैकड़ा चुङ्गी थी; और गुलामों पर एक फी सदी कर था। दूसरे स्थानों के जो लोग एथेंस में आकर रहते थे, उनको भी इसके लिए कर देना पड़ता था; इसी भांति सार्वजनिक बाज़ार में माल बेचने के लिए भी कर लगाया गया।

नगर-निवासी की हैसियत से ग्रीक लोगों को जो हक हासिल थे उनमें भी क्लाइस्थेनिस ने बहुत परिवर्तन किया। सब स्वतंत्र लोग, अनेक परदेशी, और ऊंचे दर्जे के गुलाम, इत्यादि सब लोगों को उसने नगरनिवासियों के अधिकार दे दिये। राज्यकार्य सेनेट सभा करती थी, उसमें, प्रत्येक जाति के, पचास के हिसाब से, नवीन बनाई हुई दस जातियों के, कुल पांच सौ सभासद रहने का प्रबन्ध किया था। वर्ष भर के कार्य का इस प्रकार नियम कर दिया था कि, उक्त पांच सौ सभासदों में से, प्रत्येक पचास सभासद छत्तीस दिन काम करें; और इसके बाद दूसरे पचास सभासद काम करें। ग्रीक लोगों का वर्ष चान्द्रमान का, अर्थात् ३५४ दिन का था। उसी के अनुसार वर्ष के दस भाग करके ये दिन निश्चित किये गये थे।

इन पचास सभासदों को प्रायटेंस कहते थे। कोश का प्रबन्ध और परराष्ट्रीय वकीलों से बातचीत करके सन्धि इत्यादि निश्चित करना, इन प्रायटेंस लोगों का मुख्य काम था। परन्तु युद्ध के प्रारम्भ अथवा बन्द करने के समान महत्व-पूर्ण कार्य प्रायटेंस लोग राष्ट्रीय सभा के पास भेज देते थे।

राष्ट्रीय सभा के गरीब सभासदों को वेतन देने का नियम सोलन ने ही जारी किया था।

ज़ुल्मी और दुष्ट लोगों को देशनिकाला देने का एक विचित्र नियम इसी समय प्रचलित हुआ। जहां किसी व्यक्ति के बारे में यह सन्देह हुआ कि, वह स्वराष्ट्रद्रोही है, त्यों ही, उसकी जांच इत्यादि कुछ भी न करते हुए, अथवा उसके अपराध की सूचना भी न देते हुए, उसको देशनिकाले की सज़ा दे सकते थे। इसके लिए राष्ट्रीय सभा का प्रांगण कठ-हरा लगा कर बन्द करते थे। इस कठहरे में दस जाति के लोगों को भीतर आने के लिए दस दरवाजे रखते थे। उन दरवाजों से जब सब जातियों के लोग भीतर आ जाते तब, जिसको देश-निकाला करना होता, उसका नाम एक एक सीप पर लिख कर प्रत्येक मनुष्य उस सीप को एक बड़े वर्तन में डालता; और सन्ध्या समय जब सब लोगों की सीपें जमा हो जातीं तब उनको गिनते, और उनकी संख्या यदि छै हजार हो जाती तो उस मनुष्य को दस वर्ष तक की, देशनिकाले की सज़ा दी जाती थी। कहते हैं कि, यह नियम क्लाइस्थेनिस ने ही पहले पहल जारी किया। इस सजा का अमल भी पहले पहल क्लाइस्थेनिस पर ही हुआ।

क्लाइस्थेनिस के शासनकाल में ही एथेन्स और स्पार्टा का युद्ध छिड़ा। स्पार्टा के राजा क्लियोमेनिस ने बड़ी भारी सेना लेकर एथेंस पर चढ़ाई की; और वहां का क़िला जीत लिया। इस पर एथेंस के लोग खूब जोर-शोर से लड़े, और तीन ही दिन में अपना किला शत्रुओं से फिर छीन लिया। इस लिए क्लियोमिनिस को वहां से लौट जाना पड़ा। इसके

बाद क्लियोमिनिस ने कारिन्थियन और बियोशियन लोगों की सहायता लेकर दूसरी ओर से एथेंस पर चढ़ाई की। एथेंस के लोग भी तुरन्त ही लड़ने को तैयार होगये। इतने में कारिन्थियन लोगों के ध्यान में यह बात आई कि, स्पार्टन लोग अन्यायपूर्वक यह युद्ध कर रहे हैं, इस लिए उन्होंने स्पार्टा का पक्ष छोड़ दिया। फिर क्या था, एथेनियन सेना ने केवल बियोशियन लोगों को बात की बात में हरा दिया। बियोशियन लोगों को चाल्सिडियन लोगों की सहायता थी। उनकी भी हार हुई; और उन्हें अपना बहुत सा राज्य एथेन्स को देना पड़ा। उस राज्य में बस्ती बसाने के लिए एटिका प्रान्त से चार हजार कुटुम्ब भेजे गये। यही पहली बस्ती है कि, जो ग्रीस देश में ग्रीक रियासत के द्वारा बसाई गई।

स्पार्टा के राजा क्लियोमेनिस ने इस बात का प्रयत्न किया कि, एथेंस का राज्यकार्य क्लाइस्थेनिस के हाथ से लेकर हिपियस को एक बार फिर दिया जाय। परन्तु इस कार्य में उसे अन्य रियासतों की सहायता नहीं मिली। इतने में हिपियस ने स्वयं ईरान के राजा डरायस हिस्टास्पिस को मिला कर, उससे सहायता मांगी; और यह वचन दिया कि, यदि एथेंस का शासन हमारे हाथ में आ जायगा तो हम यह सारी रियासत ईरान के सिपुर्द कर देंगे। इस लिए डरायस ने एथेंस की सरकार को एकदम यह हुक्म दिया कि, "एथेंस का शासन बिना विलम्ब हिपियस के हाथ में दे दिया जाय।" एथीनियन लोगों ने इस हुक्म को ताक पर रख दिया; और ईरान से युद्ध ठाना।

सातवां अध्याय।

ईरानी युद्ध।

आरम्भ से लेकर सलामिस की लड़ाई तक।
(सन् ईसवी के ४६२-४८० वर्ष पूर्व तक)

ईरान में जो पराक्रमी राजा हुए उनमें डरायस की भी गणना की जाती है। इसका राज्य पश्चिम की ओर ईजियन समुद्र से लेकर पूर्व ओर सिन्धु नद तक और उत्तर की ओर सिथियन के मैदान से लेकर दक्षिण ओर इजिप्ट की नील नदी तक फैला हुआ था। उसका राज्य कुल बीस सूबों या प्रान्तों में बँटा हुआ था। प्रत्येक प्रान्त पर सत्रप नामक एक एक अधिकारी नियत था। इस सत्रप का शासन और बर्ताव अपने प्रान्त पर बिलकुल एक स्वतंत्र राजा के समान था। एशिया के पश्चिमी किनारे पर ग्रीक लोगों की बस्तियां थीं। उन बस्तियों के प्रदेश को आयोनिया कहते थे। आयोनिया का मुख्य शहर मायलिटस था। ग्रीक लोगों की उन बस्तियों पर वास्तव में डरायस का ही अधिकार था। उन बस्तियों के ग्रीक लोगों को खुश रखने के लिए, डरायस ने वहां का सत्रप भी ग्रीक जाति का ही रखा था; परन्तु ग्रीक लोग इतने ही से खुश नहीं रह सकते थे। उन्हें ईरान का शासन ही पसन्द न था। मायलिटस में आरिस्टागोरास नामक ग्रीक सत्रप रहता था। उसी को अगुआ बनाकर, एशिया के सब

ग्रीक लोगों ने, डरायस का शासन नष्ट कर देने के लिए बगा-वत शुरू की।

अरिस्टागोरास स्पार्टा के राजा क्लियोमिनिस के पास सहायता मांगने के लिए गया। डरायस के राज्यविस्तार के विषय में क्लियोमिनिस को विश्वास दिलाने के लिए अरिस्टा-गोरास अपने साथ पृथ्वी का एक नकशा तैयार करके ले गया था। यह नकशा कांस धातु के पट पर भद्दी तौर से खिंचा हुआ था और उस पर नदियों के प्रवाह तथा समुद्र का आकार उस समय की जानकारी के अनुसार दिखलाया हुआ था। इस नकशे का उद्देश्य केवल इतना ही था कि, डरायस के राज्य का विस्तार और उसकी शक्ति क्लियोमिनिस को भली भांति मालूम होजावे। यूरप में बना हुआ सब से पहला नकशा यही था।

अरिस्टागोरास को क्लियोमिनिस की सहायता नहीं मिली। उसने क्लियोमिनिस को इस सहायता के लिए ढाई लाख रुपये देने कहे, तथापि कुछ लाभ नहीं हुआ। बल्कि, इसके विरुद्ध उसे राजा ने स्पार्टा से बाहर निकलवा दिया। कहते हैं कि अरिस्टागोरास ने ज्योंही क्लियोमिनिस को द्रव्य का लोभ दिख-लाया, त्योंही उसकी दृढ़ता डगमगाने लगी, इतने में गोर्गो नामक क्लियोमिनिस की आठ वर्ष की लड़की अपने बाप से बोली, "पिता जी, जाइये, यहां से चले जाइये, नहीं तो आपको पाप लगेगा।" ये शब्द सुनते ही क्लियोमिनिस वहां से उठ कर चला गया।

अरिस्टागोरास ने एथेंस को भी अपना वकील भेजा था। ईरानी राजा का यह हुक्म, कि हिपियस को एथेंस का शासन-

कार्य सौंप देना चाहिए, जिस समय एथेंस में आया, उसी समय यह वकील भी वहां आ पहुँचा। तब एथेंस के लोगों ने आयोनिया के ग्रीक लोगों को सहायता देने का एकदम निश्चय किया, और बहुत जल्द बीस जंगी जहाज़ तैयार कराये। यूबिया टापू की इरिट्रिया नामक रियासत से पांच जहाज़ आये, इस सम्पूर्ण जलसेना ने मिलकर ईरानी राज्य पर हमला किया; और सार्डिस शहर को जला डाला। आगे चलकर एक युद्ध हुआ, उसमें ईरानी लोगों की जीत हुई, और एथीनियन लोग युद्ध छोड़कर स्वदेश लौट आये।

आयोनियन लोगों के साथ डरायस छै वर्ष तक लड़ता रहा, अन्त में उसने ग्रीक लोगों का मुख्य शहर मायलिटस ले लिया; और जो ग्रीक लोग जीवित उसके हाथ आये उनको उसने टैग्रीस नदी के मुख के पास नवीन बस्ती बसाने के लिये भेज दिया। इसके बाद एशिया के सब ग्रीक शहर, एक के बाद एक, ईरान के हाथ में आगये। इससे एशिया के ग्रीक लोगों को जीतने का डरायस का संकल्प पूर्ण हो गया।

परन्तु डरायस इतना ही करके चुप नहीं हुआ। सार्डिस शहर के जलने पर एथिनियन और इरिट्रिन लोगों से बदला चुकाने के लिए उसने एथेंस पर चढ़ाई करने की तैयारी की। इसके बाद डरायस ने सब ग्रीक लोगों को यह सन्देशा भेजा कि, "इस बात को जतलाने के लिए, कि तुमको हमारी अधीनता स्वीकार है, तुम इस जासूस के द्वारा मिट्टी और पानी भेज दो।" थीब्स और ईजीना ने यह अपमान सहन करके ईरानी राजा का कथन स्वीकार कर लिया, पर एथेंस और

स्पार्टा ने उसकी परवा नहीं की। क्लियोमिनिस अपनी सेना के साथ एकदम ईजिना पर चढ़ धाया, और उस रियासत को जीत कर अपने अधिकार में कर लिया, तथा वहां के लोगों से यह प्रतिज्ञा करा ली कि, वे शत्रु से कभी न मिलेंगे। ईजिना से लड़ते हुए क्लियोमिनिस ने अत्यन्त क्रूरता का बर्ताव किया। वहां की राजधानी आरगास के देवता की अमराई में कुछ लोग डर कर जा छिपे थे, इस लिए क्लियोमिनिस ने उस अमराई को ही जला डाला। इसके बाद बहुत जल्द पागल होकर उसने आत्महत्या कर ली। इस पर ग्रीक लोग यह कहने लगे कि, देवता की अमराई जलाने के कारण क्लियोमिनिस की यह दुर्दशा हुई।

इधर ईरानी लोगों ने बड़ी भारी जहाजी सेना के साथ ग्रीस पर चढ़ाई की। मार्ग में अनेक टापू उन्होंने जीत लिये; और यूबिया में आकर इरिट्रिया को घेर लिया। इसके बाद उस शहर को हस्तगत करके ईरानियों ने उसे जला डाला; और जहाजों के द्वारा एटिका प्रान्त में आकर मारेथान के मैदान में छावनी डाल दी। उनका सामना करने के लिए एटिका के ग्रीक लोग आये। स्पार्टा की सहायता मांगने के लिए उन्होंने अपने धावन भेजे। इन धावनों ने डेढ़ सौ मील का अन्तर ४८ घंटे में पार किया। भिन्न भिन्न ग्रीक रियासतों में परस्पर हेलमेल रहने का साधन उस समय केवल यही धावन थे, अतएव जल्द दौड़ने की शक्ति उस समय के लोगों में खूब थी। मारेथान से स्पार्टा तक की यात्रा उन धावनों ने इतनी जल्दी कर ली, इससे ग्रीक लोगों की शक्ति का अच्छा अनुमान होता है।

ग्रीक सेना पर दस सेनाध्यक्ष नियत थे। उनमें से प्रतिदिन एक सेनापति फौज का मुखिया बनता था। ईरानी सेना बहुत बड़ी थी, अतएव ग्रीक सेनापति को उस पर आक्रमण करने का साहस नहीं होता था। यह देखकर मिल्टियाडिस (Miltiades) नामक एक साहसी और युद्धकला-प्रवीण पुरुष ग्रीक सेना का मुखिया बना। उसने ईरानी लोगों से युद्ध करके उनको पूर्णतया पराजित कर दिया। मारेथान की यह लड़ाई सन् ईसवी के ४९० वर्ष पूर्व हुई।

इस युद्ध के वर्णन अतिशयोक्त से भरे हुए हैं, तथापि इसमें सन्देह नहीं कि, ग्रीक लोगों से ईरानी लोगों की संख्या बहुत अधिक थी। ग्रीक सेना में गुलामों की भरती विशेष थी, और उनको युद्धशिक्षा भी नहीं मिली थी। तथापि उनको यह वचन दिया गया था कि, यदि जीत होगी तो तुमको स्वतन्त्रता मिलेगी, अतएव लड़ने में उन्होंने खूब बहादुरी दिखलाई। इस विजय से मिल्टियाडिस की प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। लोगों ने एथेंस में महोत्सव करके नाना प्रकार से आनन्द प्रकट किया। उन्होंने लड़ाई में काम आये हुए एथीनियन लोगों के मृतक शरीर बड़ी धूमधाम से पृथ्वी के गर्भ में स्थापित किए, और उन पर एक भव्य मंडप खड़ा किया। इस मंडप में दस बड़े बड़े स्तम्भ थे, जिन पर दस जाति के लोगों के नाम खुदे हुए थे। प्लेटिया के लोगों तथा गुलामों के शवों पर भी एक ऐसा ही दूसरा मंडप बनवाया।

इस समय मारेथान का मैदान बिलकुल उजाड़ दशा में है। वहां मनुष्यों की बस्ती बिलकुल ही नहीं है। समुद्र से लगभग आधे मील पर लाल मिट्टी का एक ढेर है। उसकी

उंचाई ३० फीट और घेरा ६०० फीट है। इसके पास ही एक चौकोने मीनार का ध्वंसावशेष गिरा पड़ा है। यह मीनार मिल्टियाडिस के सन्मानार्थ, एथीनियन लोगों ने बनाया था।

इस पराजय से डरायस को बड़ा शोक हुआ, और फिर पांच वर्ष बराबर परिश्रम करके उसने ग्रीक देश पर चढ़ाई करने की ख़ूब तैयारी की। परन्तु इतने में उसका देहान्त ही हो गया। उसके बाद उसके लड़के क्सर्क्सीस ने ग्रीस देश विजय करने का दृढ़ निश्चय करके, उसके लिए और भी अधिक ज़ोर से तैयारी शुरू की।

इस समय थेमिस्टाक्लिस एथेंस का राजकाज देखता था। वह धनजन से परिपूर्ण था, उसने जहाजी सेना के द्वारा एथेंस की शक्ति बहुत बढ़ाई। एटिका प्रान्त के लारियम नामक मुकाम में जो चांदी की खानें थीं, उनकी आमदनी, उसने प्रतिवर्ष बीस नवीन जहाज़ बनाने में लगा दी। इस कार्य का सब ठीक ठीक प्रबन्ध करने के लिए उसने एक स्वतंत्र कमेटी नियत कर दी। थेमिस्टाक्लिस के बनवाये हुए जहाज़ तीन खण्डों के थे; और प्रत्येक जहाज़ पर दो सौ खलासियों के रहने की सुविधा थी। उनका वेग आजकल के जहाज़ों के करीब करीब था। उनके अगले सिरे के ऊपर के भाग में रंगीन चित्र खिंचे हुए थे; और नीचे झुके हुए सिरे में लोहे का भाला गड़ा हुआ था। इससे वह सिरा शत्रु के जहाज़ में एकदम घुस जाता था। इन जहाज़ों के आसपास खाल के, अथवा टोकरियों के समान बुनावट के कठड़े लगे रहते थे, कि जिससे शत्रुओं के बाण भीतर के लोगों के न लगने पावें। उनको चलाने के लिए प्रायः गुलाम लोग

ही नियत रहते थे। हां, खलासी अवश्य ही निम्न श्रेणी के स्वतत्र लोग रहते थे।

मारेथान की लडाई के दस वर्ष बाद क्सर्क्सीस यूरप में आया। उसके साथ इतनी बडी सेना थी कि, पहले कभी किसी ने इतनी बडी सेना यूरप में आई हुई नहीं देखी थी। उसमें भिन्न भिन्न राष्ट्रों के लोग शामिल थे, और उन सब ने अपने २ राष्ट्रों के वस्त्र और शस्त्र धारण किये थे। उस बृहद् सेना को रसद् इत्यादि पहुँचाने के लिए स्त्री, पुरुष और गाडियों इत्यादि का तांता फौज के साथ लगा हुआ था। बादशाह अपने सुन्दर रथ मे बैठा हुआ था। उसकी रक्षा के लिए चुने हुए लोग उसके साथ रहते थे, जहां जहां उसका मुकाम होता, वहा वहा उसके खाने पीने इत्यादि का बन्दोबस्त बिलकुल उसके राजमहल का सा होता था।

आथोस पर्वत से मुख्य महाद्वीपों को जोडनेवाली एक तग सयोगीभूमि है, उसको खोद कर उसने एक नहर बनाई कि जिससे यहां से फौज जाने में कठिनाई न पडे। इसके सिवाय, मार्मोरा और ईजियन समुद्रों को जोडनेवाली हेलेस्पान्ट नामक तग सामुद्रधुनी, जो एशिया और यूरप के बीच में है, उस पर उसने नौकाओं का पुल बनाया। इस पुल का बाधनेवाले लोग इजिप्शियन और फिनिशियन थे। पुल तैयार हो जाने पर तूफान आया, जिससे कि वह टूट गया। इस लिए उसने नौकाओं की दुहरी पक्तियां एक से एक भिडा कर फिर दूसरा मजबूत पुल तैयार किया। उन सब नौकाओं को रस्सियों से जकड दिया था, और प्रत्येक नौका का लगर पानी में डाल कर उसको ऐसा बना दिया था कि, बिलकुल

हिल न सके। इसके बाद उन नौकाओं पर तख्ते बिछा कर मिट्टी डाल दी, और दोनों ओर कठड़ा लगा दिया; इससे यह पुल एक उत्तम मार्ग के समान बन गया। यह काम करने के लिए क्सर्क्सिस बेगारी पकड़ लाया था; और उनसे काम लेने के लिए अपने विश्वासू जमादार नियत किये थे। इस पुल के द्वारा सात दिन और रात क्सर्क्सिस की सेना पार होती रही। स्थलसेना जब कि थ्रेस प्रान्त से पार होने लगी तब उस प्रान्त के प्रत्येक शहर को एक एक दिन की सामग्री इस सेना को देनी पड़ी। इस अत्याचार से कुछ शहर तो सदैव के लिए नाश हो गये; क्योंकि इतनी बड़ी सेना का एक दिन का खर्च कुछ थोड़ा न था।

इस भयंकर अरिष्ट से सामना करने के लिये एथेंस और स्पार्टा की रियासतें एक होगईं। अन्य कुछ रियासतें उनमें पहले ही से मिली हुई थीं; परन्तु भावी परिणाम पर दृष्टि देकर उन्होंने प्रारम्भ में ही उस गुट से अपना अङ्ग खींच लिया। इस प्रकार का देशद्रोह करने में सब से पहली रियासत थेसली थी। थेसली के लोग न सिर्फ क्सर्क्सिस के शरण में ही गये; किन्तु उसकी सेना में शामिल होकर एथेंस से लड़ने को भी आये। थेसली और ग्रीस देश के अन्य प्रान्तों के बीच में बड़े बड़े ऊँचे पर्वत हैं। उनको पार करके ग्रीस देश में फौज उतारने के लिए एक ही तङ्ग मार्ग है। उसे थर्मापिली कहते हैं। इसके एक ओर ईटा का पर्वत और दूसरी ओर समुद्र है। यहां पर ईरानी सेना के प्रतिबन्ध का मतलब यही था कि उसको इस मार्ग के आगे बढ़ने न दिया जाय। ईरानी सेना के प्रतिबन्ध करने का कार्य स्पार्टा के राजा

लियोनिडास ने स्वीकार किया; और वह अपनी सेना के साथ इस तङ्ग मार्ग को घेर कर अड़ रहा। ईरानी लोगों ने इस मार्ग से प्रवेश करने के लिए अनेक प्रयत्न किये; पर वे सफल नहीं हुए। अन्त में एफिएल्टिस नाम का एक ग्रीक मनुष्य, जो कि ट्राकिनिया प्रान्त का निवासी था, बाग़ी होकर शत्रु से जा मिला। उसने पर्वतों से भीतर आने का एक मार्ग कसर्क्सीस को दिखलाया। उस मार्ग से थोड़ी सी ईरानी सेना लियो-निडास के पिछली ओर आगई।

लियोनिडास यदि भग गया होता तो वह बच गया होता। परन्तु स्पार्टा का यह नियम था कि, स्पार्टन लोगों को रणभूमि से भगना नहीं चाहिए, इस लिए उस विकट मौके में फँस कर भी, उसने ऐसी ही दृढ़ता दिखलाई कि जो किसी शूर पुरुष के लिए पूर्ण रीति से शोभा देने योग्य थी। उसने अपने पास तीन सौ स्पार्टन, सात सौ थेस्पियन और चार सौ थीबन लोगों को रख लिया, और बाकी सब लोगों को छुट्टी देदी। यह छोटी सी सेना उसने कसर्क्सीस की भारी सेना से सामना करने के लिए तैयार की। इनमें से चार सौ थीबन लोग पहले ही युद्धक्षेत्र से भग गये। शेष योद्धा इस दृढ़ता के साथ लड़े कि उनमें से एक भी मनुष्य जीवित नहीं बचा।

इस प्रकार वह तंग मार्ग अधिकार में आते ही ईरानी सेना फोसिस प्रान्त से लूट मार करते और नगर जलाते हुए आगे बढ़ी। बियोशियो के लोगों ने प्रेमपूर्वक उसका सत्कार किया। एक ईरानी पल्टन डेल्फाय पर चढ़ धाई, परन्तु वहां के लोगों ने वीरता से सामना करके उसको मार भगाया।

तथापि एथेंस के पक्ष के लोग यहां तक छोड़कर भग गये कि एथीनियन लोग विवश हो गये, इस लिए, अब वे एथेंस को छोड़ कर, और अपने बाल-बच्चों तथा कुछ सम्पत्ति इत्यादि साथ लेकर जहाज़ों के द्वारा सलामिस और ईजिना टापू को चले गये। सिर्फ़ थोड़े से लोग पीछे रह गए, उन्होंने किले में जाकर दरवाजे बन्द कर लिये। उस पर शत्रुओं ने आक्रमण किया। तथापि जब सब लोग युद्धक्षेत्र में काम आ चुके, तभी किला ईरानियों के हाथ आया।

इसके बाद, सलामिस टापू और ग्रीस देश के बीच में जो संकुचित समुद्र है उसमें ईरानी जलसेना आ पहुँची। अवश्य ही इस जगह ग्रीक लोगों का सौभाग्य उदय हुआ। ग्रीक जलसेना का मुखिया थेमिस्टाक्लिस नामक एक पुरुष था। इसने ईरानी जलसेना पर हम्ला करके उसका सत्यानाश कर दिया। इस समुद्री लड़ाई को "सलामिस" की लड़ाई कहते हैं। इस लड़ाई से युद्ध का अन्त ही होगया। समुद्री युद्ध को देखते हुए क्सर्क्सीस किनारे पर अपनी सेना तैयार किए हुए बैठा था। जब उसने देखा कि उसकी सारी जल-सेना समुद्र में डूब गई, तब तो उसका धैर्य छूट गया, और वह बड़ा घबड़ाहट में पड़ा। जलसेना के बिना युद्ध जारी रखना सम्भव नहीं था। अतएव इतने ही को पर्याप्त समझ कर वह स्वदेश को लौट चला। उसकी जो सेना पीछे रह गई उस पर मार्डोनियस को उसने मुख्य सेनाध्यक्ष नियत कर दिया।

एथेंस में जो कुछ बाक़ी बचा था, वह सब मार्डोनियस ने जला कर ख़ाक कर डाला। परन्तु आगे चलकर बियो-

सेनापति मिल्टियाडिस पर राजद्रोह का अपराध लगाया गया; जिसमें उसे ढाई लाख रुपये जुर्माना हुआ। यह जुर्माना उसने नहीं दिया; अतएव वह जेल में डाल दिया गया। वहीं उसकी मृत्यु हो गई। लेकिन एथेंस में एक यह भी क़ानून था कि पिता का दण्ड लड़के को भोगना चाहिए। इसके अनुसार, मिल्टियाडिस के लड़के सायमन (Cimon) ने भी जब जुर्माना नहीं दिया, तब वही क़ैद में डाल दिया गया। कुछ दिन बाद कल्यास नामक, एथेंस के एक साहूकार ने, सायमन का जुर्माना देकर उसे क़ैद से छुड़ाया। इसके लिए सायमन ने अपनी बहन का विवाह कल्यास से कर देने का वचन दिया। कुछ समय बाद सायमन को अपने पुरखों की ज़ायदाद मिल गई; और युद्ध की बहुत सी लूट भी उसे प्राप्त हुई, इससे वह बड़ा सम्पत्तिशाली बन गया।

आठवां अध्याय।

सायमन और पेरिक्लीज़।

:o:

यद्यपि क्सक्र्सीस का पराभव हुआ, तथापि युद्ध बन्द नहीं हुआ। पूर्व ओर के ग्रीक प्रदेशों में दोनों पक्षों में लड़ाई हो ही रही थी। थेमिस्टाक्लीस को देशद्रोह के कारण देश-निकाले की सज़ा मिल चुकी थी; और सायमन उसकी जगह सेनापति नियत हुआ था। उसने जल और स्थल पर ईरानी

सेना से लड़कर बहुत बार विजय प्राप्त किया। सन् ईसवी के ४६६ वर्ष पहले एशियामाइनर के किनारे पर युरिमिडान में उसने ईरानी फौज को मार भगाया, ईरानी जलसेना को नष्ट कर दिया; और लूट का बहुत सा माल प्राप्त किया।

इससे सायमन की कीर्ति खूब बढ़ी; और उसे यह इच्छा उत्पन्न हुई कि एथेंस का राज्यकार्य हमारे ही द्वारा होना चाहिए। परन्तु पेरिक्लीज़ नामक उसका एक प्रतिस्पर्धी था। वह प्रजापक्ष का मुखिया था; और सायमन सरदार लोगों का मुखिया था। सायमन बड़ा धनवान् था। उसने अनेक प्रकार से दानधर्म करके लोगों का प्रेम सम्पादन किया। उसने अपने बाग़ और फलों के खेत सब लोगों के लिए खोल दिये। उसकी पंक्ति में सब जातिभाइयों को भोजन मिलता था। जब वह बाहर निकलता था तब उसके नौकर गरीबों को पैसे और कपड़े बांटते हुए उसके आगे चलते थे। उसने बाग़ तैयार किये, धर्मशालाएं बनवाईं; और अन्य बहुत से सार्वजनिक कार्य किये, जिनसे लोगों को बहुत लाभ हुआ। थीसियस के बड़े मन्दिर का कुछ गिरा हुआ भाग अब भी दिखाई देता है। यह मन्दिर सायमन ने बनवाया। एथेंस शहर और उसके दो बन्दरों के बीच में उसने दो बड़ी बड़ी दीवालें बनवाईं; और दोनों को जोड़ने वाला सुन्दर सुरक्षित नवीन मार्ग बनवाया।

यद्यपि उसने इतने काम किये, तथापि उसका उद्देश्य सिद्ध नहीं हुआ। थेमिस्टाक्लीस के समान उसे भी दण्ड भोगना पड़ा। उसे जब देश-त्याग करना पड़ा, तब स्वाभाविक ही एथेंस का सब राज्यकार्य पेरिक्लीज़ के हाथ में आ गया।

ईरानी फौज का पराभव करने में एथेंस और स्पार्टा की दो रियासतें मुख्य थीं। इसके बाद दोनों ही को ग्रीस देश में मुखिया बनने का अवसर प्राप्त हुआ था। उसमें स्पार्टा का प्रभाव कुछ अधिक ही था। परन्तु वहां के लोगों में सम्राट्पद धारण करने के योग्य तेजस्विता न थी। वे जलसेना नहीं चाहते थे; और जलसेना के बिना दूर दूर के प्रदेश कब्जे में रखना असम्भव था। इसके सिवाय, स्पार्टन लोग परिस्थिति के अनुकूल अपनी व्यवस्था भी बदल नहीं सकते थे। वे नवीन सुधार भी नहीं चाहते थे। यदि कोई बुद्धिमान पुरुष आगे बढ़कर नवीन व्यवस्था करने लगता था, तो वह उन लोगों को अप्रिय लगता था। स्पार्टा की मुख्य नीति यह थी कि, जितना कुछ है उतने ही से अपनी रक्षा करनी चाहिए व्यर्थ के लिए बाहरी झगड़ों में न पड़ना चाहिए। स्पार्टा के व्यवहार की रीति यह थी कि कोई भी एक प्रणाली स्थायी रूप से स्वीकार न करनी चाहिये; किन्तु जैसा मौका आजावे उसी के अनुसार एकदम निश्चय करके वैसा बर्ताव करना चाहिए। अपनी रियासतों के अतिरिक्त अन्य ग्रीक रियासतों की उसे कुछ भी परवा न थी।

लेकिन एथेंस की नीति और ही कुछ थी। ईरानी युद्ध में प्राप्त किये हुए विजय का उपयोग करके एथेंस ने प्रायः बहुत सी ग्रीक रियासतों का एक गुट बनाया; और स्वयं नेतृत्व स्वीकार करके एक प्रकार का नवीन साम्राज्य स्थापित किया। अर्थात् पहले प्रत्येक ग्रीक रियासत स्वतंत्र और अलग थी, परन्तु अब शत्रु के हम्ले की सम्भावना से सब रियासतें मिल कर एक बन गईं; और उनका मुखियापन एथेंस को प्राप्त

हुआ। ईरानी लोगों का यद्यपि पराभव हो गया, तथापि जगह जगह अब भी उनकी छावनियां पड़ी हुई थीं। अतएव आयोनिया इत्यादि दूर दूर की रियासतों को, अपना बचाव करने के लिए, एका करने की आवश्यकता मालूम हुई। ईरानी के जुल्म से ग्रीक रियासतों का बचाव करना और ईरानी राज्य में अधिकार जमा कर अपनी सम्पत्ति बढ़ाना इस एका का मुख्य उद्देश्य था। डेलास नामक एक टापू था, वहां इस गुट की रियासतों ने अपना मुख्य खज़ाना रखा; और वहीं व्यवस्थापक सभा भी होने लगी। इससे इस गुट को "डेलास का गुट" कहने लगे।

इस गुट में समुद्र किनारे की सब ग्रीक रियासतें शामिल हो गईं। सब ने शक्ति के अनुसार सहायता देकर एक बड़ी जलसेना तैयार की। कितनी ही रियासतें बिलकुल छोटी और ग़रीब थीं। उनको पूरा पूरा जहाज़ देने का सुभीता नहीं था, अतएव निश्चय हुआ कि, वे थोड़ा बहुत-नकद रुपया देवें। इस प्रकार इन रियासतों की पहले दो श्रेणियां हुईं— एक पूरा जहाज देनेवालों की और दूसरी नकद रुपया देने-वालों की। दूसरी श्रेणी बड़ी थी। ऐरिस्ट्रायडिस नामक, एथेंस का एक चतुर राजनीतिज्ञ था। उसी ने उक्त गुट बनाया था। भिन्न भिन्न रियासतों की हैसियत देख कर यह भी उसी ने निश्चित कर दिया था कि, किसको कितनी मदद करनी चाहिए। अतएव ऐरिस्ट्रायडिस को इस गुट का संस्थापक कहते हैं। ऐरिस्ट्रायडिस के साथ थेमिस्टाक्लिस भी यही काम करता था। इन्हीं दोनों ने डेलास के गुट में एथेंस को प्रमुखपद दिलाया। द्रव्य और जलसेना की सारी

व्यवस्था एथेंस के ही हाथ में थी। अतएव, बहुत जल्द सब रियासतों की स्वाधीनता छीन कर, एथेंस ने उस पर अपना स्वामित्व जमाया। यह स्वामित्व स्थापित करनेवाला पुरुष सायमन है। उपर्युक्त गुट की स्थापित की हुई बड़ी भारी जलसेना लेकर उसने पहले ईरानी राज्य के कुछ प्रदेशों पर अधिकार किया; और बाद को उसी जलसेना के ज़ोर पर उन ग्रीक रियासतों को जीता, कि जो उक्त गुट में शामिल होने से इन्कार करती थीं। इससे गुट की रियासतों की संख्या दो सौ के ऊपर होगई। इतनी शक्ति प्राप्त होते ही डेलास का ख़ज़ाना एथेंस में लाया गया। बस, यहीं से एथेंस की ग्रीक साम्राज्य-सत्ता का प्रारम्भ गिना जाता है (ईसवी सन् के ४५४ वर्ष पहले।) इस प्रकार एजियन समुद्र के अधिकांश टापुओं और थ्रेस तथा मासिडोनिया के ग्रीक शहरों पर एथेंस की सत्ता फैल गई। एथेंस की यह श्रेष्ठता लगभग पचास वर्ष टिकी। इसके अधिक दिन न टिक सकने का कारण यही था कि, दर असल में ग्रीक लोगों का स्वभाव ही एक दूसरे के अधिकार में रहने का न था—सभी पूर्ण स्वतंत्रता चाहते थे। परकीय शत्रु के आने पर यद्यपि सब नगरों ने एका स्वीकार कर लिया, तथापि शत्रु के जाते ही सब फिर स्वतंत्र होने को तैयार होगये। एथेंस का प्रभाव उनसे सहन नहीं हो सका। यहां पर यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि, स्पार्टा तथा उसके हाथ की अन्य रियासतें तो डेलास के गुट में कभी शामिल ही नहीं हुईं।

एथेंस की यह बढ़ती हुई सत्ता स्पार्टा से सहन नहीं हो सकी। अतएव दोनों में युद्ध ठन गया; परन्तु सन्धि हो जाने

के कारण पांच वर्ष तक वह रुका रहा। इसी समय सायमन की मृत्यु हुई, जो कि सज़ा रद हो जाने के कारण छूटकर आगया था। इधर सन्धि के पांच वर्ष पूर्ण होने के पहले ही एथेंस और स्पार्टा में फिर समुद्र पर युद्ध छिड़ गया। इसका कारण यह हुआ कि, डेल्फाय का मन्दिर और उसके देवता की सब सम्पत्ति सम्हालने का कार्य डेल्फाय के लोगों के हाथ में था। देवपूजा का कार्य भी वहीं के कितने ही बड़े बड़े कुटुम्बों के हाथ में वंशपरम्परा से चला आता था। डेल्फाय शहर फोसिस रियासत के अधीन था; अतएव फोसिस के अधिकारी डेल्फाय के मन्दिर के उपर्युक्त अधिकारों के लिए लड़ने लगे। इस लड़ाई में एथेंस ने फोसिस को सहायता दी। इधर स्पार्टा ने डेल्फाय का पक्ष लिया, और सारा मन्दिर लेकर वहां के लोगों के अधिकार में दे दिया। स्पार्टा की इस सहायता के लिए डेल्फाय के लोगों ने स्पार्टा को एक यह अधिकार दिया कि, जिस समय बहुत सी रियासतों के वकील भविष्यद्वाणी पूछने के लिए आवें उस समय स्पार्टा का प्रश्न सब से पहले रक्खा जाय। डेल्फाय के लोगों ने इस अधिकार का वृत्तान्त पत्थर के एक खंभे पर खोद दिया। बाद को जब स्पार्टा की सेना लौट गई, तब पेरिक्लीज़ ने एथेंस की सेना लेकर डेल्फाय पर चढ़ाई कर दी; और डेल्फाय के मन्दिर पर अधिकार करके, वहां के सब अधिकार फोसिस के लोगों को दे दिये। उसने पहले प्रश्न करने का अधिकार एथेंस को दिया; और इस विषय में जिस खंभे पर स्पार्टा का अधिकार खुदा हुआ था, उसी खम्भे पर एथेंस का अधिकार अंकित कर दिया। यह एक बड़ा कारण एथेंस

और स्पार्टा की शत्रुता का था, इसके अतिरिक्त और भी अनेक छोटे-मोटे कारण थे। अतएव दोनों में युद्ध ठन कर वह तीन वर्ष तक जारी रहा। उसमें स्पार्टा की अन्त में जीत हुई, और अनेक शर्तें स्वीकार करके एथेंस को सुलह करनी पडी। सन् ईसवी के ४४५वें वर्ष पूर्व, तीस वर्ष के लिए, दोनों में मैत्री की सन्धि होगई।

सन् ईसवी के पहले ४६० से ४३० तक के तीस वर्ष पेरिक्लीस के शासनकाल में प्रसिद्ध हैं। ग्रीस के इतिहास में पेरिक्लीज़ का बडा गौरव है। उस समय के सब राजनीतिज्ञों में पेरिक्लीज अग्रगण्य है, और वह अपने राज्यशासन के कौशल, अपनी विद्वत्ता और प्रजाहितदक्षता के लिए बहुत प्रसिद्ध है। उसने राज्य-विषयक सारे सुधार लोगों के ही धन से किये, और गरीबों के लिए भोजन तथा सर्वसाधारण के लिए मनोरञ्जन के साधनों का भी प्रबन्ध उसी सार्वजनिक धन से ही कर दिया, जिससे सब लोग खुश रहें। उसने सार्वजनिक त्योहारों की सख्या बढाई, नाटकघर प्रति दिन खुल रखे, और जो स्वय पैसे देकर नाटक नहीं देख सकते थे उनको सरकारी खज़ाने से पैसे देने का प्रबन्ध कर दिया। इसी भांति उसने उन लोगों को, जो कि कचेहरी में जूरर नियत किये जाते थे, काम के दिनों का वेतन देने का निश्चय किया। इन सब बातों के कारण वह बडा लोकप्रिय हो गया। पेरिक्लीज ने एक यह भी कानून बनाया कि, अधीनस्थ रियासतों के सब मुकदमे अन्त में फैसले के लिए एथेंस में आया करें। इससे भी एथेंस का कार्य और महत्व बहुत बढ गया।

गुट की रियासतों से एथेंस को जो कर मिला करता था

उसे पेरिक्लीज़ ने और भी बढ़ाया। पहले वह ४६० टैलेंट, अर्थात् २३ लाख रुपये था; परन्तु अब ६०० टैलेंट, अर्थात् ३० लाख रुपये हो गया। इस भांति जो अधिक धन आया उसे खर्च करके उसने एथेंस में बड़े बड़े सुन्दर भवन बनवाये; और अन्य कलाकौशल के काम तैयार कराये। सायमन ने जो लम्बा सा कोट बनवाना शुरू किया था उसे पेरिक्लीज़ ने पूरा किया; ईरानी लोगों के गिराये हुए मन्दिर दुरुस्त करवाये; और नवीन बड़े बड़े मन्दिर बनवाये, जिनमें से पार्थिनान नामक एथिनी देवी का मन्दिर विशेष प्रसिद्ध है। यह मन्दिर किले के भीतर मध्य भाग में था; और बहुत ही दर्शनीय बना हुआ था। उस पर फिडियस नाम का एक पुरुष मुख्य कारीगर नियत किया गया था, इसकी बनाई हुई कई मूर्तियां अब भी ब्रिटिश म्यूज़ियम में मौजूद हैं, जहां कि उन्हें "एलिजन आरसपान" कहते हैं। एथिनी देवी की मूर्ति लगभग ४० फीट ऊंची, हाथीदांत और सोने की बनाई गई थी— अर्थात् पहले सब मूर्ति लकड़ी की बना कर, और तब फिर उस पर हाथीदांत की जड़ाई की गई थी; और वस्त्र के भाग उसमें सोने के बनाये गये थे।

इसके अतिरिक्त प्रोपिली (Propylæ) और ओडियम (Odeum) नामक दो और भी उत्तम कलाकौशल के कार्य पेरिक्लीज़ के हैं। क़िले में जाने का जो मार्ग था, उसके दोनों ओर दीवाल पर खुदावदार नक्शकारी और चित्रों का काम किया हुआ था; और भीतर जाने के मुख्य मार्ग में धातु के पांच बड़े बड़े दरवाजे और छै क़ीमती पत्थर के बड़े बड़े खम्भे थे। इसी मार्ग का नाम था "प्रोपली"। ओडियम एक सुन्दर

और भव्य नाटकघर का नाम था, जिसमें लोगों के मनोरञ्जन के लिए संगीत के जलसे हुआ करते थे। इन सब इमारतों के कारण शहर के बढ़ई, लुहार, सोनार, मज़दूर, प्रस्तकार अर्थात् मूर्तियां खोदने वाले, चित्रकार, इत्यादि अनेक प्रकार के कारीगरों को खूब काम मिलता रहता था।

प्रिक्स नामक मैदान के एक भव्य भवन में लोकनियुक्त सभा का कार्य हुआ करता था। यह स्थान शहर के आगोरा नामक मुख्य चौक के पास था। रोम का मुख्य चौक जैसे फोरम प्रसिद्ध है, वैसे ही एथेंस का आगोरा समझिये। उपर्युक्त सभागृह की बनावट वृत्ताकार थी, एक ओर उसी में अदालतें लगा करती थीं। सभा के मुख्य दीवानखाने में पांच सौ तक सभासद बैठ सकते थे। प्रिक्स के पीछे एक लम्बी सी प्राकृतिक पहाड़ी चली गई थी, जिसके कारण उसके एक ओर का बन्दोबस्त आप ही आप होगया था। भवन के मध्यभाग में पत्थर में खुदा हुआ एक ऊंचा सा व्यासपीठ बना हुआ था; उस पर चढ़ने के लिए सिढ़ियां भी पत्थर में ही खुदी हुई थीं। सभा में भाषण करनेवालों के लिए यह नियम था कि वे उन सिढ़ियों से चढ़ कर, व्यासपीठ पर जावें; और सभा में भाषण करें। इससे सार्वजनिक प्रश्नों की चर्चा सब लोगों को मालूम होती रहती थी; और सब लोग अपने अपने हाथ उठा कर सम्मतियां दिया करते थे।

एथेंस और स्पार्टा की जिस सन्धि का ऊपर उल्लेख हो चुका है, उसको हुए अभी लगभग चौदह वर्ष हुए थे, कि इतने ही में उन दोनों में फिर झगड़े शुरू हो गये, और युद्ध की नौबत आई।

नववां अध्याय ।

पेरीक्लीज़ के समय में ग्रीक लोगों के रीतिरवाज ।
(सन् ईसवी के ४८० से ४३१ वर्ष पहले तक ।)

ग्रीक लोगों की, घर बनाने की प्रणाली ईरानी युद्ध के बाद बहुत बदल गई । निजी मकान बड़े और विस्तृत तथा सार्वजनिक भवन सुन्दर और भारी बनने लगे । मन्दिरों के आसपास ऊंचे खम्भों के और कमानों के, नकाशीदार घेरे बनने लगे । लोगों के बैठने के लिए, बेंचों के समान, पत्थर के चबूतरे बनाने की चाल चली । चारों ओर रंगीन चित्रों से स्थान को सुशोभित करने लगे । विश्रान्ति के समय सब प्रकार के लोग ऐसे स्थानों पर एकत्र होने लगे, और विद्वान् लोग वहां आ आ कर व्याख्यान भी देने लगे ।

ग्रीक लोग अपने घर ईंट, पत्थर और लकड़ी के बनाते थे । नीचे सब लोग रहते थे, और ऊपर के हिस्से में नौकरों तथा गुलामों के रहने के लिए स्थान बना दिया करते थे, जिस का ज़ीना घर के बाहर से रहा करता था । मकान के दो भाग होते थे, एक स्त्रियों के लिए और दूसरा पुरुषों के लिए। बड़े बड़े घरों में बाहरी मार्ग से भीतर आने के लिए, एक गली रहा करती थी, जिसके सिरे पर ही एक द्वार होता था, उससे गली के भीतर जाने पर पुरुषों का एक खुला चौक मिलता था । इसी चौक में देवपूजा और अग्निपूजा हुआ करती थी । इस

चौक के आसपास पुरुषों के रहने के कमरे होते थे, जिनमें भोज देने की दालान, वाचनगृह, चित्रगृह, उठने-बैठने और सोने इत्यादि के कमरे रहा करते थे। चौक के भीतर आने के द्वार के सामने, आगे बढ़ कर, एक दूसरा द्वार होता था, इससे भीतर जाने पर स्त्रियों का चौक मिलता था। इसके आसपास स्त्रियों के भोजन और काम करने के कमरे हुआ करते थे। इनमें किवाड़े नहीं होते थे; सिर्फ पड़दे पड़े रहते थे, और मालिक के सुभीते के अनुसार ये पड़दे क़ीमती और कसोदेदार हुआ करते थे। यह साधारणतया धनवान् लोगों के घरों की बनावट हुई। इनके सिवाय; सर्वसाधारण और ग़रीब लोगों के घर भी क़रीब क़रीब इसी ढंग के बने होते थे। हां, उनमें कमरे थोड़े और उनकी बनावट सादी होती थी।

ग्रीक लोगों के घर में चूल्हे सादे होते थे, अथवा विलायती ढँग के, चिमनीदार, होते थे—यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता। हां, कमरे में गर्मी आने के लिए अंगारों से धधकती हुई अंगीठी वे अवश्य भीतर रक्खा करते थे। एथेंस के प्रायः अधिकांश बड़े बड़े लोगों के, हवा खाने के बंगले देहातों में हुआ करते थे। उन बँगलों के आसपास बाग़ होते थे, जिनमें मूर्तियां और दूसरे मनोरञ्जन के पदार्थ सजे रहा करते थे। बंगले के खास खास कमरों की ज़मीन पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े जमा कर सुशोभित करते थे, छतें पहले पहल सफेद रंग की रहती थीं, परन्तु फिर आगे चल कर दीवालों और छतों पर रंगीन चित्रकारी कराने की भी चाल पड़ी।

एथेंस नगर में मुसाफिरों के लिए बहुत से स्थान बने हुए

थे, जिनमें बाहर के व्यापारी तथा अन्य कामों के लिए आनेवाले लोग, भाड़े से रहा करते थे। कचहरी तथा सार्वजनिक जलसों के समय एथेंस में बाहर के बहुत से लोग आया करते थे, इससे भाड़े पर घर उठानेवाले लोगों को खूब लाभ हुआ करता था, अतएव भाड़े के घर बनाने में बहुत से लोग अपना धन लगाया करते थे।

एथेंस में दूसरे स्थानों के लोग भी बहुत से थे। इनमें से अधिकांश लोग प्रायः अन्य ग्रीक रियासतों के थे। इन लोगों को एथेंस शहर में घर बनाने या ज़मीन लेने की मनाई थी। इन बाहरी लोगों को एथेंस-निवासियों के साथ यदि कोई व्यापार इत्यादि करना होता, तो इनको किसी न किसी एथेंस निवासी की ज़मानत देनी पड़ती थी; और इसके लिए ज़मानतदार इनसे, इनके व्यापार के लाभ पर, कुछ सैकड़ा कर लिया करता था। सरकार भी ऐसे प्रत्येक बाहरी कुटुम्ब से प्रति वर्ष बारह ड्राक्मा कर लिया करती थी। इसके अतिरिक्त एथेंस के निवासियों के समान उनको एथेंस की स्थलसेना अथवा जलसेना में नौकरी भी करनी पड़ती थी; और सार्वजनिक त्योहारों के दिन कुछ बँधे हुए काम भी उनको करने पड़ते थे। उपर्युक्त कार्य यदि वे न करते थे तो एथेंस की ओर से उनकी रक्षा न होती थी; और उस दशा में वहां की सरकार उनको गुलाम के तौर पर बेच डालने का भी अधिकार रखती थी।

ग्रीक लोग बड़े शौकीन होते थे। जिन लोगों को सुभीता होता था वे बड़े ठाट-बाट से रहा करते थे। उनके भोजन के स्थान में मुलायम गद्दों के कोच रखे रहते थे; और उन पर आराम करते हुए वे भोजन किया करते थे! रोमन लोगों का

रात का भोजन भी आगे चल कर इसी प्रकार होने लगा। एथेंस के लोगों को मित्रमंडली एकत्र करने का बड़ा शौक था; और धनवान् लोगों के घर में सदैव बड़ी धूमधाम के साथ भोज हुआ करते थे। वर्षगांठ के उपलक्ष में बहुत बड़ा भोज देने की चाल थी। ऐसे अवसरों पर महमानों के बूट निकाल कर उनके हाथ-पैर धोने इत्यादि का कार्य गुलाम लोग किया करते थे।

ग्रीक लोगों का भोजन रोमन लोगों के समान बढ़िया न होता था। तथापि ग्रीस देश में पाकशास्त्र की बहुत कुछ उन्नति हो चुकी थी; भोज के अवसर पर लोग सीखे हुए रसोइये लाते थे। सिसिली टापू के रसोइये बहुत प्रसिद्ध थे। भोजन में प्रायः साधारण पदार्थों के अतिरिक्त मांस, मुर्गी के अंडे और मिठाई भी रहती थी। भोजन समाप्त होने के बाद हाथ मुँह धोने के लिए सब के सामने पानी लाकर दिया जाता था। ग्रीक लोग, आज-कल के यूरोपियन लोगों की भांति, कांटे-छुरी से भोजन नहीं करते थे; किन्तु हाथ से ही करते थे; और इस लिये हाथ धोये बिना उनका काम नहीं चलता था। हाथ मुँह धो लेने के बाद उनको अतर तथा सुगन्धित फूलों के गुच्छक और हार इत्यादि अर्पण किये जाते थे। इतना होने के बाद फिर मद्यपान की विधि हुआ करती थी। शराब का एक बड़ा लोटा भरकर पहले आगे लाते; और उसमें से कुछ भाग देवता के नैवेद्य के लिए पृथ्वी पर डालते थे; इसके बाद वह बर्तन प्रत्येक के सामने ले जाते; और अपनी अपनी खुशी के अनुसार लोग उससे मद्य, पीने के लिए, ले लेते थे। इस विधि के समाप्त होने

पर पैरों की ताल पर ईश्वरप्रार्थना हुआ करती थी।

रात के भोजन के बाद मद्यपान, गाना, नाच, खेल, इत्यादि यथेच्छ हुआ करते थे। मद्य के साथ साथ फल-फलहरी और मेवा भी रहती थी। मद्य में सदैव पानी और बर्फ डाल लेते थे। मद्यपान करते हुए, कुछ बातचीत करके, एक दूसरे के आरोग्य की आकांक्षा करने की भी चाल थी। एथेंस में शराब बहुत सस्ती थी, अतएव जो लोग बड़ा भोज देने की शक्ति न रखते थे वे अपने मित्रों को, कम से कम, मद्यपानोत्सव में तो अवश्य ही बुलाते थे। ऐसे उत्सवों में लोग बहुधा बड़े बड़े कोचों पर पड़ कर मद्यपान करते थे, और घर का मालिक उनके गले में पुष्पहार पहनाता था। इन अवसरों पर मनोरंजन के लिए गाने और नाचनेवाली स्त्रियां भाड़े पर बुलाई जाती थीं। सम्पूर्ण मनोरंजन का प्रबन्ध करने वाला एक संगीतवेत्ता होता था। जितना वह कहता उतनाही मद्यपान सब को करना पड़ता था। यह हाल था कि, "पियो, नहीं तो चले जाओ," अतएव इस मद्यपान के उत्सव में थोड़ा बहुत शोर गुल हुए बिना नहीं रहता था।

उत्सव में शामिल होनेवाले लोग अनेक प्रकार की क्रीड़ा करते थे। जैसे किसी अविवाहित महाशय को मद्य से भरा हुआ एक प्याला देते, और सामने एक छोटा सा बर्तन खाली रखते थे, और इसके बाद, दूर खड़े होकर, प्याले की शराब नीचे न गिरने देते हुए, उसी बर्तन में डालने के लिए उससे कहते थे। यह शराब डालते समय, अपनी प्रेमिका का नाम लेने को उससे कहा जाता था। इसके बाद यदि वह सब शराब बर्तन में ठीक गिरती; और बाहर बिलकुल न गिरती, तो यह

समझा जाता कि, उन दोनों का विवाह हो जायगा, और यदि शराब नीचे गिर पड़ती तो यह खयाल किया जाता कि, बस अब यह जोड़ी नहीं मिलेगी ! पहेलियां और कूट प्रश्न भी पूछे जाते थे। जिनका उत्तर ठीक ठीक मिलता था उनको मिठाई मिलती थी, और जिनका उत्तर ग़लत निकलता था उनको शराब और नमक का पानी पिलाया जाता था। ऐसी ऐसी बातों से वहां खूब आनन्द मचा रहता था। शतरंज के समान और भी कई खेल वहां प्रचलित थे।

ग्रीस देश में नवयुवक लोग सदैव वन भोजन किया करते थे। प्रत्येक नवयुवक अपना अपना भोजन साथ ले जाता, अथवा प्रत्येक के चन्दा दे देने पर, एक उनमें से सब प्रबन्ध कर लेता था। इस भांति अनेक लोग बाहर जाकर वन-भोजन किया करते थे।

एथेंस के बाज़ार में सब कुछ मिल जाया करता था। लोग स्वयं बाज़ार में जाकर सामान ख़रीद लाते थे। बाज़ार में रोटी भी मोल मिल जाती थी। धनवान लोग गेहूं की रोटी लेते थे, और गरीब लोग अन्य किसी सस्ते अनाज की रोटी ले लिया करते थे। रोटी बेचने का काम स्त्रियां किया करती थीं। बिक्री के समय उनमें खूब कोलाहल मचता था। मांसाहार में सुअर का मांस प्रायः अधिक चलता था। इसके अतिरिक्त सादी अथवा नमकीन मछली भी ग्रीक लोग अधिक उपयोग में लाते थे। सीताफल, लौकी, कोबी, तथा अन्य अनेक प्रकार की शाक-भाजी भी उस समय वहां प्रचलित थी। बाज़ार की देख-रेख रखनेवाले अधिकारी नियत थे, वे सब

प्रकार का बन्दोबस्त रखते थे, तथापि दूकानदार लोग खोटा व्यवहार किये बिना मानते नहीं थे।

ग्रीक लोगों में प्रतिदिन तीन बार भोजन हुआ करता था। सुबह के भोजन में, शराब में पकाई हुई पनेथी मिला करती थी। इसके बाद, कचहरियों की छुट्टी होने पर, दोपहर को कुछ स्वल्पाहार होता, और शाम को सूर्यास्त के बाद फिर खूब ठाटबाट के साथ भोजन हुआ करता था। थाली, तस्तरी, प्याले, इत्यादि बर्तन प्राय: मिट्टी के रहते थे, तथापि धनवान लोगों के घर में चादी, सोने और कांसे के बर्तन भी काम में लाये जाते थे। कुम्हारों की बहुत बडी बस्ती थी, और उनके लिए शहर का एक अच्छा भाग अलग ही कर दिया गया था। एथेन्स के मिट्टी के बर्तन सारे देश में बहुत प्रसिद्ध थे। बर्तनों का रग लाल, सफेद और पीला होता था, और कुछ ऊचे दर्जे के बर्तनों पर काला रोगन भी चढा होता था।

चद्दर, उढौने, कम्बल और अन्य अनेक प्रकार के कपडे एथेंस में खूब तैयार होते थे। शहर में कपडे का बाजार ही अलग था। कोष्टी प्राय. गुलाम हुआ करते थे। ग्रीस के जिन शहरों में व्यापार अधिक होता था वहा के सब कलाकौशल तथा कोष्टी लोगों के काम गुलामों से ही लिये जाते थे। उन गुलामों के मालिक बहुत बड़े बडे लोग रहते थ। प्रत्येक गुलाम को, प्रतिदिन कोई न कोई काम करके, कुछ निश्चित रक़म अपने मालिक के लिए ला देनी होती थी। इसके अतिरिक्त गुलामों के मालिक, अन्य लोगों के अथवा सरकार के काम करने के लिए, अपने गुलामों को भाड़े पर भी दे दिया करते थे।

जगह जगह गुलाम नीलाम भी हुआ करते थे। कारीगरी

का काम जाननेवाले गुलामों का मूल्य खूब मिलता था। प्रसिद्ध वक्ता डेमास्थनीज़ के पिता के यहां तलवार तैयार करनेवाले कारीगर बीस और घोड़ा गाड़ी तैयार करनेवाले बढ़ई बीस थे। यह एक बड़ी भारी ज़ायदाद समझी जाती थी। सरकार भी छोटे छोटे लड़के मोल ले कर, उनको शिक्षा देकर मुहर्रिर, चोपदार और अन्य छोटे छोटे नौकर तैयार करती थी। ये यद्यपि आगे चलकर गुलाम ही समझे जाते थे, तथापि इनका दर्जा और अधिकार बड़ा समझा जाता था। घर के सब नौकर गुलाम ही रहते थे। प्रत्येक कुटुम्ब में कुछ गुलाम मोल लिए हुए और कुछ घरही के जन्मे हुये होते थे। प्रत्येक गुलाम के लिए मालिक को सरकार में कुछ कर देना पड़ता था। कभी कभी ये मालिक अपने गुलामों को गुलामी से मुक्त करके स्वतंत्रता भी दे दिया करते थे। हां, इस प्रकार जो गुलाम स्वतंत्र हो जाता था उसको सरकार में उतना कर अवश्य देना पड़ता था, जितना कि उसका मालिक उसके लिए दिया करता था।

ग्रीस देश के प्रत्येक कुटुम्ब में बच्चों को सम्हालने के लिये पढ़ालिखा गुलाम रक्खा जाता था। उसे पेडागोगो, अर्थात् भैयाजू कहते थे। उसका मुख्य काम यही रहता था कि, वह बच्चों के आचरण की देख-रेख रक्खे, और उनको बुरी संगति में न पड़ने दे। वह सदैव लड़कों के साथ बाहर जाया करता था, और लड़के जब पाठशाला जाते, तब भी वह उनके साथ जाया करता था। पाठशाला में लड़कों को व्याकरण, गाना और व्यायाम सिखलाया जाता था।

पेरिक्लीज़ के समय में ग्रीस देश में अनेक ग्रन्थकार हुए;

जिनमें से सोफोक्लीज़ और एश्चिलस नामक दो नाटककार बहुत प्रसिद्ध हैं। मंडलियां बना कर नाटक करने की प्रणाली उस समय अधिक प्रचलित नहीं थी; किन्तु जो कवि लोग नाटक लिखते थे वे स्वयं ही रंगभूमि में आकर अपने नाटक कर दिखलाते थे। बड़े बड़े प्रसिद्ध ग्रंथकार रंगभूमि में आते रहते थे। ऐसे नाटकों का आरम्भ बेकस के उत्सव से हुआ। पहले-पहल एक ही मनुष्य, कुछ गानेवाले लोग साथ लेकर, आता; और पुरुषों के गान में कोई आख्यान गाकर सुनाता था। पेरिक्लीज़ के समय से दो तीन पात्रों के सम्भाषणपूर्ण आख्यान प्रचलित हुए। उनमें स्त्रियों का पार्ट पुरुष ही करते थे। इन खेलों को "दुःखान्त नाटक" कहने लगे। इसके बाद धीरे धीरे हास्यरसप्रधान खेल और तमाशे आरम्भ हुए। इन तमाशों में तत्कालीन रीति-रवाजों पर हास्यकारक आलोचना हुआ करती थी। इनकी उत्पत्ति बेकस के उत्सव में, मद्यपान के समारम्भ के कारण हुई। उस समारम्भ को कोमस (Comas) अर्थात् तमाशा करनेवाली आनन्दपूर्ण युवक-मंडली कहते थे। इस मंडली के लोग किसी न किसी का सोंग लेकर और बुरके पहन कर गाँव गाँव फिरा करते थे; और गान तथा नृत्य करते हुए सब लोगों को प्रसन्न किया करते थे। शोकयुक्त नाटक की गायक-मंडली को कोरस और आनन्दयुक्त नाटक की गायक-मंडली को कोमस कहते हैं।

स्त्रियां प्रायः नाटकों में न जाया करती थीं। उनका अधिकांश समय घर में ही व्यतीत हुआ करता था। उनको शिक्षा देकर विद्वान् बनाने की चाल न थी। तो भी कुछ स्त्रियां बड़ी विदुषी और सभ्य होती थीं। उत्सवों के अवसर में विद्वान

लोगों की परीक्षा होती थी, और उनको पारितोषिक दिया जाता था, ऐसे अवसरो पर स्त्रिया भी कभी कभी प्रकट होती थी, पेरिक्लीज की स्त्री आस्पेशिया स्वय बडी विदुषी थी। उस समय के बडे बडे तत्ववेत्ता और विद्वान् उसके घर में बने ही रहते थे। सब प्रकार के बुद्धिमान और सुशिक्षित लोग आस्पेशिया से मिलने का प्रयत्न करते थे।

पेरिक्लीस का जमाना और एथेंस की उन्नति—ये दोनों समकालीन हैं। पेरिक्लीज के समान पुरुष बहुत थोडे होते हैं। उसका अन्तिम समय दुःख में ही व्यतीत हुआ। उसके दो लडके प्लेग से मरे, और उस पर घूस खाने का अभियोग लगाया गया, तथा इसमें उसे बहुत कष्ट दिया गया। सन् ईसवी के ४२९ वर्ष पूर्व उसकी मृत्यु हुई। "मेरे कार्य से किसी एथेंसवासी को दुःख का अवसर नहीं आया"—ये उसके अन्तिम शब्द थे। ऐसा दावा भला कितने सत्ताधारी पुरुष कर सकते हैं ?

दसवां अध्याय।

पेलापोनेसियन युद्ध।

(ईसवी सन् के ४३१-४२१ वर्ष पूर्व तक)

एथेंस की सत्ता और सम्पत्ति के कारण उसकी जो भारी उन्नति हुई, उसके कारण स्पार्टा को अत्यन्त विषाद हुआ,

उसने कोई न कोई बहाना निकाल कर तीस वर्ष की सन्धि भंग कर दी; और डेल्फाय का शकुन उठा कर देवी से यह आश्वासन प्राप्त कर लिया कि, युद्ध का अन्तिम परिणाम उसी के अनुकूल होगा। इसके बाद उसने निम्नलिखित कारण दिखला कर एथेंस को युद्ध के लिए ललकारा।

बियोशिया की रियासत में प्लेटिया नामक एक शहर था, यह शहर एथेंस के अधिकार में था। प्लेटिया के अधिकांश लोगों को एथेंस का शासन पसन्द था। परन्तु कुछ थोड़े लोग उसके विरुद्ध थे। उन्होंने एथेंस की सत्ता न मान कर थीब्स के अधिकार में जाने के लिए एक गुप्त षड्यंत्र रचा। थीब्स की सरकार ने इस षड्यंत्र को बड़े आनन्द से सहायता दी। थीब्स के दो सेनापति कुछ फौज साथ लेकर एक रात को प्लेटिया शहर में आये। शहर के दरवाजे उनके लिए खुले रखने की पहले ही से तजवीज हो गई थी। वे मुख्य बाज़ार में आये। वहां षड्यंत्र वाले भी उनसे आ मिले। इसके बाद उन सब ने मिलकर बड़े ज़ोर से स्वतंत्रतादेवी का जयघोष किया। वे समझते थे कि, ऐसा करने से बहुत से लोग हममें आ मिलेंगे। पर ऐसा नहीं हुआ। किन्तु नगर-निवासी लोग सशस्त्र होकर बाहर निकले; और पहले शहर के दरवाज़े बन्द करके फिर उन्होंने थीबन लोगों पर हम्ला किया; और अनेक लोगों का वध करके, बाकी बचे हुए लोगों को कैद कर लिया। यह बात स्पार्टा को अच्छी नहीं लगी। स्पार्टा और थीब्स की बड़ी मित्रता थी, अतएव थीब्स का उक्त अपमान स्पार्टा ने अपना ही अपमान समझा। इस पर एथेंस की सरकार ने प्लेटिया के अधिकारियों को

यह सन्देशा भेजा कि, थीबन कैदियों के साथ अच्छा ही बर्ताव किया जाय, कि जिससे स्पार्टा के मन को कष्ट न हो। परन्तु यह सन्देशा पहुँचने के पहले ही प्लेटियन लोगों ने थीबन कैदियों का शिरच्छेद कर डाला। बस, इसी पर, सन् ईसवी के ४३१ वर्ष पूर्व, स्पार्टा और एथेंस में युद्ध छिड़ गया।

स्पार्टा और एथेंस, दोनों ग्रीस देश की मुख्य रियासतें थीं, अतएव अन्य सभी रियासतें इन्हीं दोनों में से किसी न किसी के अधीन रहती थीं। अतएव उनमें अधिकांश को इस युद्ध में शामिल होना पड़ा। स्पार्टा का भीतरी उद्देश्य यह था कि, एथेंस को दबाकर ग्रीस में हम अपना ही प्रभाव स्थापित कर दें। परन्तु अपना यह भीतरी उद्देश्य प्रकट न करते हुए उसने स्वतंत्रता के नाम पर पुकार की। उसने प्रकट किया कि, हम ग्रीक लोगों की स्वतंत्रता स्थिर रखने के लिए लड़ रहे हैं। इस कारण अवश्य ही स्पार्टा का पक्ष अधिकांश लोगों को पसन्द आया। इधर आर्किडेमस नामक स्पार्टा का एक राजा बड़ी भारी सेना लेकर एटिका प्रान्त में घुस पड़ा।

अब पेरिक्लीज़ ने समझा कि, स्पार्टन लोगों से सामना करके यदि प्रत्यक्ष युद्ध किया जायगा तो एथेंस टिक नहीं सकेगा; अतएव उसने यह आज्ञा निकाली कि, देहात के सब लोग अपने लड़के बच्चे और सम्पत्ति इत्यादि लेकर शहर में चले आवें। इधर अनेक लोगों के सुन्दर भवन और कीमती बाग़-बग़ीचे देहात में थे, सो अब उनको छोड़कर शहर में आना लोगों को बहुत कष्टदायी प्रतीत हुआ। तिस पर भी, बहुत जल्द सब लोग शहर में आगये; और बाहर के अपने सुन्दर भवन उन क्रूर शत्रुओं के लिए खुले छोड़ दिये!

हां, कितने ही लोगों ने अपने बँगले गिरा दिये, उनके घेरे तक मिट्टी में मिला दिये; और खेत भी बिना जुते हुए ही छोड़ दिये। उन्होंने अपने जानवर निकट के टापुओं में भेज दिए। इस प्रकार जब बाहर के सब लोग अपना माल-असबाब लेकर शहर में आ गये तब वहां बड़ी भीड़ होगई; लोगों को रहने के लिए स्थान ही न मिला; इस लिए कुछ लोग मन्दिरों में और कुछ कोट के बुर्जों में रहने लगे। जहां ज़रा सी जगह खाली देख पड़ी, कि वहीं लोग, जैसा बन पड़ा, घर बना कर अपना गुज़र करने लगे।

इसका परिणाम यह हुआ कि, अनेक धनवान् लोग भिखारी बन गये। सभी लोगों पर संकट आया। तथापि, हिम्मत न हारते हुए, सब ने युद्ध के लिये कमर कसी। बहुत जल्द एथेंस ने एक बड़ी सी जलसेना युद्ध के लिए तैयार की। एथीनियन लोगों का विशेष निर्भर जलसेना पर ही था—स्थलसेना का उनके लिए विशेष महत्व न था।

आर्किडेमस, एटिका का उपजाऊ और सुन्दर प्रदेश जलाते, लूटते और विध्वंस करते हुए, एथेंस से छै मील पर आ पहुँचा। एथेंस के लोगों की यह सम्मति थी कि, किले से एकदम बाहर निकल कर आर्किडेमस से युद्ध किया जाय; परन्तु पेरिक्लीज़ की सम्मति इससे भिन्न थी, अतएव उसने सिर्फ सवारों की छोटी छोटी टुकड़ियां भेज कर उन स्पार्टन टुकड़ियों पर हमला करवाने का सिलसिला जारी किया कि जो मुख्य फौज को छोड़ कर दूर दूर पर लूटमार के लिए जाया करती थीं। इस भांति बराबर छोटी छोटी लड़ाइयां होती रहीं; परन्तु सन्मुख खड़े होकर भारी युद्ध एक भी

नहीं हुआ। इसके बाद, जाड़े का मौसिम आ जाने के कारण स्पार्टन सेना स्वदेश लौट गई।

यह ध्यान में रखने योग्य है कि, युद्ध में मृत्यु पाये हुए वीरों की अंत्यविधि एथेन्स में बड़ी धूमधाम के साथ होती थी। एक बड़े मंडप के नीचे सब मृत देह एकत्र किये जाते थे; और वहां मृतक के सम्बन्धी, नातेदार, और मित्रगण इकट्ठे होते थे। फिर दस जातियों के लिए दस संदूक लाये जाते और एक एक संदूक में एक एक जाति के मृत देह रक्खे जाते थे। इसके बाद वे सब संदूक गाड़ी पर लाद दिये जाते थे; और बड़े समारंभ के साथ उनको स्मशान ले जाते थे। मृतक के नातेदार सब के आगे चलते और उनके पीछे शहर के प्रसिद्ध पुरुषों का समूह चलता था। स्मशान में अन्त्यविधि करते समय एक वक्ता मृतक के गुणों का वर्णन करता था। पेरिक्लीज़ ने भी ऐसा भाषण किया था। मृतक के बच्चों का पालन-पोषण, उनके बालिग़ होने तक, सरकार करती थी; और बालिग़ होने पर उन्हें एक एक ज़िरह-बख्तर पारितोषिक देकर उनका सन्मान किया जाता था।

दूसरे वर्ष स्पार्टन सेना ने फिर एटिका प्रान्त पर चढ़ाई की। उसी वर्ष एथेन्स में प्लेग बड़े ज़ोर-शोर से फैला; और बाहर भी उसका बड़ा प्रकोप रहा। इस विपत्ति में पड़ कर एथीनियन सरकार ने स्पार्टा से सन्धि के लिए बातचीत शुरू की; परन्तु उसने सन्धि करना स्वीकार न किया। आर्कि-डेमस की सेना इधर एटिका प्रान्त में धूम मचा रही थी, उधर एथेंस की जहज़ी सेना पेलापोनेसस प्रान्त पर आक्रमण करके उसका बदला चुका रही थी।

युद्ध का तीसरा वर्ष आरम्भ होते ही पेरिक्लीज मर गया। पेरिक्लीज बडा बुद्धिमान और चतुर था। अतएव उसकी मृत्यु से एथेंस की बड़ी हानि हुई। उसके सदृश राज्यप्रबन्ध करने-वाला दूसरा पुरुष उस समय एथेन्स में कोई न था। इधर युद्ध सारे ग्रीस देश में फैलता ही जाता था। दोनों दलों में खूब जोश चढा हुआ था, और दोनों ही ने एक दूसरे के साथ क्रूरता की हद कर दी थी। जो जिसके हाथ मे पड जाता उसी को वह तलवार से काट डालता या गुलाम बना कर बेच देता था। स्पार्टन सेना ने जब प्लेटिया प्रान्त पर अधिकार कर लिया तब उस प्रान्त के निवासियों के साथ उसने उपर्युक्त प्रकार का ही व्यवहार किया। इसके सिवा, वह सारा प्रान्त उसने थीबन लोगों को खेती करने के लिए दे दिया। अस्तु।

यह अच्छा अवसर समझ कर एथेन्स की अनेक रियासतों ने बलवा मचा दिया, परन्तु बडी क्रूरता के साथ उनको दण्ड दिया गया। किसी की क़िलेबन्दी गिरवा दी, किसी के जहाज जप्त कर लिये और किसी की राज्यपद्धति ही मिटा दी। अनेक छोटी छोटी जातियों के ग्रीक लोग तो जमात से ही खारिज कर दिये गये।

एथेन्स में इस बार सात वर्ष तक प्लेग बना रहा। अन्त में दोनों पक्ष लडते लडते त्रस्त हो गये। अतएव विवश होकर पचास वर्ष के लिए उन्होंने सधि कर ली (सन् ईसवी के ४२१ वर्ष पूर्व) सधि की मुख्य शर्त यह थी कि दोनों पक्ष एक दूसरे के जीते हुए प्रदेश वापस कर दें, और एक दूसरे के कैदियो को छोड दें। यह सन्धि निसियास की सन्धि

कहलाती है। निसियास एथेन्स का सेनापति था। इसी ने यह संधि की थी।

इस तरह इस क्रूर-युद्ध का अन्त हुआ। सारा देश नष्ट-प्राय हो गया; लोग दरिद्री हो गये; न जाने कितना रक्तपात हुआ; परन्तु लाभ किसी पक्ष को कुछ भी न हुआ!

ग्यारहवां अध्याय।

आल्सिबियाडीज।

इस समय आल्सिबियाडीज नामक एक विलक्षण पुरुष एथेंस में था। वह उच्च कुल का, धनवान और प्रबल महत्वाकांक्षी था। वह छुटपन में लड़कों की टोलियां बना कर, आप उनका नायक बनता था और लड़ाई-दंगे किया करता था। वह न्यायान्याय अथवा उचित-अनुचित की ओर बिलकुल ही ध्यान न देता था। उच्च कुल और अपार सम्पत्ति के कारण उसके पास बहुतसे मुंहलगे एकत्र हो गये थे, और उसके प्रत्येक कार्य की प्रशंसा किया करते थे। इससे अपनी करतूतों की भलाई या बुराई जानने की शक्ति उसमें नहीं रही थी। वह बड़ा स्वार्थी था। उसमें नैतिक धैर्य का लेश-मात्र भी न था। पेरिक्लीज के साथ उसका कुछ नाता था। निसियास की संधि के समय उसकी अवस्था तीस वर्ष की थी, और एथेंस में वह एक मुख्य पुरुष गिना जाता था।

साक्रेटीस के साथ उसकी मित्रता थी। यदि वह साक्रेटीस के उपदेशानुसार चला होता तो पेरिक्लीज़ के समान वह भी चतुर राजनीतिज्ञ बनता। अवश्य ही उसके हृदय में साक्रेटीस के प्रति बड़ी पूज्यबुद्धि थी, और वह उसके उपदेशों के महत्व को स्वीकार भी करता था, पर उसके मुँहलगे मित्रों के कारण उस उपदेश का कुछ असर उसके हृदय पर न होने पाता था। यहां तक कि, धीरे धीरे वह साक्रेटीस से विरक्त होगया, और उससे मिलने भी न लगा!

सुन्दर वस्त्रों और ऐश-आराम के लिए आल्सिबियाडीज़ एथेन्स में बहुत प्रसिद्ध होगया। वहां के जूते, जो सब से अच्छे समझे जाते थे, उनको आल्सिबियाडीज़ का नाम मिला था! पीठ की ओर ज़मीन पर लटकता हुआ लम्बा सा दुपट्टा डालने की चाल उसी की चलाई हुई थी। उसने ग्रीस के एक अत्यन्त धनवान् घराने की लड़की के साथ विवाह किया था, जिससे उसकी सम्पत्ति और उसका प्रभाव और अधिक बढ़ गया था। आलिंपियन खेल की बाज़ी में उसकी तीन बार जीत हुई, जिससे उसका बड़ा वंश हुआ। उस अवसर पर उसने सब दर्शकों को एक बड़ा भोज भी दिया।

भोज इत्यादि में आल्सिबियाडीज़ के अधिक व्यय करने का हेतु यह न था कि, लोग उससे प्रसन्न रहें, किन्तु वह इन उपायों द्वारा केवल अपना बड़प्पन दिखाना चाहता था। फिर भी वह लोकप्रिय था, पर दुस्साहसी होने के कारण उसने इस लोकप्रियता का सदुपयोग न किया। सरकारी कानून और सामाजिक नियमों की वह बिलकुल परवा न करता था। उसके व्यवहार से लोगों को यह जान पड़ता था

कि, वह किसी को डरता नहीं, और समझता है कि, मेरे अपराध करने पर मुझे दण्ड देनेवाला कोई नहीं ।

निसियास की सन्धि आल्सिबियाडीज़ को पसन्द न थी। उसने सन्धि भंग करने के लिए नाना प्रकार के उपाय किये । सच पूछिये तो संधि का भंग दोनों पक्षों ने किया, पर विशेष कर एथेंसवालों ने सन्धि की शर्तों का पालन नहीं किया । उन्होंने स्पार्टा के मित्र शहरों पर चढ़ाई करके उन्हें अपने अधिकार में लाने का क्रम जारी किया । अन्त में एथेन्स ने सिसली द्वीप पर अधिकार करने के लिए जहाजी बेड़ा भेजने की तैयारी की। सिसली के प्रायः समस्त बड़े बड़े शहर स्पार्टा के बसाये हुए थे । अतएव एथेंस का अधिकार वह उन पर नहीं सहन कर सकता था। निसियास इस चढ़ाई के विरुद्ध था। पर आल्सिबियाडीज़ के विशेष आग्रह के कारण सिसिली पर चढ़ाई करने का निश्चय हो गया । और युद्ध की तैयारी होने लगी । परम्परा के अनुसार डेल्फाय की देवी का शकुन एथेंस ने मँगाया, पर उसे वह नहीं मिला। लेकिन एथीनियन लोग अब उक्त देवी की वाणी पर अधिक विश्वास न रखते थे। युद्ध के प्रारम्भ से, प्रायः सभी भविष्य स्पार्टा के अनुकूल होने के कारण, वे डेल्फ़ाय से चिढ़ गये थे। सच पूछिये तो इस समय से राज्यकार्यों में देवी की भविष्यद्वाणी का महत्व ही नष्ट होने लगा । हां, ग्रीस देश जिस समय रोमन लोगों ने जीता उस समय तक, और इसके आगे भी अनेक लोग निजी तौर पर देवी का शकुन प्राप्त करने को जाते रहे, परन्तु सार्वजनिक कार्यों में अवश्य ही अब उसका उतना महत्व न रहा ।

सिसली पर चढ़ाई करने के लिए बेडा तैयार ही था, कि इतने में आल्सिबियाडीज पर कुछ भयकर अपराध लगाये गये। हर्मीज या मर्क्युरी नामक एक देवता ग्रीक लोगों में पूजा जाता था। उसकी ऊची ऊची प्रतिमाए मन्दिरों, व्यायाम-शालाओं, न्यायालयों और पाठशालाओं के सामने शिलासनों पर रक्खी रहती थीं। एक दिन सबेरे उठ कर लोग क्या देखते हैं कि, एथेन्स में उक्त देवता की जितनी प्रतिमाए थीं सब चकनाचूर होकर पड़ी हैं। इस घटना से सारे शहर में सनसनी फैल गई। इस दुष्ट कार्य के करनेवालों का खूब पता लगाया गया, बहुतेरे जेल गये, बहुतेरों को फांसी हुई, पर असली अपराधी का पता न लगा। आल्सिबियाडीज़ पर भी यह अपराध लगाया गया। इसके सिवा, एक गुलाम ने उस पर अनेक धर्मविधियों के उच्छेदन करने का भयकर अपराध खुल्लमखुल्ला लगाया। इस पर आल्सिबियाडीज ने प्राथना की कि, मेरा न्याय होना चाहिये। पर सिसली पर चढाई करने की सारी तैयारी इस समय हो चुकी थी, अत-एव यह निश्चय हुआ कि, आल्सिबियाडीज जब तक वापस न आ जावे, उसके सब मुकदमे मुलतवी रखे जायें।

जहाजों का ऐसा भारी बेड़ा ग्रीस देश स कभी बाहर न निकला था। बेडे की विदाई के लिए सब एथेंस-निवासी समुद्र-तट पर उपस्थित हुए। प्रत्येक जहाज पर सोने-चांदी के बर्तनों में देवताओं को नैवेद्य अर्पण किया गया, और उनसे भक्तिपूर्वक प्रार्थना की गई कि बेडा विजय प्राप्त करके सुरक्षित लौट आये। पर एथेन्स की यह यात्रा फलप्रद न हुई। उसे आशा थी कि, इटली और सिसली के अनेक शहर सहायता

पहुँचावेंगे; पर इसके विरुद्ध, उक्त शहरों के लोगों ने, यहाँ तक प्रबन्ध किया कि, एथीनियन लोग शहर के भीतर घुसने तक न पावें; और उन्हें खाने-पीने के लिए रसद-पानी कहीं से न मिले।

सिसली का कार्य सफल होते न देख एथेंस के अधिकारियों ने आल्सिबियाडीज़ को वापस बुलाने के लिए एक सरकारी जहाज भेजा। आल्सिबियाडीज़ पर, अन्य अपराधों के अतिरिक्त एक अपराध यह भी लगाया गया था कि, वह एथेन्स में राज्यक्रांति करने की चेष्टा कर रहा है। इसी सन्देह में उसके कई साथी जेल जा चुके थे; और कई मृत्युदण्ड पा चुके थे। बहुतेरे तो मारे डर के एथेन्स से भाग गये थे। आल्सिबियाडीज़ यह सब बातें सुन चुका था। उसने समझ लिया कि, एथेंस जाने पर मुझे भी मृत्युदण्ड अवश्य मिलेगा, अतएव वह भाग कर स्पार्टा चला गया। वहां देशद्रोह करके उसने शत्रु को एथेंस के विरुद्ध बहुत सी सहायता दी। इधर एथेंस में उसके लिए मृत्यु-दंड सुना दिया गया, और उसकी सारी जायदाद ज़ब्त कर ली गई। सरकार ने इस हेतु से, कि इस पापी को देवताओं का भी आश्रय न मिले, धर्मगुरुओं को आज्ञा दी कि, वे उसे भ्रष्ट समझें। यह दण्ड वहां उस समय मृत्यु से भी अधिक कठोर समझा जाता था। धर्मगुरुओं ने यज्ञ-याग करके, लाल निशान हाथ में लेकर, आल्सिबियाडीज़ को शाप दिया कि, "तू भ्रष्ट हो!"

आल्सिबियाडीज़ के स्पार्टा चले जाने पर निसियास और लेमार्कस को जलसेना का अधिकार दिया गया। इनके सेनापति होते ही एथेंस को बहुत कुछ विजय प्राप्त होने लगा।

एथेंस ने सायरात्यूज़ को जीतने के लिए शहर को चारों ओर से घेर लिया। सायरात्यूज़ के निवासियों ने स्पार्टा और कारिंथ से मदद मांगने के लिए अपने वकील भेजे। इधर एथेंस ने भी कार्थेज से सहायता प्राप्त करने के लिए अपने प्रतिनिधि भेजे। स्पार्टा में आलिसबियाडीज़ मौजूद ही था। उसकी सलाह से स्पार्टा ने शीघ्रतापूर्वक सेना एकत्र करके गिलिपस की अधीनता में उसे सिसली भेज दिया। रास्ते में कारिंथ की सेना भी उससे मिल गई। इधर सायरात्यूज़ में एथेंस से और भी सहायक सेना आ पहुँची थी; और वह शहर एथेन्स की आधीनता में जाने ही वाला था, कि, इतने में गिलिपस सेना-सहित आ पहुँचा; और सायरात्यूज़ की रक्षा हो गई।

उधर ग्रीस देश में स्पार्टन सेना ने एटिका प्रान्त में प्रवेश किया; और एथेन्स से पन्द्रह मील पर; एक ऊंची टेकड़ी पर, डिसीलिया में, छावनी डाल दी। स्पार्टा का एक राजा एजिस प्रबन्ध के लिए स्वयं वहां आ गया। इससे एथेंस बिलकुल घिर गया। शहर के सब निवासियों को रात-दिन पहरा देते हुए बैठे रहना पड़ता था। बाहर से जो अन्न इत्यादि सामान एथेन्स में आता था, स्पार्टन उसे रास्ते में ही लूट लेते थे। अतएव एथेंस के लोग भूखों मरने लगे। हजारों असन्तुष्ट गुलाम इत्यादि लोग स्पार्टनों से जा मिले। इस प्रकार एथेन्स पर पूरी विपत्ति आई।

फिर भी एथेंस का सारा ध्यान सिसली के विजय की ओर था। एथेन्स की सरकार ने यूरिमिडोन और डेमास्थेनीस नामक दो सेनापतियों को और भी सहायक सेना देकर

सिसली भेजा। वहां स्थल और जल पर अनक युद्ध हुए। अधिकांश लड़ाइयों में स्पार्टनों की सहायता से सायराक्यूज़ की ही जीत हुई। अन्त में एथीनियन लोग पूर्ण रूप से पराजित होगये। उनके सब जहाज़ शत्रुओं ने छीन लिये। जो सैनिक समरांगण से बच गये वे शत्रुओं के हाथ पड़ कर क़ैद होगये। इनमें निसियास और डेमास्थनीज़ भी थे। इन दोनों को शत्रुओं ने मार डाला, और बाकी लोगों में से कुछ तो कैदखाने में ही मर गये और कुछ गुलामों की तरह भिन्न भिन्न स्थानों पर बेच डाले गये।

इस पराजय का समाचार जब एथेंस में पहुँचा तब सारे शहर में हाहाकार मच गया। एथेंस का सब सहारा जाता रहा। खज़ाने में कुछ न रहा; तट की रक्षा करने के हेतु बंदर स्थान में जहाज न रहे, एथेंस बड़े संकट में पड़ा। फिर भी वहां के लोग निराश होकर चुप न बैठे। उन्होंने फिर से नवीन जहाज बनवाने प्रारम्भ किये, और देश की फिर से पूर्ण उन्नति होने तक जलसों और तमाशों आदि में पैसा खर्च करना बन्द कर दिया। ऐसे कठिन अवसरों पर सारे नगरवासियों की सभा करने की चाल थी, वह इस समय की गई, और लोगों को सब हाल अच्छी तरह समझाया गया। इससे स्वदेशाभिमानी लोग सरकार की सहायता करने को तैयार हुए, और उन्होंने बात की बात में बहुत सा धन एकत्र कर दिया, जहाज और हथियार तैयार किये, और नवीन जलसेना स्थापित करने की सब तैयारी हुई।

इसी समय के लगभग स्पार्टा में आलिसबियाडीज़ से बिगाड़ होगया। आलिसबियाडीज़ स्पार्टा के राजा एजिस से

लड कर एशिया-मायनर के ईरानी सूबेदार टिसाफर्निस के पास चला गया। वहां उन दोनों की बहुत जल्द अच्छी मित्रता होगई। आल्सिबियाडीज़ ने वहीं से एथेंस की सरकार को यह सदेशा भेजा कि, "यदि आप मुझे फिर से हाथ में लेंगे तो मैं एथेन्स वापस आकर टिसाफर्नीस की सहायता प्राप्त करा दूगा।" इस सूचना पर एथेन्स की कौंसिल में बडा वाद-विवाद हुआ, परन्तु अन्त में यही निश्चय हुआ कि, आल्सिबियाडीज़ की सजा रद् की जाय, और उसे वापस बुला लिया जाय। परन्तु इतने मे ईरानी सूबेदार ने एथेन्स को सहायता देने से इन्कार किया। अतएव, आल्सि-बियाडीज को और कुछ दिनो तक बाहर ही रहना पडा। इसी बीच में एथेन्स में राज्यक्रान्ति होगई। प्रजासत्ताक की जगह अब अल्पसत्ताक राज्यव्यवस्था प्रचलित हुई। उस समय आल्सिबियाडीज़ वापस बुलाया गया। परन्तु नवीन राज्यव्यवस्था लोगों को पसन्द न आई। उन्होंने बलवा करके फिर से प्रजासत्ताक मडली स्थापित की। बहुत से नये कानून बनाये गये, और पेरिक्लीज़ के समय में जो राज्यव्यवस्था थी, वही फिर प्रचलित हुई। इस विप्लव में विरुद्ध पक्ष के लोग एथेन्स छोड़ कर स्पार्टनों से डिसीलिया में जा मिले। (ईसवी सन् के ४११ वर्ष पहले।)

इसके बाद आल्सिबियाडीज़ फिर जलसेना का अधिकारी नियुक्त हुआ और उसने स्पार्टनों स इस वीरता के साथ युद्ध किया कि, शीघ्रही पहले की भांति फिर एथेन्स का अधिकार बढ गया। प्रथम मृत्युदण्ड से दण्डित, परन्तु अब विजयी, आल्सि-बियाडीज़ ने शत्रुओं को पराजित करके बडी धूमधाम के साथ

एथेंस शहर में प्रवेश किया। जबकि उसकी सवारी मार्ग में चली जा रही थी, लोगों ने उसका खूब जयजयकार किया। उसके मित्रों ने उसे बड़े समारोह के साथ सभागृह में ला बिठाया, और पहले के सब अपराधों से उसे विधिपूर्वक मुक्त किया। उसने राष्ट्र की उत्तम सेवा की, अतएव उसे सुवर्ण-मुकुट पारितोषिक में दिया गया, और उसकी जायदाद, जो जब्त कर ली गई थी, वापस दे दी गई। इसके सिवाय, वह समस्त जल और स्थल सेना का मुख्य सेनापति बनाया गया।

आल्सिबियाडीज के हाथ में जो यह सत्ता आई, उसका पहले-पहल उसने अच्छा ही उपयोग किया, अतएव लोग उस पर विशेष श्रद्धा और भक्ति रखने लगे। डिसिलिया नामक स्थान पर स्पार्टनों की छावनी होजाने के कारण एथेन्स का एक बड़ा उत्सव बद हो गया था। क्योंकि उस उत्सव में एथेन्स-निवासी अपनी स्त्रियों के साथ बड़ी धूमधाम से एथेन्स से इल्यूसिस जाते थे। इस उत्सव को छोड कर अन्य किसी उत्सव में स्त्रियाँ शामिल नहीं होती थीं। पर रास्ते में शत्रुओं की छावनी होने के कारण स्त्रियों को साथ ले जाने का सुभीता न रहा था, अतएव यह उत्सव बन्द हो गया था। पर आल्सिबियाडीज ने अपनी सेना की सहायता से यह उत्सव एक बार फिर जारी करा दिया, अतएव लोग उसकी पहले की बातों को भूल कर उससे बहुत प्रसन्न हुए। परन्तु बहुत जल्द फिर आल्सिबियाडीज के ऊपर से लोगों की श्रद्धा हट गई। एक के बाद एक, बराबर उसे अपजय प्राप्त होते गये। वह सेनापति के पद से च्युत कर दिया गया। अतएव हेले-स्पार्ट के किनारे, जहां उसकी कुछ ज़मीदारी थी, वह कुछ

वर्षों तक जाकर रहा। इसके बाद वह एशिया को चला गया, जहां उसका खून हो गया। (ई० स० के ४०४ वर्ष पहले)

बारहवां अध्याय।

एथेन्स की सत्ता का ह्रास।
(ई० स० के ४०७-३६६ वर्ष पहले।)

एथेन्स और स्पार्टा में अभी युद्ध होही रहा था। दोनों पक्षों ने क्रूरता की हद कर दी थी। स्पार्टा का सहायक ईरान का राजा सायरस था। यह राजा अतुल द्रव्यशाली था। अतएव उसे सिपाहियों और खलासियों को वेतन देने में कोई असुविधा न होती थी। प्राचीन काल में ग्रीक लोग बिना वेतन लिये सरकारी नौकरी करते थे। परन्तु अब वह हाल न था। अब वे निश्चित वेतन मिले बिना नौकरी नहीं करते थे।

आल्सिबियाडीज के चले जाने पर केनन (Canon) नामक एक पुरुष एथेन्स का राज्यकार्य करने के लिए नियुक्त हुआ। यह मनुष्य उच्चवशीय और चतुर था। इसने अन्य नौ वीर पुरुषों को अपनी सहायता के लिए संग में लेकर जहाजी युद्ध द्वारा शत्रुओं को खूब ही पराजित किया। इस समय एक क्षुद्र कारणवश एथेन्स सरकार ने बड़ी गलती की, नहीं तो

सदा के लिए स्पार्टा का नाश हो जाता। ऊपर लिखी हुई लड़ाई एशिया के किनारे आर्गिन्यूज़ी नामक तीन द्वीपों में हुई ; और स्पार्टा का जहाजी बेड़ा समूल विध्वंस हो गया। युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ था, कि एथेन्स के कुछ जहाज नष्ट हो गये, जिससे कुछ लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। अतएव सेना के दस अधिकारियों पर यह अपराध लगाया गया कि उन्होंने अपने देशभाइयों के प्राण बचाने की परवा न की। उन्होंने अपनी सफाई में कहा कि, युद्ध के पश्चात् बड़े ज़ोर से आंधी आ गई, और उनकी आज्ञाओं का भली भाँति पालन न हुआ, इसी कारण यह दुर्घटना हुई ; पर लोगों को इससे संतोष न हुआ। कौंसिल ने निर्णय किया कि आठ सेनापतियों को मृत्यु-दण्ड दिया जाय। तदनुसार छै सेनापति तो मार डाले गये ; और दो भाग निकले। इस तरह ऐन मौके पर आठ उत्कृष्ट वीरों का नाश हो गया, जिससे एथेंस की बड़ी हानि हुई। एथेंस में दलबन्दी थी। उसी का यह परिणाम है। एथेंस के राज्यकार्य में हमेशा से दलबंदियां चली आती थीं।

सायरस की सहायता से स्पार्टनों ने अपना जहाजी बेड़ा फिर तैयार किया, और उसका मुख्य अधिकारी लिसांडर नामक एक मनुष्य नियत किया गया। उसने हेलेस्पांट जाकर लांप्सेकस नामक शहर पर एकदम धावा बोल दिया ; और उसे अपने अधिकार में कर लिया। यह शहर एशिया माइ-नर में था, और एथेंस से मैत्री रखता था। लिसांडर ने जहां अपने जहाज़ों का लंगर डाला था उसी के सामने, किले में, आलिसबियाडीज़ रहता था। वह दोनों पक्षों की गति-विधि

ध्यानपूर्वक अवलोकन कर रहा था, उसने यह देखकर, कि लिसांडर एथीनियन बेडे पर धावा मारने का अवसर ताक रहा है, तट पर जाकर बेडे के अधिकारी से कहा कि, "तुम अपने सिपाहियों को जहाज पर हमेशा तैयार रक्खो और उन्हें जहाज छोड कर बाहर न जाने दो।" किन्तु, उक्त अधिकारी ने प्रमादवश आलिसबियाडीज की इस उत्तम सम्मति पर ध्यान न दिया, जिसका फल उसे तुरन्त ही भोगना पडा। एक दिन, जब कि एथीनियन बेड़े के अधिकांश सिपाही बाहर चले गए थे, लिसांडर ने सुअवसर पाकर एकदम चढाई कर दी, और अनेक जहाज अपने अधिकार में कर लिये। कोनन आठ जहाज लेकर सायप्रस को भाग गया। लगभग १७० जहाज लिसांडर के हाथ लगे। जिससे उसका बल बहुत बढ़ गया। ४००० एथीनियनों को, जिन्हें उसने कैद कर लिया था, बडी क्रूरता के साथ मरवा डाला। लिसांडर की सेना अब बहुत दृढ होगई थी। उसने एथेंस के अनेक प्रदेश, शहर और द्वीप अपने अधिकार में कर लिये। अन्त में स्वयं एथेंस को ही जल और स्थल दोनों ओर से स्पार्टनों ने घेर लिया।

एथेंस-निवासी स्वप्न में भी न जानते थे कि इस प्रकार हमें चारों ओर से घिर जाना पडेगा। अतएव, वे बड़े घबडाये। शहर में बाहर से अनाज का आना बद होगया, जिससे लोग भूखों मरने लगे। तब एथेन्स ने संधि के लिए सन्देशा भेजा। इस पर स्पार्टा ने कहा —एथेंस की किलेबदी गिरा दी जाय, बारह जहाज छोड कर शेष जहाज हमें दे दिये जाय, देश-निकाले का दण्ड पाये हुए मनुष्य फिर से वापस बुला लिये जांय और एथेंस हमारी ताबेदारी कुबूल करे, तभी सधि

होगी, अन्यथा नहीं। ये शर्तें सुन कर एथेंस-निवासी बड़े संकट में पड़े, पर करते क्या! हार मान कर इन्हीं शर्तों पर उन्हें संधि करनी पड़ी। इस तरह यह युद्ध समाप्त हुआ। (सन् ईसवी के ४०४ वर्ष पूर्व)।

संधि होते ही लिसांडर एथेंस की किलेबंदी गिराने लगा। निरुपयोगी जहाजों को उसने जलवा दिया। देश-निकाले का दण्ड पाये हुए लोगों को वापस बुलवा भेजा। एथेंस की इस दुर्दशा को स्पार्टन, आदि विदेशी लोग बड़े कौतुक से देखते थे। लिसांडर अपने मस्तक पर फूलों की माला धारण किये हुए बैंड की ताल पर किलेबंदी गिरवा रहा था। उसके इस कार्य्य से एथीनियन लोगों का हृदय कितना दुखित हुआ होगा! पर लिसांडर ने इससे भी बढ़ कर अनर्थ किये। उसने पहले की राज्यपद्धति को तोड़ कर तीस मनुष्यों की एक कौंसिल बनाई। इस कौंसिल ने एथेंस में ऐसे अत्याचार किये कि जिनसे उसे "तीस जुल्म कार्यकर्त्ताओं की कौंसिल" कहते हैं। इन तीस में कुछ वे लोग भी थे जो राजविद्रोह के अपराध में देशनिकाले का दण्ड पाये हुए थे, पर अब वापस बुला लिये गये थे। उन्होंने यह अच्छा मौका देख कर अपने पहले के शत्रुओं से मनमाना बदला लिया। लिसांडर-द्वारा नियुक्त कौंसिल ने आठ मास तक एथेन्स का शासन किया, पर इतनी ही अल्प अवधि में उसने प्रायः सब प्रतिष्ठित और धनवान् व्यक्तियों की दुर्दशा कर डाली। बहुतेरे मार डाले गये, और बहुतेरे जेल में ठूस दिये गये। तहकीकात से कोई मतलब न था। झूठे अपराध लगाये जाते थे, और देशनिकाले का दण्ड देकर उनकी सारी सम्पत्ति उपरोक्त तीसों अधि-

की राज्यव्यवस्था करना चाहता था; पर स्पार्टा के राजा पाज़ेनियस को यह बात पसंद न आई। वह लिसांडर के पीछे तुरन्त दूसरी फौज लेकर एथेन्स जा पहुँचा, और लोगों को दिलासा देकर, युद्ध के पहले एथेन्स में जो राज्यपद्धति प्रचलित थी, वही फिर से जारी कर दी।

इस तरह एथेन्स में फिर शांति विराजने लगी, तथापि उसका जो वैभव पहले था वह उसे फिर कभी प्राप्त न हुआ। उसके अधिकार से अनेक प्रान्तों के निकल जाने से उसकी आय बहुत कम होगई। कर के रूप में जो वार्षिक आमदनी होती थी वह भी बंद होगई। वहां के न्यायालयों में बाहर के हजारों मनुष्य, सदा मामलों-मुकदमों के लिए उपस्थित रहते थे, उनका आना-जाना भी बन्द होगया। शहर की रौनक़ कम होगई। आबादी घट गई। पहले घर किराये पर देकर, लोग जो अच्छी आमदनी कर लेते थे, वह भी न रही। बाज़ार उजड़ गया। विदेशों से होनेवाला व्यापार युद्ध के कारण डूब गया। विदेशों के धनवान व्यापारी, जो एथेन्स में आकर रहे थे, इस डर से देश छोड़ कर चले गये, कि कहीं सरकार हमारी दौलत न छीन लेवे। पैसे की बड़ी तंगी होने लगी। सार्वजनिक उत्सव बंद होगये। बड़े बड़े घर, विशाल इमारतें, यहां तक कि सारा नगर, मरम्मत न होने के कारण, बिलकुल उजड़ गया।

ग्रीस देश का प्रसिद्ध साधु और तत्त्वज्ञ विद्वान् साक्रेटीस इसी समय होगया है। धर्म के विरुद्ध लोगों को उपदेश देने के कारण उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया। यद्यपि वह बुड्ढा होगया था; तथापि दण्ड से बचने के लिए वह भाग सकता था; पर

उसने ऐसा नहीं किया। उसने कहा—"मुझे अब शीघ्र मरना ही है, तो फिर क्यों न यहीं रह कर मरूं।" जेल में जाकर उसके मित्रगण उससे भेंट करते थे। जब उसे विष का प्याला पीने को दिया गया, तब उसके अनेक मित्र उसके निकट बैठे हुए थे। जैसे प्यास लगने पर कोई पानी पीता है, उसी तरह शांतिपूर्वक उसने उस विष के प्याले को पी लिया; और जब तक वह बोलने में समर्थ रहा, अपने मित्रों से बात-चीत करता रहा। साक्रेटीस ने स्वयं कोई ग्रंथ नहीं लिखा; पर प्लेटो और ज़ेनोफेन नामक उसके दो शिष्यों ने, अपने ग्रंथों में उसके तर्क, वाद-विवाद और संभाषण आदि लिख रक्खे हैं।

साक्रेटीस बड़ा तत्त्वज्ञानी था। उसने लोगों को यह सिखला दिया कि, स्वयं अपनी बुद्धि से किसी बात का विचार किस तरह किया जाता है; और सत्य किस तरह ढूंढ़ कर निकाल लिया जाता है। उसने इसके लिए कोई पाठ-शाला नहीं खोल रक्खी थी, प्रत्युत जब कोई पुरुष उससे भेंट करने आता तब वह उससे नाना प्रकार के प्रश्न और संभाषण करके उसे सत्य और नीति की शिक्षा दे देता था। उसका कथन था कि, हम समझते हैं कि हमें बहुत सी बातें ज्ञात हैं; पर सच पूछिये तो हमें उनका यथार्थ ज्ञान लेश मात्र भी नहीं है। हम केवल शब्दों के आडम्बर में भूले रहते हैं। उदाहरणार्थ—राजनीतिज्ञ किसे कहते हैं? उत्तर—राजनीतिज्ञ पेरिक्लीज़ के समान पुरुष को कहते हैं। पर पेरिक्लीज़ चूंकि उच्च था, वक्ता था, इसलिए क्या प्रत्येक राजनीतिज्ञ को उच्च और वक्ता होना ही चाहिये? नहीं। तब फिर राजनीतिज्ञ शब्द का क्या

अर्थ है ? वे कौन से गुण है जो प्रत्येक राजनीतिज्ञ में होने ही चाहिये ? और ऐसे गुण कौन से हैं कि जो राजनीतिज्ञो के अतिरिक्त अन्य लोगो में भी हो सकते है ? बस इसी रीत से प्रश्न करके किसी भी शब्द का सच्चा अर्थ वह अपने शिष्यों के मुख से निकलवा लेता था, और पृथक्करण करके प्रश्नों के रूप में वह लोगों के हृदय की अज्ञानता को दूर कर देता था। इस तरह प्रचलित धर्म, अथवा प्रचलित राज्यपद्धति आदि किसी भी प्रस्तुत विषय से सम्बन्ध न रखते हुए, केवल बुद्धि के ज़ोर से, उसने स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना लोगों को सिखलाया।

इस प्रकार से स्वतन्त्र विचार करने की पद्धति पहलेपहल साक्रेटीस ने ही निकाली। वह निर्भय होकर प्रायः लोगों को बतलाया करता कि, राज्याधिकारियों ने कोई कानून बनाये, अथवा किसी धर्म का प्रचार पुरातन काल से चला आता है-इतनेही से हम उसको अच्छा नहीं कह सकते, किन्तु प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि, अपनी स्वतन्त्र बुद्धि से वह सब बातों पर विचार करे, और तब वे अच्छी हैं या बुरी—यह निश्चय करे। कोई वृद्ध हो या अधिकार-सपन्न हो, उसकी वह बिलकुल परवा नही करता था। उसका कथन था कि, वृद्धों का जो सन्मान किया जाता है वह उनकी अधिक अवस्था के कारण नही, किन्तु उनकी बुद्धि के कारण किया जाता है। पिता की आज्ञा पुत्र को अवश्य माननी चाहिये, पर यदि पिता अज्ञान-वश पुत्र को अनुचित आज्ञा दे तो उसके पालन की बिलकुल ज़रूरत नहीं। सांराश, साक्रेटीस के मत से सत्य और ज्ञान ही परम माननीय थे।

इस तरह साक्रेटीस ने नीतिशास्त्र का मन्थन करके यह निष्कर्ष निकाला कि, जिससे मनुष्यों की भलाई हो, वही अच्छा। सद्गुण ही सुख है। सुख प्रत्येक के लिए आवश्यक है। मनुष्य जो दुर्गुणी हो जाता है, सो अपनी अज्ञानता के कारण, क्योंकि जान-बूझ कर अपने को सुख से वंचित रखने-वाला कोई नहीं है। इसी प्रकार के स्वतन्त्र विचार उसने धर्म के विषय में भी प्रकट किये। पर वे तत्कालीन धममतों के अनुकूल न होने के कारण लोगों को पसन्द न आये। अधिकारियों ने उस पर अन्याय से यह अपराध लगाया कि, वह अपनी शिक्षाओं से लोगों को धर्मभ्रष्ट और नीतिभ्रष्ट कर रहा है। इस पर उसे मृत्युदण्ड दिया गया, जिसे उसने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। साक्रेटीस के पश्चात् उसका शिष्य प्लेटो बड़ा तत्ववेत्ता हुआ। प्लेटो का शिष्य अरिस्टाटल सिकंदर बादशाह का गुरु था।

तेरहवां अध्याय।

ईरानी युद्ध।

(सन् ईसवी के ३६६-३८७ वर्ष पूर्व)

ईरान के बादशाह डरायस ने एथेन्स के साथ लड़ने के लिए स्पार्टा को बड़ी सहायता पहुँचाई थी; पर युद्ध के अंत

में उसकी मृत्यु होगई। उसके पश्चात् उसका बड़ा लड़का आर्टाज़र्ज़िस मेम्नन गद्दी पर बैठा; परन्तु एशिया माइनर के किनारे के ईरानी राज्य के सब प्रदेश उसके दूसरे लड़के सायरस को मिले।

सायरस बड़ा चतुर और तेजस्वी पुरुष था। उसकी महत्वाकांक्षा बड़ी प्रबल थी। उसने भी द्रव्य की सहायता देकर स्पार्टा को एथेन्स के साथ लड़ने के लिए उत्साहित किया था। पर उसकी इस सहायता में, उसका हेतु शुद्ध न था। वह अपने बड़े भाई को ईरान की गद्दी से हटाना चाहता था और उसे इस कार्य में स्पार्टा की सहायता आवश्यक थी। यही कारण है कि, उसने स्पार्टा को सहायता पहुँचा कर उससे मैत्री कायम रक्खी थी।

आर्टाज़र्ज़िस गद्दी पर बैठा ही था कि, सायरस ने उस पर धावा कर दिया। इस चढ़ाई में उसे दस हज़ार ग्रीकों की सहायक सेना मिली थी। बाबिलोन के निकट क्यूनाक्ज़ा के मुकाम पर दोनों भाइयों में घोर युद्ध हुआ; और सायरस मारा गया। सायरस का सारा राज्य आर्टाज़र्ज़िस को मिल गया। आर्टाज़र्ज़िस बड़ा कपटी और लहरी पुरुष था।

ग्रीक सेना वापस लौटी। इतने में आर्टाज़र्ज़िस ने उससे बदला लेने का विचार किया; और अपने अधिकारियों से सलाह करके समस्त ग्रीक सेनापतियों को मुलाक़ात के लिए बुलवाया; और विश्वासघात करके सब को क़तल करा दिया। ग्रीक सेना निराश्रित होकर अब बड़ी विपत्ति में पड़ी। उसके पास रसद-पानी कुछ न था। पर भाग्यवश इस सेना के साथ साक्रेटीस का शिष्य ज़ेनोफन स्वयंसेवक के तौर पर था।

वह बड़ी युक्तिपूर्वक इस सेना को स्वदेश लौटा लाया, नहीं तो सभी के प्राण जाने में संदेह न था। नाना प्रकार के संकट सहकर दस हज़ार सेना को, ज़ेनोफ़न सुरक्षित रूप से स्वदेश लौटा लाया, इससे उसकी कीर्ति अजर अमर होगई। उसका यह कार्य इतिहास में "दस हजार की यात्रा" के नाम से प्रसिद्ध है। जंगलियों की बस्ती से होकर भयानक सर्दी सहते हुए, अन्न वस्त्र का कष्ट उठाते हुए, हज़ारों मील चलकर जब ग्रीक सेना बायज़ांटियम में कुशलपूर्वक जा पहुंची, तब ज़ेनोफ़न उसका साथ छोड़ अकेला पेलापोनेसस लौट आया। इसके बाद उसने अपना सारा जीवन विद्या-व्यासंग में बिताया। उसका घर आलिंपियान के निकट सिलस में था।

ग्रीक सेना जब इस प्रकार हाथ से निकल गई तब आर्टा-ज़र्ज़िस को बड़ा संताप हुआ। विशेषतः सायरस को सहायता देने के कारण वह स्पार्टनों पर और भी अधिक कुपित हुआ। उसने टिसाफर्निस को मुख्य सेनापति बनाकर स्पार्टा से युद्ध ठान दिया। इस टिसाफर्निस ने ही, अपने राजा के कहने से, ग्रीक सेनापतियों को कपट से मरवाया था।

इस समय स्पार्टा में अजेसिलास नामक बड़ा पराक्रमी और शूर राजा राज्य करता था। राज्यशासन में भी वह खूब निपुण था। उसके शरीर की गठन मध्यम और देखने में वह साधारण था। पैर से यद्यपि वह लँगड़ा था; परन्तु बड़ा कौतूहलप्रिय और मिलनसार था। शिक्षा उसे बालपन में किसी साधारण स्पार्टन लड़के के समान ही मिली थी। वह बहुत थोड़े में सब खर्च चलाता और ऐश-आराम में धन बिलकुल खर्च न करता था। कहते हैं कि बच्चों पर वह बड़ा प्रेम रखता

था। एक बार जब कि उसका कोई मित्र उससे मिलने आया, वह काठ का घोड़ा लेकर बच्चों के साथ खेल रहा था। यह देख कर उस मित्र ने जब बड़ा आश्चर्य प्रकट किया, तब राजा ने कहा—"अजी साहब, जब तुम्हारे बच्चे होंगे, तब तुम्हें इस का मज़ा मालूम होगा।"

लायकरगस के समय से लेकर अब तक स्पार्टा की राज्य-व्यवस्था में अनेक रूपान्तर हुए थे। पुराने घराने कम हो चले थे; और लेकोनियन लोगों के सम्बन्ध से नई जाति उत्पन्न होगई थी। मंत्रि-सभा के सभासद चुनने का अधिकार अधिक विस्तृत होगया था। और गुलामों को स्वतंत्रता मिल जाने के कारण सर्वसाधारण लोगों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। पहले डोरियन लोगों के गर्विष्ठ वंशज, जिन लोगों को केवल अपना गुलाम और ताबेदार समझते थे, वे ही अब धनवान और प्रतिष्ठित बन गये थे। अब भी मूल स्पार्टन अपने को प्रतिष्ठित और उच्च समझते थे, तथा अपने मुक़ाबिले में दूसरों को तुच्छ और हलका गिनते थे—यहां तक कि, ज्यों ज्यों इनकी संख्या कम होती गई त्यों त्यों इनका गर्व और भी बढ़ता ही गया। इस समय भी राजपद, मंत्रिसभा की सभासदी और सेनापति की जगह असली डोरियन वंश वाले को ही मिलती थी। इसी तरह ईफोर नामक पांच न्यायाधीश जो प्रति वर्ष चुने जाते थे वे भी डोरियन वंश के ही चुने जाते थे। इन पांच न्यायाधीशों को राजा से लेकर रंक तक, सब के, अपराधों की जाँच करके दण्ड देने का अधिकार था।

इस प्रकार स्पार्टा की राज्यव्यवस्था में यद्यपि अब तक बहुत से परिवर्तन होगये थे, तथापि शिक्षा-विभाग में लाय-

करगस के ही नियम प्रचलित थे। अन्य ग्रीक रियासतों की अपेक्षा स्पार्टनों की रहन सहन और उनके नियमों की कठोरता अभी तक पहले के समान ही प्रसिद्ध थी। फ़र्क़ इतना ही हुआ था कि स्त्रियों के सम्बन्ध में जो कड़े नियम थे, उन्हें अब, द्रव्य देकर, नरम करा सकते थे। इससे धनवान् लोगों की स्त्रियाँ कुछ आराम से रहा करती थीं।

अस्तु, एशिया में जाकर ईरानियों से टक्कर मारने के लिए स्पार्टनों की ओर से अजेसिलास नियुक्त हुआ। उसने सार्डिस के मुकाम पर ईरानियों को हराया। आर्टाज़र्ज़िस ने यह समाचार जब सुना तब वह बड़ा कुपित हुआ। उसने यह समझ कर कि टिसाफर्निस की लापरवाही के कारण स्पार्टनों को यह जीत हुई है, उसे मरवा डाला; और दूसरा सेनापति मुकर्रर किया। यह नया सेनापति स्पार्टनों से सन्धि करना चाहता था; पर आर्टाज़र्ज़िस को यह बात पसन्द न थी। इसलिए ईरानी सेनापति ने स्पार्टन सेना को वापस भेजने की एक नई युक्ति लड़ाई। उसने अनेक ग्रीक रियासतों के पास दूत भेजकर उन्हें स्पार्टा के साथ लड़ने के लिए उभाड़ दिया। थीब्स, कारिंथ और आर्गास ने स्पार्टा पर चढ़ाई करने की तैयारी की, इतने पर भी अजेसिलास एशिया से वापस नहीं गया।

किसी निमित्त से भी ग्रीकों के मन में यदि एक बार परस्पर लड़ने की बात आ जाती, तो फिर वे न्यायान्याय की ओर ध्यान न देते थे। लड़ने का कोई क्षुद्र कारण भी वे व्यर्थ न जाने देते थे। इस समय भी एक ऐसाही मौका आगया। दो रियासतों में किसी ज़मीन के ऊपर झगड़ा हो रहा था। उस झगड़े में थीब्स ने एक और स्पार्टा ने दूसरा पक्ष स्वीकार

करके युद्ध ठान दिया। स्पार्टा का सेनापति लिसांडर अपनी सेना लेकर थीब्स पर चढ़ धाया; और इधर एथेंस थीब्स की सहायता के लिए तैयार हुआ। बियोशिया प्रान्त के हल्यार्टस नामक स्थान पर दोनों पक्षों में युद्ध हुआ; और स्पार्टन पूर्ण रूप से पराजित हुए। लिसांडर युद्ध में मारा गया।

इधर आजेसिलास एशिया में जो युद्ध कर रहा था, उसमें उसे अच्छी सफलता प्राप्त हुई। पर बीच ही में एकाएक स्पार्टा से उसे ईफोरों की आज्ञा मिली कि बहुत जल्द वापस आकर यहां की सेना को सहायता दो। तदनुसार वह वापस आरहा था कि, कोरोनिया के मैदान में थीबन सेना के साथ उसकी मुठभेड़ होगई। घोर युद्ध हुआ; और आजेसिलास उसमें विजयी हुआ। (सन् ईसवी के ३९४ वर्ष पूर्व।)

ग्रीक लोगों में एक यह नियम था कि, युद्ध की लूट का कुछ भाग देश के किसी देवता को अर्पण किया जाता था। तदनुसार आजेसिलास भी डेलफाय के मन्दिर में गया; और अपनी लूट का दसवां भाग, पांच लाख रुपये का सामान, डेलफाय के देवता को अर्पण किया। इस प्रकार देवता का सन्मान करने के बाद उसने सेना को छुट्टी देदी; और आप स्पार्टा को लौट गया।

इधर एथेन्स के राजनीतिज्ञ केनन को लिसांडर ने पराजित किया; और वह सायप्रस चला गया। कुछ दिन बाद फिर वह एशिया माइनर में जाकर ईराननरेश आर्टाज़र्ज़िस से मिला; और उससे प्रार्थना की कि, आप कृपाकर हमें एथेन्स की क़िलेबन्दी फिर से तैयार कराने और उसका पूर्व-वैभव फिर स्थापित करने में सहायता दीजिये। आर्टाज़र्ज़िस

ने इस आशा से, कि इससे हमें भी कुछ लाभ होगा, जंगी जहाजों का एक बेड़ा तैयार कराया; और फार्नाबेज़स नामक सरदार को उसका सेनापति बनाकर केनन के साथ भेज दिया। इन दोनों सरदारों ने मिलकर स्पार्टन बेड़े को पराजित किया। इसके बाद एथेंस आकर केनन ईरान-नरेश की सहायता से नगर का कोट और किला बनवाने लगा।

यह देखकर स्पार्टन बड़े घबड़ाये। उन्होंने समझा कि, एथेंस अब फिर सब का शिरोमणि हो जावेगा। उन्होंने तत्काल ही अपना वकील आर्टाज़र्ज़िस की सेवा में भेजा; और प्रार्थना की कि, यदि आप ग्रीस देश के युद्धों को बन्द करके वहां शांति स्थापन कर देंगे तो एशिया-माइनर में ग्रीकों की जो बस्तियां हैं, वे सब की सब आपके अधिकार में दे दी जायँगी। स्पार्टनों की प्रार्थना सफल न होने देने के लिए केनन भी उसी समय ईरानी दरबार में गया। बहुत वादविवाद होने पर स्पार्टन वकील की प्रार्थना आर्टाज़र्ज़िस ने स्वीकृत की; और केनन को पकड़कर बन्दीगृह में डाल दिया। इसके बाद सन्धि हुई; जिसमें एशियामाइनर के सारे ग्रीक शहर ईरान नरेश को सदा के लिए मिल गये; और ग्रीस देश से उनका कुछ सम्बन्ध न रहा। इसके सिवाय यह भी निश्चय हुआ कि ग्रीस देश की छोटी-बड़ी सब रियासतें बिलकुल स्वतन्त्र समझी जायँ; कोई रियासत किसी पर अपना अधिकार न जमावे। यह सन्धि "अँटेलिसडास की सन्धि" कहलाती है। अँटेलिसडास स्पार्टा का वकील था। इसी ने सन्धि की थी; अतएव वह इसी के नाम से प्रसिद्ध हुई (सन् ईसवी के ३८७ वर्ष पहले)।

चौदहवां अध्याय ।

थीब्स और स्पार्टा ।
(सन् ईसवी के ३८७-३६२ वर्ष पूर्व)

स्पार्टा ने किसी तरह ईरान से सन्धि तो कर ली, पर सधि में जो सब ग्रीक रियासतों को समान स्वतत्र समझने की शर्त थी, उसके पालन करने की इच्छा स्पार्टा को पहले ही से न थी। स्पार्टा की बहुत दिनों से यही इच्छा थी कि, सब ग्रीक रियासतों का नेतृत्व उसके हाथ में रहे। यह इच्छा उसके मन से कभी नही गई। अटेलिसडास की सधि के एक ही वर्ष बाद स्पार्टा ने आर्केडिया के आधीनस्थ मांटिनिया शहर को चारों ओर से घेर लिया। कारण यही था कि, आर्केडिया स्वतत्रता चाहता था। आजेसिलास ने जब मांटि-निया शहर पर अपना अधिकार जमा लिया तब वहां के निवासी शहर छोड कर बाहर चले गये, और चार नवीन गांव बसा कर रहने लगे। पर वहा भी प्रत्येक गाव पर एक एक स्पार्टन अधिकारी नियत किया गया।

थ्रेस प्रान्त मे आलिथस नामक एक शहर था। उसने थीब्स और एथेन्स से मित्रता कर ली, इससे स्पार्टा का बडा क्रोध आया, और उसने कोई बहाना निकाल कर आलि-थस से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। आलिथस के निवासी चार वर्ष तक बडी वीरता के साथ स्पार्टा से लडते रहे, पर अन्त

में उन्हें पराजित होकर स्पार्टा की शरण में जाना ही पड़ा। स्पार्टा ने उक्त शहर पर अपना अधिकार जमा लिया; और वहां अपनी सेना की छावनी रख दी। उसका कुछ प्रदेश स्पार्टा ने लेकर मासिडोनिया के राजा अमिंटास को दे दिया; क्योंकि ईरान-स्पार्टा युद्ध में राजा अमिंटास ने स्पार्टा को अच्छी सहायता पहुँचाई थी।

कुछ दिन बाद थीब्स भी स्पार्टा के अधिकार में आ गया। इसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि, थीब्स में राजकर्मचारियों के दो दल थे। ऐसी दलबंदियां प्रायः सभी ग्रीक राज्यों में बनी रहती थीं। प्रत्येक दल के मुख्य नेता, प्रायः दुष्ट स्वभाव के होते थे; और वे अपनी निज की सत्ता स्थापित करने के लिए स्वदेश-वासियों के प्राणों को बलि देने अथवा देश को हानि पहुँचाने में कुछ भी आगा-पीछा न सोचते थे। इसी स्वभाव के एक थीबियन मनुष्य ने थीब्स का किला एक स्पार्टन सैनिक सरदार के हवाले कर दिया। यह सरदार थ्रेस प्रान्त के स्पार्टनों की सहायता लेकर बियोशिया प्रान्त से जा रहा था। अस्तु। उक्त कार्य स्पार्टन सरकार ने मंजूर कर लिया; और थीब्स में स्पार्टन सेना भी बन्दोबस्त के लिए रख दी। स्पार्टनों ने उस समय थीबियन लोगों पर बड़े बड़े अत्याचार किये, जिससे बहुतेरे तो अपने प्राणों से हाथ धो बैठे; और बहुतेरे जान बचा कर भाग गये। अनेक लोगों की जायदाद सरकार ने जब्त कर ली; और उन्हें देश-निकाला दे दिया।

उसी समय बहुत से थीबियन भाग कर एथेंस शहर में भी जा बसे थे। उनमें पिलोपिडास नामक एक महाशय धनवान और उच्चवंशीय था। स्वदेश पर उसकी बड़ी श्रद्धा और

भक्ति थी। उसने थीब्स को स्पार्टनों के अधिकार से छुडाने का निश्चय किया। इपामिनोडास नामक एक और चतुर और उच्चवशीय पुरुष उसका मित्र था। मांटिनिया की चढाई में इपामिनोडास ने पिलोपिडास के प्राणों की रक्षा की थी, तब से दोनों में बडी गाढी मित्रता होगई थी। इपामिनोडास सदा एकांत में बैठकर अध्ययन में लगा रहता था, इसी कारण वह थीब्स में बचा रहा। अब थीब्स से ही उसने एथेन्स के पिलोपिडास इत्यादि लोगों के साथ गुप्त रीति से पत्र-व्यवहार शुरू किया, और इस प्रकार गुप्त षड्यंत्र रच कर स्पार्टा के जुल्मी अधिकारियों के हाथ से थीब्स को छुडाने का पूरा पूरा निश्चय किया। एक दिन पिलोपिडास और उसके साथी शि[illegible]यों का भेष धर कर थीब्स की ओर आये, और भिन्न भिन्न मार्गों से शहर में प्रवेश करके, अगली तैयारी करने के हेतु से, चारण नामक एक व्यक्ति के घर डेरा डाल दिया।

थीब्स का एक उच्च राजकर्मचारी भी, जिसका नाम फिलिडास था, इस षड्यन्त्र में शामिल था। उसने अपने साथियों की सलाह से एक दिन सब बडे बडे स्पार्टन अधिकारियों को अपने घर भोजन के लिए बुलाया। साथ ही उसने सब को यह भी सूचना दी कि, भोजन के पश्चात् कुछ स्त्रियां भी आमन्त्रित होकर आवेंगी। यह उसने इस लिए किया कि, जिससे भोजन के लिए आने मे कोई आनाकानी न करे। पर एक एथेनियन व्यक्ति, जो इस षड्यन्त्र में शामिल था, उसके घबडा जाने से सारा भेद खुलते खुलते बच गया। उसने स्पार्टन गवर्नर को गुमनाम पत्र के द्वारा इस षड्यन्त्र की सूचना दी। स्पार्टन गवर्नर आर्कियास जब कि फिलिडास

के घर भोजन कर रहा था, उसी समय उसको यह पत्र मिला। पर उसने शराब के नशे में कह दिया कि, अभी मैं पत्र इत्यादि कुछ नहीं देखूंगा, सबेरे सब काम होगा। इसके बाद उसने पूछा, "स्त्रियां जो आनेवाली थीं, कब आवेंगी?" इतने ही में स्त्रियों का वेष धारण किये हुए बहुत से लोग उस कमरे में घुस आये और कमर से खंजर निकाल कर सब स्पार्टनों को वहीं का वहीं काट डाला। फिलिडास के घर पर तो यह घटना होरही थी; उधर शहर में षड्यंत्रियों के अन्य साथी, दूकानों में घुस कर बिक्री के लिए रक्खे हुए जिरह-बख्तरों को पहन, हाथ में शस्त्र ले, सड़कों पर घूमने लगे; और स्वदेश की स्वतंत्रता के हेतु लोगों को अपनी ओर मिलाने लगे।

इसके बाद नवीन राज्यव्यवस्था हुई, पिलोपिडास और अन्य दो बड़े मनुष्यों के हाथ में राजकारबार आया। इनको 'बियोटार्क' कहते थे। इन बियोटार्कों के हाथ में सिर्फ थीब्स का ही शासन न था, किन्तु वे सारे 'बियोशिया' प्रांत पर शासन करते थे; और इसी लिए इनका नाम 'बियोटार्क' पड़ा था। पर अभी तक थीब्स का किला स्पार्टनों के ही अधिकार में था। उसे वापस लेने के लिए एथेन्स की सहायता आगई। शर्त यह हुई कि, किला चुपचाप छोड़ देने पर स्पार्टन सेना को कुछ दुःख न पहुँचाया जाय, इस लिए किला बिना किसी खून-खराबी के मिल गया। इपामिनोंडास भी अधिकारी बनाया गया था। वह शूर था, अतएव उसे सेनापति का पद मिला था।

इस प्रकार जब स्पार्टन लोगों ने देखा कि थीब्स से उनकी सत्ता चली गई, तब उनको अत्यन्त खेद हुआ; और वे फिर

से युद्ध करने को तैयार हुए। युद्ध आरंभ हुआ; और सात वर्ष तक जारी रहा। इस युद्ध में बड़े बड़े भयंकर और क्रूर कार्य हुए। ग्रीक लोगों की यह आदत थी कि, जहां एक बार वे हठ में आये कि, फिर क्रूरता की हद कर देते थे। सात वर्ष के पश्चात् बियोशिया प्रान्त के ल्यूक्ट्रा नामक स्थान पर एक लड़ाई हुई, जिसमें थीब्स की ओर से इपामिनोडास और स्पार्टा की ओर से वहां का राजा क्लिओ-टस मुख्य थे। थीब्सों की संख्या यद्यपि बहुत थोड़ी थी; तथापि उन्होंने स्पार्टनों को पूर्ण रूप से पराजित किया।

युद्ध के इस परिणाम से स्पार्टनों की नस खूब ढीली होगई। स्पार्टा में जब इस पराभव का समाचार आया, उस समय लोग, सदा के अनुसार, बड़े आनदपूर्वक किसी उत्सव का साज सजा रहे थे। बाहर के बहुतेरे मनुष्यों की भीड़ उत्सव देखने को एकत्र हुई थी; और सब युवा स्त्री-पुरुष नाटक-गृह में एकत्र होकर नाच-तमाशों में मग्न थे। पराजय का समाचार सुन कर भी 'ईफ़ोर्स' ने यही आज्ञा दी कि, नाच-तमाशे बंद न किये जांय; और युद्ध में मरे हुए लोगों के लिए शोक और दुःख कोई न करे। हां, युद्ध में जिन लोगों की मृत्यु हुई थी, उनके नाम उनके घरवालों को बता दिये गये। कहा जाता है कि, जो लड़ाई में मारे गये थे उनकी माताएँ, समाचार पाने के दूसरे दिन, अच्छी पोशाकें पहन-कर मंदिर में गईं, और देवता के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रका-शित की; और एक दूसरे के घर जाकर अभिनंदन किया, किन्तु, जो लोग युद्ध से सही-सलामत वापस लौट आये थे, उनकी माताएं घर में बैठी हुई शोक मनाती रहीं।

उपर्युक्त विजय से थीबन लोगों को अत्यन्त आनन्द हुआ। उन्होंने तत्काल ही दूत भेज कर एथेन्स को यह विजय-वार्ता भेजी। थीबियन समझते थे कि, एथेन्स की सहायता से हमें स्पार्टा के पंजे से छुटकारा मिला है, अतएव हमारी विजय-वार्ता सुन कर एथीनियन बड़े हर्षित होंगे। पर वास्तव में ऐसा नहीं हुआ। थीब्स का उदय होते देख कर एथेन्स को बड़ा बुरा लगा। इसके सिवाय जब उसने यह सुना कि, बियोशिया प्रान्त के समस्त शहरों ने भी थीब्स की सत्ता स्वीकार कर ली; और फोसिस के निवासी आप ही आप उसके अधिकार में चले गये, तब तो उनके सन्ताप की सीमा ही न रही।

इधर स्पार्टा और थीब्स का युद्ध जारी ही था, अब थीब्स ने देखा कि, हमें एथेन्स से सहायता न मिलेगी, इस लिए उसने थेसली के राजा जेसोन के साथ मैत्री करने का विचार किया; और स्पार्टा के साथ लड़ने के लिए उसकी सहायता माँगने को अपना वकील उसके पास भेजा। जेसोन बड़ा पराक्रमी महत्वाकांक्षी और अत्यन्त धूर्त था। उसने थीब्स का आमंत्रण बड़ी प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया; पर हृदय में थीब्स को ही निगल जाने का उद्देश्य रक्खा। वह सेना लेकर बियोशिया प्रान्त में आया सही, पर स्पार्टनों से लड़ने के लिए नहीं; किन्तु उसने आकर दोनों पक्षों को संधि कर लेने की सलाह दी; और स्वयं प्रयत्न करके संधि करा भी दी। संधि हो जाने के बाद स्पार्टन सेना स्वदेश लौट गई।

जेसोन के इस व्यवहार से लोगों के हृदय में संदेह उत्पन्न होने लगे; और वे अन्त में सत्य भी निकले। ग्रीस देश में

पार्थियन नामक खेल हुआ करते थे, उनमें अग्रस्थान पाने के लिए जेसोन ने बड़ा आग्रह किया। इस आग्रह का यही अर्थ था कि, ग्रीस देश में उससे बडा और कोई न समझा जावे। उसने अपने लोगों के द्वारा उत्सव के यज्ञ म अर्पण करने के लिए बकरे, मेढे, सुअर, आदि ग्यारह हजार पशु एकत्र किये, और बड़े ठाट-बाट के साथ, अपनी सत्ता प्रदर्शित करते हुए उत्सव में आने का प्रबन्ध किया। किन्तु उत्सव आरम्भ होने के कुछ दिन पहले ही उसका खून हो गया। इससे ग्रीक रियासतों की पराधीनता कुछ दिनों के लिए टल गई। आगे चल कर मेसिडोनिया के राजा फिलिप ने, सारे ग्रीस देश को एक छत्र के नीचे लाने का कार्य पूर्ण किया।

जेसोन की मृत्यु के बाद थीब्स और स्पार्टा में फिर युद्ध आरम्भ हो गया। अजेसिलास ने आर्केडिया प्रान्त पर चढाई कर के उसको विध्वस कर डाला। यह प्रान्त पेलापोनेसस का चराऊ प्रदेश था, और पान नामक पशुओं का देवता उसका अधिकारी समझा जाता था। यह पान देव गडरियों का पूज्य था। अजेसिलास के उपर्युक्त उपद्रव का बदला थीब्स और आर्केडिया की सेना ने खूब ही चुकाया। ये दोनों सेनाएं लेकोनिया प्रान्त में प्रविष्ट हुईं, और रास्ते में स्पार्टा के राज्य मे लूट मार करके और धनवान् लोगों के बाग बगीचे उजाड कर स्पार्टा में आ पहुँचीं। पर स्पार्टा के साथ उनका सन्मुख युद्ध न हुआ। दोनों दल एक दूसरे को, जिस प्रकार हो सका, तग करने लगे।

मेसेनिया प्रान्त के लोग, जो अपने देश से वंचित हो गये थे इस युद्ध में फिर अपने देश को पा गये। लगभग तीन सौ

वर्ष पहले उनका देश स्पार्टा ने जीत लिया था; और वे देश से निकाल दिये गये थे। उनमें से कुछ तो आर्केडिया प्रान्त में और कुछ बेचारे अन्य निकटवर्ती द्वीपों में जा बसे थे। उनके वंशज अब तक विद्यमान थे, जो परकीय देश में बड़ी बुरी तरह से रखे जाते थे, अतएव अपने पूर्वजों की भूमि मेसेनिया को वे सदैव याद किया करते थे। इपामिनोंडास जब आर्केडिया प्रान्त में आया तब ये लोग बहुत जल्द उससे आ मिले। इपामिनोंडास ने भी, अपना असली देश फिर से प्राप्त करने के लिए, इन्हें खूब उत्साहित किया। फल यह हुआ कि, मेसेनियनों ने इपामिनोंडास की सहायता से अपना देश वापस ले लिया; और फिर वहां जा बसे। इपामिनोंडास ने मेसान नामक एक नया नगर बसाया। उसकी किलेबन्दी इतनी सुन्दर और दृढ़ थी कि, उसकी प्रशंसा बहुत काल तक होती रही। यह किला आथोम की टेकड़ी पर बनाया गया था। उसके कुछ भग्नावशेष अब भी दृष्टिगोचर होते हैं।

अब मेसेनिया मानो थीब्स को एक नवीन सहकारी मित्र मिल गया। स्पार्टा के आधीनस्थ प्रदेश अब बहुत कम हो चले; और थीब्स की महत्ता बढ़ने लगी। थीब्स की यह बढ़ती एथेन्स से बिलकुल ही सहन न हुई। यहां तक कि उसने थीब्स को नीचा दिखलाने के लिए अपने पुराने शत्रु स्पार्टा से मित्रता तक कर ली। एथेन्स यह नहीं चाहता था कि, ग्रीस देश में थीब्स की ही सत्ता चले। हां, इपामिनोंडास और पिलोपिडास थीब्स को बढ़ाना अवश्य चाहते थे।

अन्त में दोनों दलों का युद्ध ठन गया, और ल्यूक्ट्रा की लड़ाई के बाद दस वर्ष के भीतर थीब्स के दोनों योद्धा रणक्षेत्र में

मारे गये। पिलोपिडास थेसली प्रान्त में लडते लडते मारा गया, और इपामिनोंडास आर्केडिया प्रान्त में मॉटिनिया के युद्ध में काम आया (सन् ईसवी के ३६२ वर्ष पहले)। इपामिनोंडास की मृत्यु के पश्चात् शीघ्र ही स्पार्टा का राजा अजेसिलास भी ८४ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ। इसने ४० वर्ष तक स्पार्टा का राज्य किया। इस अवधि में जितने युद्ध इसने किये, उन सब में इसने विजय प्राप्त किया। जब कि ईजिप्ट में, राजसिंहासन के लिए दो पक्षों में झगड़ा हो रहा था, एक पक्ष की ओर से यह वहां गया, और युद्ध करके अपना अभीष्ट सिद्ध किया। वहीं से लौटते समय रास्ते में इसकी मृत्यु हो गई। अजेसिलास उस समय का बडा पराक्रमी और शूर योद्धा था। शत्रुओं के साथ वह बडा अच्छा व्यवहार करता था। उसके सद्गुणों की अनेक आख्यायिकाएं प्रसिद्ध हैं। एक बार जब उसने कारिंथ पर चढ़ाई की, वहां के कई देशद्रोहियों ने उसे सलाह दी कि, शहर पर एकदम हल्ला करके उसे अपने अधिकार में ले लीजिए, परन्तु उसने यह बात स्वीकार न की। उसने कहा, "आवश्यकता पड़ने पर यद्यपि एक ग्रीक रियासत का दूसरी रियासत को दण्ड देना उचित है, तथापि उसका समूल नाश कर देना किसी प्रकार उचित नहीं।"

पंद्रहवां अध्याय ।

———:o:———

मासिडोनिया का फ़िलिप ।

(सन् ईसवी के ३६२-३५७ वर्ष पहले ।)

इपामिनोंडास की मृत्यु से थीब्स के सारे मनोरथ विफल हो गए। परन्तु एथेंस को अपना गत वैभव फिर से प्राप्त करने का कुछ मौका मिल गया। हां, इस समय ग्रीस की सब रियासतें लगातार युद्ध के कारण अत्यन्त दुर्बल हो गयी थीं। किसी में सिर उठाने की ताकत न रही थी। विदेशी शत्रुओं के हमलों से टक्कर मारना तो उनके लिए बिलकुल असम्भव था। तथापि, एक विदेशी शत्रु ने बहुत जल्द उन पर चढ़ाई कर दी; वह मासिडोनिया का राजा फ़िलिप था।

ग्रीस के उत्तर में मासिडोनिया नामक एक प्रदेश है। प्राचीन काल में, इस प्रदेश में अनेक छोटे छोटे सरदार थे; और वे अपने अधीनस्थ द्वीपों पर स्वतंत्रतापूर्वक राज्य करते थे। बड़ा नगर वहां केवल एक था। जिसका नाम पेला था। वहां के राजा को ग्रीक उपनिवेशी कर दिया करते थे।

मासिडोनिया की राज्यपद्धति कुछ अधिक व्यवस्थित न थी; और वहां के लोग भी अधिक सभ्य न थे। अधिकांश लोग स्वतंत्र थे; परन्तु सत्ता प्रायः सेना के हाथ में थी। मतलब यह कि, वहां की राज्यव्यवस्था सैनिक नीति पर

चलती थी। सेना का मुख्य अधिकारी ही वहां का राजा था; पर उसे भी विशेष अवसरों को छोड़ कर राजचिन्ह धारण करने का अधिकार न था। राजसिंहासन के लिए सदा झगड़े हुआ करते थे। द्वितीय अमिंटास (Amyntas) की मृत्यु होने पर उसका छोटा लड़का फिलिप अपने अल्पवयी भतीजे के नाम से राजकाज करने लगा। उस अल्पवयी लड़के का पिता इलिरियन लोगों के साथ लड़ते समय मारा गया था। फिलिप छुटपन ही से थीब्स में रह कर ग्रीक लोगों की तत्कालीन विद्याओं में निपुण हो गया था। ग्रीक लोगों की राज्य-प्रबंध-शैली और युद्ध-कौशल का उसने ख़ूब निरीक्षण किया था। उन्हीं के आधार पर उसने अपने यहां भी नाना प्रकार के सुधार किये। विशेषतः सेना के सुधार में उसने ख़ूब ध्यान दिया। कहा जाता है कि, सेना के चौकोनी संघ खड़े करके लड़ने की युक्ति उसी की चलाई हुई है; पर अब यह सिद्ध हो गया है कि, उसके पहले भी यह पद्धति ग्रीकों को ज्ञात थी। हां, थीब्स में पहलेपहल फिलिप ने ही उसे सीखा।

सन् ईसवी के ३५९वें वर्ष पूर्व अपने भतीजे को सिंहासन से उतार कर फिलिप स्वयं राजा बन बैठा। उस समय लोग अर्द्धसभ्य थे; और उन लोगों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए फिलिप में शारीरिक और मानसिक योग्यता पर्याप्तरूप से थी। उसका डीलडौल सुन्दर और मुखमंडल तेजस्वी था। बुद्धि उसकी विलक्षण थी, वह बड़ा साहसी, उद्योगी और उत्कृष्ट वक्ता था। स्वभाव से वह चतुर, कौतूहलप्रिय और चिन्तारहित था। उसका व्यवहार सब के साथ बहुत अच्छा था, अतएव लोग उससे बहुत प्रसन्न रहते थे। भतीजे

को राज-सिंहासन से उतार कर उसने उसको कुछ कष्ट नहीं दिया; किन्तु बड़े प्रेम के साथ उसको शिक्षा इत्यादि दिला कर उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दिया।

फिलिप के राजसिंहासन पर बैठते ही लोगों ने समझ लिया कि, वह सारे ग्रीस देश को अपने हाथ में ले लेगा। सचमुच उसने ऐसा ही किया। यह नहीं कि, युद्ध करके उसने ऐसा किया हो; किन्तु धीरे धीरे, मौका पाकर वह अपनी सत्ता और प्रभाव बढ़ाता गया। यद्यपि वह स्वयं शूर और योद्धा था, पर युद्ध से उसे घृणा थी। वह जानता था कि, युद्ध से राष्ट्र की बड़ी बड़ी हानियां होती हैं; और शान्ति से हमारा हेतु भी सिद्ध होता है, तथा राष्ट्र की शक्ति भी बढ़ती है। अतएव जब तक उसका कार्य शांतिपूर्वक निकलते गया, युद्ध को वह टालते ही गया। वह शूर होकर भी दयालु और सौम्य स्वभाव का था; अतएव विजित लोग भी बड़ी प्रसन्नता के साथ उसके अधिकार में रहते थे। हां, सेना के प्रबन्ध में अवश्य ही वह बड़ा कठोर था। लिखा है कि, एक सिपाही ने ठंढे पानी से स्नान न करके गरम पानी से स्नान किया; तथा एक दूसरे सिपाही ने मार्ग में ठहर कर मद्य-पान किया, इस पर उसने उन दोनों को अत्यन्त कठोर दण्ड दिया।

फिलिप के राज-पद धारण करते ही दो मनुष्य राज्य पर अपना अधिकार जतलाते हुए, उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए। एक को थ्रेस के राजा का सहारा था; और दूसरे को एथेन्स की मदद था। पहले को तो फिलिप ने मीठी मीठी बातों से समझाकर तथा कुछ रिश्वत देकर चुप कर दिया; पर दूसरे

के साथ युद्ध करके उसने उसकी खूब खबर ली। इस युद्ध में बहुतेरे एथीनियन उसकी कैद में आये। उन कैदियों को उसने बड़े सन्मान के साथ रक्खा; और कुछ भी दंड न लेकर उसने उन्हें छोड़ दिया। एथेन्स पहुँच कर उन लोगों ने फिलिप की बड़ी प्रशंसा की। एथेन्स की सरकार ने भी अपने वकील फिलिप के पास भेजकर उससे मित्रता कर ली।

इस समय एथेन्स-निवासियों की रहन-सहन में पहले की अपेक्षा बड़ा अंतर पड़ गया था। पहले प्रत्येक पुरुष को सरकारी सेना में स्वयंसेवक के तौर पर रहना ही पड़ता था; पर अब सेना में सिर्फ नौकरों की ही भरमार थी। ये सैनिक चाहे जिस देश के निवासी होते थे; और केवल द्रव्य के लिए नौकरी करते थे। उनमें न आत्माभिमान था और न एथेन्स पर कोई विशेष भक्ति थी। एथेन्स में इस समय प्रायः ऐसे ही लोग थे कि जो न्यायालय में अपनी सम्मतियां देने के लिए जाते थे, और इस काम में उन्हें जो कुछ थोड़ा-बहुत भत्ता मिल जाता था उसी से संतुष्ट हो आलसी बन कर वे घर पर बैठे रहते थे। इनके अतिरिक्त जो ग़रीब थे उन्हें सरकार से सहायता मिलती थी, अतएव निठल्ले रहने की उनकी भी बान पड़ गई थी।

लोग अपने हाथ से कोई उद्योग-धंधा नहीं करते थे। उनके सारे काम गुलामों के द्वारा होते थे। इन कारणों से, और सेना में भाड़े के सिपाहियों की भरमार होने से, देश में चारों ओर दरिद्रता छा गई थी। जब युद्ध बंद हो जाता था तब समुद्र पर तथा देश में चोरों का बड़ा उपद्रव होता था सारी ग्रीक रियासतों की सेना उस समय डाकू और लुटेरे

का काम करती थी। पहले जिन पुरुषों के हाथ में राज्य की बागडोर रहा करती थी वे स्वयं योद्धा होते थे। पर अब सेनेट में अधिकांश ऐसे ही मेम्बर भरती होते थे जो युद्ध कला के नाम से शून्य रहते थे। साथ ही सेना के अधिकारी भी सेनेट के कार्यों को न जानते थे। राज्य के प्रमुख लोगों में सैनिक बनने की अपेक्षा वक्ता बनने की लालसा अधिक बढ़ती जाती थी। इस समय वक्तृत्व कला का महत्व बहुत बढ़ा हुआ था; और वह विद्वत्ता का प्रधान अंग समझी जाती थी। जलसेना की पद्धति भी पहले से अब बहुत बिगड़ गई थी, जिससे बड़ी हानि हुई। पहले जलसेना में नौकरी करना धनवानों का कर्तव्य समझा जाता था; पर अब वे अपने बदले में दूसरे आदमी भी दे सकते थे; परन्तु जहाजों का वर्ष भर का पूर्ण व्यय चूंकि उन्हीं के मत्थे रहता था, अतएव वे, जहां तक बनता, अल्प वेतन के अधिकारी जहाजों पर रखते थे। सारांश, क्या स्थलसेना; और क्या जलसेना, दोनों की बड़ी शोचनीय दशा थी। सच तो यह था कि, एथेन्स में अब पहले की शूरता ही नहीं रह गयी थी। लोग भोग-विलास और आलस्य के दास बन गये थे।

ग्रीक राज्यों की यह दशा स्वाभाविक ही फिलिप के लिए बड़ी अनुकूल हुई। पर उस बुद्धिमान पुरुष ने उतावली नहीं की। जब तक उसे अपनी सफलता का निश्चय नहीं हुआ एथेन्स को उसने घमड में चूर रहने दिया। पर अपना उद्योग उसने बड़ी खूबी के साथ जारी रखा। उसके राज्य में समुद्र का किनारा बिलकुल नहीं था। अतएव उसकी बड़ी इच्छा थी कि, आंफिपोलिस बंदर उसके अधिकार में आ जाय। यह

बंदर व्यापार के लिये बड़े सुभीते का था। इसके सिवा वहां के जङ्गलों में जहाजों के लिए उपयोगी लकड़ी भी बहुत थी। अतएव आंफिपोलिस से लड़ने के लिए उसने बहुत जल्द एक कारण भी ढूंढ़ लिया। उसने एथेन्स-सरकार से कहा कि, आंफिपोलिस बन्दर पहले तुम्हारे आधीन था; पर अब नहीं है, सो यदि तुम मुझसे कहो, तो मैं उसे जीतकर फिर तुम्हें दे दूं। एथेन्स सरकार उसकी बातों पर विश्वास कर, उसके चक्कर में आगई, और फिलिप की कार्यवाही में उसने कुछ दखल न दिया। फल यह हुआ कि, उसने आंफिपोलिस को जीतकर मासिडोनिया के राज्य में शामिल कर लिया। और एथेन्स सरकार को टकासा जवाब दे दिया कि, इस शहर को जब मैंने जीता तब वह एथेन्स के अधिकार में न था, अतएव यदि मैं अब उसे अपने अधिकार में रक्खूं, तो मैं समझता हूं कि, उससे एथेन्स की कोई हानि नहीं है। फिलिप ने आंफिपोलिस को अपने अधिकार में कर तो लिया, पर उसने उसकी प्रजासत्ताक राज्य-पद्धति में कुछ परिवर्तन नहीं किया।

आंफिपोलिस के विजय के पश्चात् शीघ्र ही थेसलीवासियों ने फिलिप की सहायता चाही। थसली की सारी राजसत्ता तीन अन्यायी अधिकारियों के हाथ में थी। वे, जैसा जी चाहता; वैसा अत्याचार प्रजा पर करते थे। फिलिप थेसली गया, और उन अन्यायी अधिकारियों को पदच्युत करके थेसली को स्वतन्त्र कर दिया। इस उपकार के बदले में थेसली-वासियों ने अपनी वसूली में से कुछ कर उसे भी देना स्वीकार किया और अपनी जहाजी सेना उसके उपयोग के लिए

दी। आगे चल कर आलिंथियन लोगों ने भी उसका आश्रय सम्पादन किया। थ्रेस प्रान्त के अनेक प्रदेशों को उसने जीता। उन प्रदेशों में सुवर्ण की अनेक खानें थीं। वहां उसने एक नया नगर बसाया और उसका नाम फिलिप रक्खा। उसने अपनी फौजी-छावनी भी वहां रख दी।

थेसली प्रान्त का प्रबन्ध करने के बाद उसने एपिरस के राजा की पुत्री आलिंपियास से अपना विवाह किया। एपिरस राज्य थेसली प्रान्त की सीमा पर ही था। जब कि फिलिप थ्रेस प्रान्त में बढ़ रहा था तब पेला के मुकाम पर, सन् ईसवी के ३५६वें वर्ष पहले उसे पुत्ररत्न का लाभ हुआ। यही पीछे एलेक्जेंडर या सिकंदर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इस समय एथंस और होड्स द्वीप तथा अन्य प्रान्तों में निरर्थक युद्ध जारी था। ये प्रदेश नाममात्र को एथेन्स के अधीन थे, परन्तु एथंस को उनसे कर मिलता था। दो वर्ष तक यह युद्ध होता रहा और अन्त में एथेन्स को होड्स, कास, कियास और बायज़ांटियम, नामक प्रदेशों के अपने सारे स्वत्व छोड़ देने पड़े। यह युद्ध इतिहास में "पारस्परिक युद्ध" के नाम से प्रसिद्ध है।

इस बीच में ग्रीस देश में फिर एक बड़ी भारी लड़ाई छिड़ गई, जिससे फिलिप के मनोरथ को अच्छी पुष्टि मिली। तथापि उसने बहुत समय तक अपनी तटस्थ वृत्ति नहीं छोड़ी; यह युद्ध इतिहास में 'धार्मिक युद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है। युद्ध का मूल कारण यह था कि डेल्फाय के मन्दिर की व्यवस्था किसके आधीन रहे; थीब्स के या फोसिस के? बात यह थी कि, फोसिस रियासत में 'सिह्रायन' नामक एक

मैदान था। वह फोसियनों के अधिकार में था। उससे वे खूब फसल पैदा करते थे, जिससे उन्हें बड़ा लाभ होता था। थीब्स के लोगों से यह न देखा गया। उन्होंने कहा कि यह मैदान डेल्फाय के मन्दिर का है। अतएव इस पवित्र प्रदेश पर निज के लिए फसल पैदा करके फोसियनों ने देवता का घोर अपमान किया है। कहना नहीं होगा कि, उनका यह कथन बिलकुल व्यर्थ था। वे अपने कथन के समर्थन में किसी प्राचीन दन्तकथा का प्रमाण देते थे; पर उसका कुछ मूल्य न था। वे पूरी तरह से साबित नहीं कर सकते थे कि यह जगह उक्त मन्दिर की ही है। पर राज-सभा ने आज्ञा दे दी कि, इस स्थान पर अब फोसियन खेती न किया करें, और अब तक उन्होंने जो किया उसके लिए वे दण्ड दें। फोसियन लोगों ने इस आज्ञा का पालन नहीं किया, इससे युद्ध आरम्भ हो गया। फोसिस को स्पार्टा की मदद थी; और थीब्स का सहायक थेसली था। यह युद्ध ई० स० के ३५७वें वर्ष पहले आरम्भ हुआ।

फिलोमिलस नामक एक धनवान महाशय फोसिस का सेनापति था। उसने डेल्फाय का मंदिर अपने अधिकार में ले लिया। इस पर थीब्स-वासियों ने बड़ा कोलाहल मचाया; और सारी ग्रीक रियासतों से पुकार की कि "देखो, फोसियनों का यह पाप!" इधर फिलोमिलस ने युक्तिपूर्वक डेल्फाय के देवता से अपने अनुकूल आज्ञा प्राप्त करके यह प्रकट किया कि, डेल्फाय के मंदिर की रक्षा करने का अधिकार केवल फोसियनों को है। इसके बाद वह दो वर्ष तक बड़ी शूरता से लड़ता रहा। अन्त में इसी लड़ाई में वह मारा

गया उसके बाद, उसके स्थान पर, उसके भाई ओनोमार्कस की नियुक्ति हुई।

फिलोमिलस ने वचन दिया था कि, डेल्फाय के मंदिर की ज़ायदाद पर वह हाथ नहीं लगावेगा, पर थोड़ा बहुत माल वहां से उसने मार ही लिया; और उसके भाई ने तो डेल्फाय की सम्पत्ति से ही अपनी सेना का वेतन चुकाया; और उसके सहायक एथेन्स तथा स्पार्टा के लोगों ने भी उस पवित्र धन के अपहरण करने में कमी न की।

बहुत समय तक फिलिप इस युद्ध में शामिल न हुआ। उसका ध्यान दूसरी ही ओर था। वह अपनी सत्ता बढ़ाने की धुन में लगा हुआ था। उसने एथीनियन लोगों का एक बन्दर फिर अपने अधिकार में कर लिया, और फोसिस पक्ष के एक योद्धा को, जो थेसली प्रांत में प्रमुख था, पराजित कर थेसली में अपनी सत्ता बढ़ाई। तदनन्तर, थ्रेस, इलिरिया, और मासिडोनिया के अनेक जंगली राज्यों को अपने अधिकार में करके उसने अपने राज्य का विस्तार बढ़ाया। साथ ही उसने बहुत से नये जहाज बनवा कर अपनी नाविक शक्ति भी बढ़ाई। मासिडोनिया प्रान्त में बड़े बड़े सरदारों के घराने थे। उन्हें अपने वश में करने के लिए, उसने उनके होनहार लड़कों को शिक्षा के हेतु, अपने दरबार में रख लिया। उन्हें वह राजनैतिक, युद्ध-सम्बन्धी, ग्रीक-साहित्य, तत्वज्ञान आदि सब प्रकार की शिक्षा दिलवाता था। इस प्रकार से वह शिक्षित तथा कुलीन सरदारों को अपने पास रखता था। उसने आघोषित कर दिया था कि, इस रीति से शिक्षित हुए बिना राज्य के ऊंचे ऊंचे पद किसी को न मिलें।

सोलहवां अध्याय।

फिलिप की जीत।

(ई० स० के ३५७ से ३३६ वर्ष तक।)

ग्रीस देश में जब यह धार्मिक युद्ध आरम्भ हुआ, उसी समय के लगभग एथेन्स में डेमास्थेनिस नामक एक प्रसिद्ध वक्ता रहता था। उसका पिता तलवार बनाने का व्यवसाय करता था। इस व्यवसाय में उसने बहुत धन कमाया था। वह सारा धन मरते समय अपने पुत्र को दे गया। पर उस समय पुत्र की अवस्था केवल सात वर्ष की होने के कारण उसने बालक और उसकी ज़ायदाद की रक्षा करने के लिए तीन पालकों की नियुक्ति कर दी। परन्तु इन पालकों ने पूरा विश्वासघात किया; और उसका सारा द्रव्य फूक डाला। यहां तक कि जब लड़का वयस्क हुआ तब उसे उदरपोषण के लिए कोई न कोई व्यवसाय करने की आवश्यकता जान पड़ी। उसने वक्तृत्व कला का ही अभ्यास किया, और आज कल जैसे वकील-बैरिस्टर काम करते हैं, वैसे ही वह भी कार्य करने लगा। कहते हैं, पहले वह सभाओं में बोलते हुए घबड़ाता था, रुक रुक कर भाषण करता था; और उसे अपने कंधे बार बार उठाने की भी बुरी आदत थी; पर उसने परिश्रम करके अपने सारे दोष दूर कर दिये, और ऐसा अच्छा वक्ता बन गया कि, वह तत्कालीन वक्ताओं और राजनीतिज्ञों का शिरो-

मणि समझा जाता है। उसकी कीर्ति आज भी अजर-अमर है।

डेमास्थेनिस ने, वयस्क होने पर, अपने एक संरक्षक पर, उसके विश्वासघात के लिए, अभियोग चलाया, और स्वयं उसकी पैरवी की। उसने अपना पक्ष ऐसे अच्छे ढँग से समर्थन किया कि, प्रतिवादी पर सरकार ने दस टैलेंट, अर्थात् लगभग पचास हज़ार रुपया दण्ड किया। इस मामले से उसका यश खूब फैल गया। इसके बाद वह राज्य प्रबन्ध-कारिणी सभा में भाषण करने लगा, और उसकी गणना एथेन्स के नेताओं में होने लगी।

एथेंस में डेमास्थेनिस ने एक बड़ा भारी काम किया। वह यह कि, उसने अपने प्रभावशाली भाषण के द्वारा सब लोगों को यह जता दिया कि मासिडोनिया का राजा फिलिप धीरे धीरे अपनी महत्वाकांक्षा बढ़ा रहा है, और जान पड़ता है, आगे चल कर वह सारा ग्रीस देश व्याप्त कर लेगा। अतएव उसका प्रतीकार करने के लिए सब ग्रीक रियासतों को, और विशेषतः एथेंस को, कमर कस कर तैयार रहना चाहिए। इस विषय पर उसने जो व्याख्यान दिये वे फिलिपिक्स के नाम से प्रसिद्ध हैं; और आज कल जो वक्तृता पाई जाती है उसमें वे उत्कृष्ट नमूने माने जाते हैं। अस्तु। एथिनियन सरकार के कुछ टापू फिलिप ने लूट लिये, और यूबिया के बन्दर से उसने एथेंस के कुछ भरे हुए जहाज भी पकड़े। इससे आलिंथियन लोगों को यह भय हुआ कि, अब फिलिप हम पर भी चढ़ाई करेगा। इस लिए उन्होंने फिलिप की सन्धि भंग करके एथेंस से सन्धि की, और ऐसी तैयारी कर रखी कि मौका पड़ने पर एथेंस उन्हें सहायता दे। इतने में फिलिप

ने आलिंथियन लोगों से युद्ध शुरू कर दिया। उनके अनेक शहरों पर कब्ज़ा करके अन्त में आलिंथस को भी उसने घेर लिया। इसके बाद आलिंथिया की राज्यमंडली के दो सभासदों को घूस इत्यादि देकर उसने अपनी ओर मिला लिया; और उनके विश्वासघात का उपयोग करके फिलिप ने आलिंथिया शहर पर भी अपना अधिकार कर लिया, वहां के लोगों को पकड़ कर वह मासिडोनिया को ले गया; और उनको बहुत बुरी तरह से अपमानित कराया। उन लोगों ने फिलिप से जब यह शिकायत की कि, अधिकारी लोग हमारे साथ बड़ा बुरा बर्ताव करते हैं तब उसने कहा, "हमारे लोग बिलकुल अशिक्षित और भोलेभाले हैं, धूर्तता का बर्ताव उन्हें बिलकुल मालूम नहीं है। जैसा होगा वैसा ही वे बर्ताव करेंगे।"

फिलिप ने आलिंथस शहर को बरबाद करके वहां के लोगों को गुलाम की तरह बेच डाला। उनकी ज़मीन लेकर अपने सैनिक अधिकारियों को बांट दी। इससे मासिडोनिया प्रान्त और समुद्र के बीच का समग्र द्वीपकल्प उसके अधिकार में आ गया; और उसका राज्य खूब बढ़ गया। थेसली की सीमा पर डायम नामक एक शहर था। वहां उसने देवी के नाम से बड़ा उत्सव किया; और उपर्युक्त विजय के उपलक्ष में बड़े ठाट-बाट के साथ जुलूस निकाला।

कुछ दिनों बाद एथेन्स के वकील पेला नामक मुकाम पर फिलिप के पास गए; और एथीनियन कैदियों को छोड़ देने के लिए निवेदन किया। फिलिप ने कहा, "एथेन्स से झगड़ा करने की हमारी बिलकुल इच्छा नहीं है। कुछ भी हो, उसके साथ हम मित्रता ही रखेंगे।" यह कह कर उसने अपने तीन

प्रतिनिधि संधि करने के लिए एथेन्स भेजे। ये प्रतिनिधि जिस दिन एथेन्स पहुँचे उस दिन वहां डायोनिसिक नामक उत्सव हो रहा था। शहर में बाहर के लोगों की बड़ी भीड़ था। लोग आमोद-प्रमोद में खूब मग्न थे। ऐसे अवसर पर वहां यदि कोई बाहरी प्रतिनिधि आ जाते थे तो उनको किसी बड़े आदमी के घर ठहरा कर उनका सत्कार किया जाता था। इसी रीति के अनुसार तीनों प्रतिनिधियों को डेमास्थेनिस अपने घर ले गया; और उनका बड़ा आदर-सत्कार किया, और दोनों पक्षों में सन्धि हो गई। यह सन्धि सन् ईसवी के ३४६वें वर्ष पूर्व हुई।

इस सन्धि के बाद बहुत जल्द फिलिप ने थ्रेस प्रांत को जीत लिया, जिससे हेलेस्पांट समुद्र के किनारे का महत्वपूर्ण स्थान उसके अधिकार में आगया।

इधर धार्मिक युद्ध जारी ही था। फिलिप उसमें अभी तक नहीं पड़ा था। वह तटस्थ रह कर मौका देख रहा था, जो उसे बहुत जल्द मिल गया। वह थर्मापिली की घाटियों से अपनी सेना लेकर फोसिस प्रदेश में उतरा। वहां थीब्स की सेना भी उससे आकर मिल गई। पर फोसियन शीघ्र ही उसकी शरण आगये। नेताओं ने देश छोड़ कर बाहर जाने की आज्ञा मांगी, सो उन्हें मिल गई। शहर के शेष निवासियों ने अपने लिए कुछ भी न रखते हुए सारा शहर उसके हवाले कर दिया और स्वयं भी उसके अधीन होगये। फिलिप ने इस विषय पर विचार करने के लिए कि, उसके साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, आंफि-क्टियोनिक नामक सभा की। उसमें यह निश्चय हुआ कि लोग अपने सारे अस्त्र शस्त्र और घोड़े फिलिप के हवाले कर दें।

आवी को छोड़ कर शेष सारे नगर नष्ट कर दिये जावें; और लोग जाकर भिन्न भिन्न गांवों में रहें; एक गांव में पचास से अधिक कुटुम्ब न रहें। इसके अतिरिक्त डेल्फाय की संपत्ति, जो फोसियन लोगों ने हरण की थी, उसका मूल्य दस हजार टैलेंट आंका गया, जिसके लिए यह तै हुआ कि जब तक पूरी रकम न आजावे, प्रति वर्ष साठ टैलेंट दंड देते जावें। आंफि-क्टियोनिक सभा में उसके बैठने का स्वत्व छीन कर मेसीडो-नियन लोगों को दिया, साथ ही यह भी निश्चय किया कि, मासिडोनियन लोग भी ग्रीक ही समझे जावें। पायथियन, खेल में अग्रस्थान फिलिप को दिया गया; और उसने आंफि-क्टियोन सभा में स्वयं आकर बैठना आरम्भ कर दिया।

इसके बाद उसने सारे ग्रीसदेश, विशेषतः पिलापोनेसस प्रान्त पर अधिकार जमाने का प्रारम्भ किया। पिलापोनेसस के लोगों को उसने यह दिखलाया कि, 'मैं स्पार्टा से तुम्हारी रक्षा करता हूं'। पर उसकी यह धूर्तता एथेन्स के लोगों ने जान ली। उन्होंने पिलापोनेसस के लोगों का भ्रम दूर करने के लिए डेमास्थेनिस को भेजा। पर उसकी वक्तृताओं से कुछ लाभ न हुआ। फिलिप को जो नये बन्दर मिले थे वहां उसने जहाज और अस्त्र शस्त्र बनाने के कारखाने खोल दिये; और थ्रेस प्रान्त के अंतर्भाग में उसने स्थायीरूप से फौजी छावनी कायम कर दी।

इस प्रकार सब तैयारी होजाने पर फिलिप ने अपना सच्चा स्वरूप प्रकट किया। ई० स० के ३३८ वर्ष पहले उसने बड़ी भारी सेना के साथ खुल्लम-खुल्ला ग्रीस देश पर चढ़ाई कर दी। साथ में उसका लड़का एलेक्ज़ेंडर भी था। इस राज-

पुत्र को युद्धकला और राजनीति की उत्कृष्ट शिक्षा दी गई थी। इसकी अवस्था उस समय १८ वर्ष की थी; और सेना में उसे एक अधिकारी का पद मिला था।

एटिका प्रांत पर फिलिप की चढ़ाई का समाचार सुनते ही एथेंस में बड़ी खलबली मच गई। बाज़ार की दूकानें बन्द करके प्रायटेन ने सर्वसाधारण लोगों की एक सभा करने के लिए शीघ्र ही आज्ञा दी। बहुत जल्द सब लोग जमा हो गये। उपर्युक्त आपत्ति का समाचार चोबदार ने ज़ोर से पुकार कर सब को सुनाया; और तुरही बजा कर कहा, "इस सम्बन्ध में जिन्हें कुछ कहना हो वे आगे आवें।" डेमास्थेनिस उठा; और एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर यह सम्मति दी कि, निराश मत होओ, प्रतिनिधि भेज कर शत्रु के साथ लड़ने के लिए सहायता मांगो। डेमास्थेनिस की यह सम्मति लोगों को पसंद आई और स्वयं वही प्रतिनिधि बना कर थीब्स भेजा गया। वहां जाकर उसने अपनी वक्तृत्वशक्ति से थीबनों का हृदय अपनी ओर आकर्षित करके फिलिप के साथ की हुई संधि तुड़वा दी; और ग्रीस की स्वाधीनता की रक्षा के लिए उनकी सहायता प्राप्त कर ली। अन्य रियासतें भी आगे बढ़ीं। एथीनियन, कारिंथियन, आसेयन, यूबियन आदि सब छोटे बड़े राज्य इस कार्य के लिए एक हो गये। कुल तीस सहस्र सेना एकत्र हुई। बियोशिया प्रान्त के चिरोनिया नामक स्थान पर, पहली ही लड़ाई में, सारा फैसला होगया। विजयलक्ष्मी ने प्रसन्न होकर फिलिप के गले में जयमाला डाली; और ग्रीक राष्ट्र की स्वतंत्रता सदैव के लिए अस्त होगई (सन् ईसवी के ३३८ वर्ष पूर्व)।

इस पराजय से लोगों को जो दुःख हुआ, वह कल्पनातीत है। एथोनियन लोगों ने समझा कि बस अब फिलिप आया, और हम लोगों के प्राण लिये। इस आशंका से वे अपने नगर का प्रबन्ध करने लगे। पर इसकी कोई आवश्यकता न थी। फिलिप ने एथेन्स निवासियों के साथ बड़ी ही सौम्यता से बर्ताव किया। कैदियों को उसने बिना कुछ दण्ड लिए ही छोड़ दिया और एथोनियन लोगों को नाम मात्र की स्वतंत्रता देकर उनसे मित्रता कर ली। पर थीब्स से उसने ऐसा व्यवहार नहीं किया; किन्तु उसकी सारी स्वतंत्रता हरण करके उसने वहां अपनी सेना रख दी।

इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रीस को जीतकर भी फिलिप संतुष्ट नहीं हुआ। उसके हृदय में ईरान देश को विजय करने की बड़ी भारी उत्कंठा थी। इसके लिए उसने कारिंथ में एक बड़ी भारी सभा की। उस सभा में स्पार्टा को छोड़कर अन्य सब रियासतों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। उसने सभा में यह प्रस्ताव किया कि एशिया की ग्रीक बस्तियों को ईरान के अधिकारी व्यर्थ के लिए कष्ट देते हैं; इस लिए सब ग्रीक रियासतों को एकत्र होकर ईरान की ख़बर लेनी चाहिये। फिलिप का यह प्रस्ताव सब रियासतों ने स्वीकार किया। इसके बाद यह निश्चय हुआ कि इस बृहद् कार्य के लिए कौन रियासत कितने जहाज़ और कितनी सेना देवे। सेना जमा हो जाने पर फिलिप सारी सेना का मुख्य सेनापति चुना गया। पहले फिलिप ने पिलापोनेसस प्रान्त में प्रवेश करके स्पार्टा के प्रदेश जीत लिये, और स्पार्टा को हरा कर उसे उसने बिलकुल अपने अधीन कर लिया। स्पार्टा का बहुत सा राज्य

लेकर उसे उसने पिलापोनेसस की अन्य रियासतों को दे दिया। इस तरह उसने स्पार्टा का काम तमाम किया।

फिलिप और उसकी रानी आलिंथियास में प्रायः कभी मेल नहीं रहा। अब की बार फिलिप जब मासिडोनिया लौटा तब उसने आलिंथियास का त्याग करके क्लियोपेट्रा से विवाह कर लिया। यह फिलिप के एक सरदार की भतीजी थी। अलेक्ज़ेंडर बड़ा मातृभक्त था। पिता के इस कार्य से वह बड़ा नाराज़ हुआ, और मां को साथ लेकर वह राज्य से चला गया। पहले वह इलिरिया प्रान्त में गया। वहां के निवासी सदैव मासिडोनिया के विरुद्ध बग़ावत किया करते थे। परन्तु फिलिप ने शीघ्र ही पुत्र को समझा बुझा कर पेला में वापस बुला लिया। पहली रानी का भाई एपिरस का राजा था। फिलिप ने उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह करके उसे अपनी ओर मिला लिया। मामा-भांजी का विवाह ग्रीक लोगों में शास्त्रविरुद्ध नहीं माना जाता था।

यह विवाह एपिरस की प्राचीन राजधानी ईज्या (Aegea) में बड़ी धूमधाम के साथ हुआ। फिलिप का यशःसौरभ चारों ओर फैल गया। उस समय उसकी जो प्रतिष्ठा थी, वैसी किसी की न हुई होगी। पर उसका यह सौभाग्य-रवि शीघ्र ही अस्त हो गया। इस विवाह की धूमधाम में पाज़ेनियस नामक एक युवा ने भीड़ से निकल कर राजा के पेट में तलवार घुसेड़ दी; और उसके प्राण ले लिये। इस प्रकार वह अपना काम पूरा करके भागना ही चाहता था कि, रक्षकों ने उसे पकड़ कर मार डाला। इस प्रकार मासिडोनिया का राजा फिलिप २४ वर्ष तक राज्य करके ४७ वर्ष की अवस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ।

सत्रहवां अध्याय।

---:o:---

अलेक्ज़ेंडर दि ग्रेट।

(सन् ईसवी के ३३६-३३२ वर्ष पूर्व)

---:o:---

फिलिप के मरते ही ग्रीस देश में चारों ओर आनन्द छा-गया। एथेन्स में उसकी मृत्यु का समाचार सब से प्रथम डेमास्थेनिस ने सुना। उस समय वह अपनी एकलौती कन्या की मृत्यु के शोक में था। पर उपरोक्त समाचार सुनते ही उसने शोक की पोशाक छोड़ कर सफेद अँगरखा, दुपट्टा और सिर पर फूलों की माला धारण कर ली और आनन्द-पूर्वक यह समाचार लोगों को बतलाने के लिए बाहर आया। लोग भी इस वार्ता को सुन कर बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने मंदिरों में जाकर ऐसा महोत्सव किया जैसे मानो बड़ा भारी विजय प्राप्त किया हो। उन्होंने समझ रक्खा था कि मासिडोनिया का भावी राजा हमें पूर्ण स्वातंत्र्य देगा। पर उनकी यह भूल शीघ्र ही उनकी दृष्टि में आ गई। अलेक्ज़ेंडर बड़ी भारी सेना लेकर ग्रीस में आया और थीब्स तथा अन्य नगरों से कर वसूल करते हुए एथेन्स आ पहुँचा। तब तो एथीनियन लोगों के सारे उत्सव बंद हो गए। अलेक्ज़ेंडर के आगमन से लोगों में इतना आतङ्क छा गया कि, प्रायटेन सभा ने प्रतिनिधि भेज कर अपने अनुचित व्यवहार के लिए क्षमा मांगी। अलेक्ज़ेंडर

कारिंथ में अलेक्ज़ेंडर और डायोजिनिस की भेंट होना असंभव नहीं है। क्योंकि उस समय डायोजिनिस कारिंथ में एक महाशय के पुत्र को शिक्षा देने का कार्य कर रहा था। उस महाशय ने इस साधु को गुलाम की तरह खरीदा था। यह घटना इस प्रकार है:—एक बार डायोजिनिस जहाज पर बैठ कर इज़ीना जारहा था। रास्ते में वह जहाज डाकुओं के हाथ में पड़ गया। डाकुओं ने उसके सब मुसाफ़िरों को क्रीट द्वीप में लाकर गुलाम की तरह बेच दिया। बिक्री के समय डायोजिनिस से किसी ने पूछा, "तू क्या काम कर सकता है?" उसने उत्तर दिया, "मुझे हुकूमत करना आता है, और यदि किसी को शिक्षक की आवश्यकता हो तो वह भी मैं कर सकता हूं।" उसकी यह बात सुन कर कारिंथ के उक्त महाशय ने उसे मोल ले लिया। उसने अपने पुत्र को पढ़ाने का कार्य उसे सौंपा। डायोजिनिस का कार्य उसे इतना अधिक पसंद आया कि, उसने उसे गुलामी से मुक्त कर दिया। फिर भी डायोजिनिस उसी महाशय के यहां रहता था, और इसी अवसर पर उससे अलेक्ज़ेंडर की भेंट हुई।

ग्रीस देश से मासिडोनिया वापस जाकर अलेक्ज़ेंडर ने एशिया पर चढ़ाई करने की तैयारी की। ग्रीस छोड़े उसे अभी बहुत दिन न हुए थे कि, इतने में ग्रीस में यह गप उड़ी कि, अलेक्ज़ेंडर की मृत्यु होगई। यह समाचार सुनते ही थीब्सवासियों ने बलवा मचा दिया; और वहां रहनेवाली अलेक्ज़ेंडर की सेना को भगा देने का प्रयत्न किया। अलेक्ज़ेंडर ने उनकी इस उद्दण्डता का खूब बदला लिया। उसने शीघ्रतापूर्वक थीब्स पर चढ़ाई कर दी। थीब्सियन

लोग किला खाली नहीं करते थे; और न शरण ही आते थे। इस लिए उसने एकदम धावा मार कर किला और शहर दोनों पर अधिकार जमा लिया। हजारों थीब्लियन मारे गये; और कैद हुए। पिंडार नामक एक कवि का घर छोड़ कर सारा शहर धूल में मिला दिया गया। इस कवि के ग्रन्थ अलेक्ज़ेंडर को बहुत पसंद थे। यह कवि पेरिक्लीज़ के समय में हुआ था।

पिता की मृत्यु के दूसरे वर्ष अलेक्ज़ेंडर ने एशिया पर चढ़ाई की। उसने प्रकट किया कि, मैं उन ग्रीक बस्तियों को स्वतंत्र करने जाता हूं, जिन्हें ईरान के राजा ने जीत लिया है। किन्तु उसका भीतरी उद्देश्य दूसरा ही था। उस समय ईरान का राज्य पूर्व की ओर भारतवर्ष से लगा कर पश्चिम में इजिप्ट तक फैला हुआ था। यह सब राज्य जीत कर अपने अधिकार में लाना, अलेक्ज़ेंडर की चढ़ाई का मुख्य हेतु था। ईरान के इस राज्य में सूज़ा, पर्सेपोलिस, एक्बाटना, डमास्कस, बाबिलोन आदि अनेक प्रसिद्ध शहर थे। इस समय ईरान की गद्दी पर तीसरा डरायस राजा था। यह अपने सौंदर्य और सुशीलता के लिए प्रसिद्ध था। राज्य-विस्तार को देखते हुए इसकी शक्ति बहुत थोड़ी थी। इसके पास सेना बहुत थी, पर उसका प्रबन्ध इतना खराब था कि अलेक्ज़ेंडर की सेना के सामने उसका टिकना कठिन था। हेलेस्पांट के किनारे से एशिया के भीतर, तीस मील पर ग्रानिकस नदी के किनारे बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसमें अलेक्ज़ेंडर की जीत हुई। पर उसके खास संरक्षकों में से पच्चीस सिपाही मारे गये। अलेक्ज़ेंडर ने बड़ी धूमधाम से उनकी अन्त्य क्रिया की; और प्रसिद्ध मूर्तिकार लिसियस से

उनकी कांसे की मूर्तियां बनवा कर उन्हें डायम में स्थापित किया। ग्रानिकस की लड़ाई में अलेक्ज़ेंडर को लूट में बहुत सा सामान मिला, जिसमें से तीन सौ कवच उसने एथेन्स को भेजे। अपनी माता ओलिंपियास के लिए उत्तम थालियां और तम्बुओं के अच्छे अच्छे सामान भेजे।

अलेक्ज़ेंडर यहां से फिर सार्डिस गया। सार्डिस लिडिया के राजा क्रीसस की राजधानी थी। सार्डिस के लोगों ने नगर के द्वार खोल दिये और अलेक्ज़ेंडर को भीतर ले जा कर उसके शरणागत हुए। यहां उसने अपनी चढ़ाई का मुख्य उद्देश्य पूरा किया—अर्थात् ग्रीक बस्तियों को ईरान की अधीनता से मुक्त करके उन्हें स्वतंत्र कर दिया; और उन्हें उनके सारे स्वत्व दिला दिये। इस तरह उसने अपने विलक्षण पराक्रम से एक वर्ष के भीतर ही भीतर समस्त एशिया-माइनर अपने अधीन कर लिया।

इसके पश्चात् अलेक्ज़ेंडर गोर्डियन गया। गोर्डियन फ्रिज़िया की प्राचीन राजधानी थी। फ्रिज़िया देश सायरस ने जीता था। गोर्डियन के किले में एक गाड़ी थी, उसकी धुरी इस युक्ति से बांधी गई थी कि, उसे कोई खोल नहीं सकता था। रस्सी का सिरा ही किसी को नहीं मिलता था। इस गाड़ी के विषय में पहले एक विचित्र दन्तकथा प्रचलित थी। कहते हैं कि, एक युद्ध के समय किसी ने यह भविष्यद्वाणी कही थी कि, एक गाड़ी पर बैठ कर एक राजा इस शहर में आवेगा; और वह चारों ओर शान्ति स्थापित करेगा। कुछ दिनों बाद मीडास नामक एक किसान अपनी गाड़ी में बैठ कर गोर्डियन में आया। उसे लोगों ने राज्यपद दिया। उस

समय उसने अपनी वह गाड़ी देवता को अर्पण कर दी। बस, तभी से यह गाड़ी उस मन्दिर में रखी थी। उसकी गांठ के विषय में यह वार्ता प्रचलित थी कि, जो कोई इस गांठ को खोलेगा, वही सारी एशिया का अधिपति होगा। अलेक्ज़ेंडर ने जब यह वार्ता सुनी तब उसने गांठ खोल कर स्वयं उस भविष्यद्वाणी को सत्य कर दिखलाने का निश्चय किया। वह बहुत जल्द गाड़ी के पास गया; और अपनी तलवार से गांठ को काट दिया, कोई कहते हैं, गाड़ी और धुरी को जोड़ने-वाला एक लम्बा खीला था, उसे अलेक्ज़ेंडर ने पकड़ कर खींच दिया, जिससे गांठ आप ही खुल गई।

अलेक्ज़ेंडर को रोकने के लिए डरायस ने बड़ी भारी सेना एकत्र की और पूर्व ओर के राजाओं की चाल के अनुसार बड़े ठाट-बाट के साथ अलेक्ज़ेंडर से सामना करने के लिए कूच किया। उसका तम्बू क्या था, एक बड़ा बंगला ही था। उस पर सूर्य की प्रतिमा बनी हुई थी। क्योंकि ईरानी लोग सूर्योपासक थे। वह एक बड़े सुन्दर रथ पर बैठ कर चलता था। उसके रथ के आगे ज्योतिषी और पुजारी चांदी की कुंडियों में जलती हुई अग्नि लेकर चलते थे। उस अग्नि के साथ एक ही जाति के ३६५ नवयुवक पुजारी रंगीन वस्त्र धारण किये हुए चलते थे। रथ के साथ संरक्षक सेना चलती थी। उसके पीछे राजमाता, रानी और लड़के-बच्चे अपने अपने परिवार-सहित रथ पर बैठकर चलते थे। फिर तम्बू में लगाने के सोने चांदी के बहुमूल्य सामान, जवाहिर, सुगन्धित द्रव्य और अन्य मूल्यवान पदार्थों की गाड़ियां चलती थीं। राज्य के बड़े बड़े सरदार, अपने अपने परिवार और

लवाज़मे सहित उनके पीछे पीछे चलते थे। पर इस युद्ध के समय सब मूल्यवान् पदार्थ और दूसरे कुटुम्ब, रक्षा के लिए, डमास्कस भेज दिये गये थे; केवल राजकुटुम्ब साथ में था। अस्तु।

दोनों सेनाओं की मुठभेड़ इसस नामक मुकाम में हुई। युद्ध का फैसला होने में कुछ अधिक विलम्ब न लगा। ईरानी लोग पूर्ण रूप से पराजित हुए। डरायस, थोड़े से लोगों के साथ, जान बचा कर भाग गया। उसका सारा कुटुम्ब, तम्बू और जवाहिर इत्यादि अलेक्ज़ेंडर के हाथ लगे। डरायस की रानी स्टाटीरा बड़ी सुन्दर थी। उससे अलेक्ज़ेंडर ने कहला भेजा कि, "आप को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने पावेगा। आपके राजमहल में जैसी प्रतिष्ठा आपकी थी वैसी ही यहां भी रहेगी।" इतिहासकार लिखते हैं कि अलेक्ज़ेंडर अपने इन वचनों का अक्षरशः पालन किया।

इस विजय के पश्चात् डमास्कस के जवाहिर इत्यादि मूल्यवान् पदार्थों पर अधिकार करने के लिए अलेक्ज़ेंडर ने पार्मिनियोन नामक सरदार को भेजा। डमास्कस के अधिकारी ने शहर के दरवाजे खोल कर पार्मिनियोन को भीतर ले लिया; बस उस समय ऐसी कुछ गड़बड़ी मची कि उसमें से बहुत सा सामान ख़राब होगया।

इधर अलेक्ज़ेंडर फिनिशिया प्रान्त में गया। यह प्रान्त जन और धन दोनों से भरपूर था। जहाज़ों का चूंकि वहां अच्छा सुभीता था, अतएव यह मुकाम अलेक्ज़ेंडर के लिए विशेष महत्व का था। फिनिशिया प्रान्त के टायर और सिडोन नामक नगरों की सम्पत्ति, व्यापार और कारखाने

सब जगह प्रसिद्ध थे। सिडोन नगर तो एकदम अलेक्ज़ेंडर के अधिकार में आगया; पर टायर के लोग डरायस का पक्ष लेकर लड़ने लगे। टायर नगर समुद्र से कुछ दूर एक द्वीप पर बसा हुआ था। बीच में किनारे तक गहरा समुद्र था। अलेक्ज़ेंडर के पास जहाज अधिक न थे। इस लिए उसने लेबानन के जंगल से लकड़ी कटा कर वहां तक पुल बनावाया और उस पर से अपनी सेना ले जाकर नगर को चारों ओर से घेर लिया। उस समय को देखते हुए अलेक्ज़ेंडर का यह कार्य निस्सन्देह बड़े पराक्रम का है। कारीगर लोग जब कि समुद्र का तट तैयार कर रहे थे, अलेक्ज़ेंडर ने लकड़ी की मीनारें खड़ी करा कर उनकी वहां रक्षा की थी। अस्तु। पुल को तोड़ने के लिए टायर-निवासियों ने बड़े प्रयत्न किये। अन्त में उन्होंने आग के जहाज भेज कर बना-बनाया पुल जला ही डाला। परन्तु अलेक्ज़ेंडर ने होड्स, साइप्रेस, आदि स्थानों से जहाज मँगा कर फिर पुल तैयार कराया; और सात महीने युद्ध जारी रख कर अन्त में टायर शहर को जीत ही लिया।

टायर-निवासियों को घोर दण्ड देकर अलेक्ज़ेंडर ने अपने कष्टों का बदला चुकाया। बहुतेरे मनुष्य तो युद्ध ही में मार डाले गये; और लगभग तीस हजार, जो कैद होगये थे, गुलाम बना कर बेच दिये गये।

डरायस ने दो बार अलेक्ज़ेंडर से संधि के लिए प्रार्थना की; पर उसने स्वीकार नहीं किया और अगले युद्ध के लिए तैयारी की। वह अपनी सेना को साथ लेकर इजिप्ट गया। वहां किसी ने उसकी बाट न रोकी। इजिप्शियन लोग एकदम उसकी शरण आगये। इजिप्ट के पुरातन फ़ारो राजाओं की

राजधानी मेंफिस में अलेक्ज़ेंडर ने एक बड़ा उत्सव किया। जहां इस समय कायरो है वहीं उस समय मेंफिस शहर था। इजिप्ट में उस समय समुद्र के किनारे पर कोई अच्छा शहर न था। सिकन्दर ने यह सोच कर कि, ऐसा शहर बस जाने से यूरप और एशिया का व्यापार इजिप्ट में खूब चमकेगा, नील नदी के मुहाने पर अलेक्ज़ेंड्रिया नामक शहर ग्रीक लोगों को लाकर बसाया। थोड़े ही काल में यह शहर संसार के मुख्य व्यापारिक स्थानों में अग्रगण्य होगया। अस्तु। अन्त में मेंफिस और पेल्यूज़ियम नामक स्थानों पर अपनी फौजी छावनी रख कर सिकन्दर डरायस से युद्ध करने के लिए फिर एशिया लौट आया।

अठारहवां अध्याय।

अलेक्ज़ेंडर दि ग्रेट।

उत्तरार्द्ध।

(ई० स० के ३३२–३२३ पूर्व।)

अलेक्ज़ेंडर के आने पर आवला नामक मुक़ाम पर डरायस के साथ उसका बड़ा भारी युद्ध हुआ। आर्बेला टाइग्रस नदी के तट पर है। इस युद्ध में ईरानी साम्राज्य का फैसला हो गया। इस प्रकार सिर्फ अट्ठाईस वर्ष की

अवस्था में अलक्षेन्द्र ने सम्पूर्ण सभ्य राज्यों को हस्तगत कर लिया।

डरायस की सेना में मध्य एशिया, अफगानिस्तान और भारत की सीमा के शूर, पर जंगली, लोगों की विशेष भरती थी। उसके साथ हाथी और युद्धरथ थे। उसकी सेना अलेक्ज़ेंडर की सेना से अधिक थी। दोनों दल बड़ी शूरता से लड़े, पर ग्रीक सेना विशेष शूर और दक्ष थी, अतएव ईरान का पराभव हुआ, और डरायस का सारा राज्य अलेक्ज़ेंडर के अधिकार में आगया। डरायस हार कर ऐक्बाटना को भाग गया, और अलेक्ज़ेंडर बाबिलोन चला गया। वहां सब बड़े बड़े सरदारों और लोगों ने उसकी अगवानी की; और सारा शहर खज़ाने सहित उसके अधिकार में दे दिया। जन-साधारण ने भी उसका बडा सत्कार किया, और यह भाव प्रकट किया कि, जो हुआ सो अच्छा ही हुआ। जिस मार्ग से वह निकला, लोगों ने चांदी की कुडियों में सुगन्धित द्रव्य जलाये, और उस पर पुष्पवृष्टि की।

इस समय यद्यपि बाबिलोन प्राचीन काल के समान उन्नतावस्था पर न था, फिर भी वह बहुत बडा और धनवान् नगर था। वहां अपार संपत्ति का सचय था। वहा जो सोना-चांदी मिला, उसका थोडा बहुत अश प्रत्येक सिपाही को मिला। अलेक्ज़ेंडर ने क्जक्सिज़ के नष्ट किये हुए मन्दिरों को फिर से बनाने की आज्ञा दी, जिससे वह और भी अधिक लोक-प्रिय होगया।

इसके बाद अलेक्ज़ेंडर डरायस की राजधानी सूजा में गया, और वहां का राजमहल अपने अधिकार में कर लिया।

वहां उसे जैसी सम्पत्ति प्राप्त हुई, वैसी पहले कहीं भी नही मिली थी। भाण्डार-गृह में उसे पच्चीस लाख रुपये की तो केवल बैंगने रंग की उत्तम ऊन ही प्राप्त हुई। यह ऊन यद्यपि दो सौ वर्ष की पुरानी थी, फिर भी वह बिलकुल नवीन के समान उपयोगी थी।

अलेक्जेंडर लूट में मिली हुई उत्तम वस्तुएं अपनी माता और मित्रों को अवश्य भेजता था। इस विषय में एक आख्यायिका है कि, अलेक्जेंडर का लिओनिडास नामक एक गुरु था। छुटपन में उसके यहां पढते समय अलेक्जेंडर ने एक दिन यज्ञकुंड मे सुगंधित द्रव्य कुछ अधिक डाल दिये। इस पर गुरु ने उसे डांट कर कहा, अलेक्जेंडर "सुगन्धित पदार्थों वाले देश जब तू जीतना तब चाहे जितना उन्हें जलाना, पर अभी तो जितना है, उसी से काम चलाना चाहिए।" छुटपन की इस घटना को याद कर अलेक्जेंडर ने सुगंधित द्रव्यों का एक बडा भारी संचय गुरुजी की सेवा में भेज दिया और पत्र में लिखा कि, "देवपूजन के कार्य में अब किसी प्रकार का संकोच न रखियेगा!"

आर्बेला की लडाई के पहले ही ईरान की रानी स्टाटीरा का देहान्त होगया। उसकी अन्त्यविधि अलेक्जेंडर ने बडी धूमधाम से कराई। डरायस की माता सिजिगाबिस और उसके लडकों के लिए सूजा के राजमहल में उत्तम प्रबन्ध करके अलेक्जेंडर ईरानी राजाओं की स्मशान-भूमि पर्सेपोलिस मे गया। वहां ईरान के राजाओं का सिंहासन था। उस पर सुवर्णछत्र के नीचे उसने आरोहण किया। इस अवसर पर उसने अपने सरदारों को एक वृहद् भोज दिया। इस भोज

में मद्यपान का बड़ा प्राबल्य रहा, जिसके वश अलेक्ज़ेंडर ने एक बड़ा ही निन्दनीय कार्य कर डाला। उससे किसी ने कह दिया कि कज़र्किज़स ने एथेन्स शहर को जला दिया था, उसका बदला अब लेना चाहिए। बस फिर क्या था, अलेक्ज़ेंडर स्वयं हाथ में जलती हुई बत्ती लेकर उठा; और अन्य सरदारों ने भी उसका ही अनुकरण किया। फल यह हुआ कि, बात की बात में सारा राजमहल जल कर भस्म होगया। राजमहल के ऊंचे सुन्दर खंभे, सीढ़ियां, नक्काशीदार दो गुम्बज़ अब भी वहां देखे जाते हैं।

डरायस को कैद करने की अलेक्ज़ेंडर को बड़ी इच्छा थी। अतएव वह ऐक्बाटना को गया। वहां उसने सुना कि, डरायस बेक्ट्रिया भग गया। इस पर उसने उसका पीछा किया; और बड़ी कठिनता से उसके साथियों को जा पकड़ा; परन्तु बेक्ट्रिया के अधिकारी बेज़स ने पहले ही डरायस को मार डाला था। अब सिकन्दर के आने का समाचार पाकर बेज़स भग गया; परन्तु डरायस की लाश सिकन्दर को मिल गई। उसमें मसाला इत्यादि भरा कर उसने उसे अंत्यविधि के लिए पर्सेपोलिस भेज दिया। इसके बाद बेक्ट्रिया में प्रवेश करके वहां के तथा आसपास के जङ्गली लोगों को जीतते हुए वह सीधा भारतवर्ष की सीमा तक आ गया। रास्ते में उसे अनेक संकट उठाने पड़े। इधर बेज़स ने "एशिया के राजा" की उपाधि धारण कर ली; परन्तु सिकन्दर ने अन्त में उसे पकड़ कर मार डाला।

इस चढ़ाई में एक बड़ी विचित्र घटना होगई। वह इस प्रकार कि, एक बड़ी ऊंची और दुर्गम पहाड़ी पर एक किला

था। उस पर अरिमेज़िस नामक एक क़िलेदार कुछ लोगों के साथ बड़े बन्दोबस्त से रहता था। आक्ज़ियार्टिस नामक एक अन्य सरदार ने अपनी स्त्री और पुत्री को संरक्षण के लिए उसी क़िले में रख दिया था। क़िले में दो वर्ष के लिए भोजन इत्यादि की सामग्री थी; और ऊपर जाने के लिए एक ही छोटा तंग मार्ग था।

अलेक्ज़ेंडर ने किलेदार से कहला भेजा कि किला हमारे अधिकार में दे दो। इस पर अरिमेज़िस ने हँस कर दूतों से कहा कि, क्या ग्रीकों के पंख हैं? इस उत्तर को सुनकर अलेक्ज़ेंडर ने अपनी सेना में ज़ाहिर किया कि, जो सिपाही पहले किले पर चढ़कर जायगा उसको पचास हजार रुपया पारितोषिक दिया जायगा। इस पर अनेक सैनिकों ने ऊपर चढ़ने का प्रयत्न किया और मृत्यु को प्राप्त हुए। अन्त में कुछ सैनिक बर्फ़ में खूंटे फेंककर उनमें बँधी हुई रस्सियों के द्वारा ऊपर चढ़ गये; और ज्यों ही ऊपर जाकर उन्होंने अपने झंडे फहराये त्योंही अलेक्ज़ेंडर ने अरिमेज़िस के पास दूत भेजकर कहला भेजा कि, "देखो ग्रीकों के पंख हैं या नहीं!" अरिमेज़िस, ग्रीक सैनिकों को किले पर देखते ही, उनकी संख्या पर ध्यान न देते हुए, एकदम अलेक्ज़ेंडर की शरण आगया, किले के सब लोग कैद कर लिये गये, पर अलेक्ज़ेंडर आक्ज़ियार्टिस की पुत्री रोक्ज़ाना का अनुपम स्वरूप देखकर इतना मोहित होगया कि, उसके साथ विवाह कर लिया; और इस हर्ष में उसने सब कैदियों को छोड़ दिया। लड़की का पिता भी प्रसन्न हुआ; और इस तरह वह सारा राष्ट्र आनन्दपूर्वक अलेक्ज़ेंडर के अधिकार में आ गया।

आर्बेला की लड़ाई के बाद छै लड़ाइयों में अलेक्ज़ेंडर ने ईरान का सारा विस्तृत राज्य जीत लिया, इससे कास्पियन समुद्र से सिंधु नदी तक सारा प्रदेश उसके अधिकार में आ गया। पूर्व ओर उसके राज्य की सीमा मध्यएशिया में सीर नदी तक पहुँच गई। सीर नदी के उस पार सिथियन जाति के भ्रमणकारी लोग रहते थे। इसी धावे में उसने कंदहार और हिरात शहर बसाये।

बार बार विजय पाने के कारण सिकन्दर को बड़ा भारी अभिमान हो गया। उसका स्वभाव बिगड़ गया; और वह हठी तथा दुराग्रही बन गया। प्राच्य राजाओं की क्रूरता और विषय-वासना उसके हृदय में प्रादुर्भूत होगई। वह इधर के राजाओं की सी केवल पोशाक ही नहीं पहनने लगा; किन्तु इधर के ठाटबाट और रीति-रवाज भी उसने स्वीकार कर लिये। वह भांति भांति के क्रूर कार्य और अन्याय करने लगा, जिससे उसकी उज्वल कीर्ति में सदा के लिए कालिमा लग गई। उसके अन्याय का एक उदाहरण इस प्रकार है:—पार्मेनियोन नामक उसका एक वृद्ध और अत्यन्त विश्वासपात्र सरदार था। वह एक प्रकार से उसका परम मित्र और मंत्री था। उस वृद्ध महाशय ने अलेक्ज़ेंडर के पिता की ही नहीं, किन्तु उसके आजा तक की, बड़ी भक्ति से सेवा की थी। ऐसे उत्तम पुरुष को अलेक्ज़ेंडर ने विना विचारे मरवा डाला। कारण यह हुआ कि, पार्मेनियोन का पुत्र फिलोटस सवारों का मुख्य अधिकारी था। उस पर यह अभियोग लगाया गया कि, वह उस षड्यंत्र से सम्बन्ध रखता है जो अलेक्ज़ेंडर को मारने के लिए रचा गया था। वह अभियोग अभी

फिलोटस पर सिद्ध न हुआ था, कि सिकन्दर ने उसे मरवा डाला। आगे चलकर वही अभियोग पार्मेनियोन पर भी आया। चाहे अलेक्ज़ेंडर ने उसको सच्चा अपराधी समझा हो; और चाहे इस बात से डरा हो कि वह कहीं अपने लड़के का बदला न ले—जो कुछ हो—अलेक्ज़ेंडर ने एकदम गुप्त हुक्म भेजा कर उस बेचारे वृद्ध का शिरच्छेद करवा डाला। ध्यान में रहे कि, अभी पार्मेनियोन को अपने पुत्र की मृत्यु का समाचार नहीं मिला था; और सिकन्दर ने उसका अभियोग भी उस पर प्रगट नहीं होने दिया था। पार्मेनियोन जिस समय मारा गया उस समय वह पत्र पढ़ रहा था।

इसके बाद शीघ्र ही अलेक्ज़ेंडर स्वयं अपने हाथ लोगों का वध करने लगा। क्लायटस नामक उसका एक मित्र था। उसने अनेक बार सिकन्दर के प्राण बचाये थे, और हाल ही में बेक्ट्रिया प्रान्त का शासनकर्ता नियुक्त हुआ था। एक दिन रात को भोजन के पश्चात् दोनों में किसी बात पर झगड़ा हो गया। पास के लोगों ने अलेक्ज़ेंडर को शांत करने का बड़ा प्रयत्न किया; और क्लायटस से बाहर चले जाने को कहा। इतने में अलेक्ज़ेंडर ने पास के एक सिपाही के हाथ का भाला छीन लिया; और लोग उसका हाथ पकड़ने न पाये थे, कि उसने क्लायटस का काम तमाम कर दिया। ऐसे कार्य अलेक्-ज़ेंडर के समान महापुरुष को शोभा नहीं देते; किंबहुना उसने पहले जो अनेक उदारतापूर्ण सत्कार्य करके कीर्ति प्राप्त की थी, उसमें इन दुष्कार्यों से और कलंक लगा है।

पूर्व ओर अलेक्ज़ेंडर के राज्य की सीमा सिन्धु नदी तक

थी। इसके आगे का प्रदेश यूरोपियन लोगों को उस समय तक बिलकुल ही मालूम न था। सो उसमें प्रवेश करने का अब अलेक्ज़ेंडर ने प्रयत्न किया। पंजाब में पहले-पहल उसने प्रवेश किया। यहां उस समय दो राज्य थे—एक सिंधु से हिडास्पिस (अर्थात् झेलम) तक और दूसरा हिडास्पिस के पूर्व ओर का राज्य। पहले पर तक्षिलिस* और दूसरे पर पोरस राज्य करता था। पोरस बड़ा शूर और डीलडौल में भव्य पुरुष था।

तक्षिलिस और पोरस में अनबन थी। अतएव पोरस से बदला लेने के लिए तक्षिलिस ने अलेक्ज़ेंडर से मैत्री की। उसने अलेक्ज़ेंडर की सेना को सिंधु नदी के इस पार आने के लिए लकड़ी का एक पुल बनवा दिया; और अन्नादि से सहायता पहुँचा कर वह स्वयं पांच हज़ार सेना के साथ उससे जा मिला। हिडास्पिस नदी के तट पर घोर संग्राम हुआ; जिसमें पोरस पराजित होकर सिकन्दर का बंदी हुआ। इस कठिन अवसर पर पोरस ने अलेक्ज़ेंडर के साथ बड़े धैर्य और मर्यादा का वर्ताव किया, जिससे अलेक्ज़ेंडर बहुत प्रसन्न हुआ; और पोरस का राज्य वापस कर दिया। इसके अतिरिक्त उसने उसे और भी अच्छी मदद दी, तथा कुछ नवीन राज्य भी उसको जीत दिया।

इसके सिवाय उसने तक्षिलिस और पोरस की मैत्री भी

---

* ग्रीक इतिहास में 'तक्षिलिस' राजा का नाम बताया गया है। पर यह वास्तव में 'तक्षशिला' नामक नगर के नाम का अपभ्रंश ज्ञात होता है। 'तक्षशिला' नामक नगर अटक के पास था।

करा दी। तक्षिलिस अलेक्ज़ेंडर की मांडलिकता स्वीकार करके अपने राज्य में बना रहा।

अलेक्ज़ेंडर का विचार और आगे, गंगा नदी तक, बढ़ने का था; पर उसके सैनिकों को घर छोड़े चूंकि बहुत दिन हो चुके थे, अतएव उन्होंने आगे बढ़ने से इन्कार किया। इस लिए आगे बढ़ने का विचार छोड़ कर वह अपनी सेना डोंगियों में भर कर हिडास्पिस नदी से सिन्धु नदी में आया; और वहां से फिर वह वैसा ही नीचे समुद्र में उतर गया। मार्ग में सिंध प्रांत के लोगों से उसके अनेक संग्राम हुए। एक बार तो वह स्वयं घायल हुआ। उसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि, मल्ली (मुलतान ?) नामक एक नगर था। उस पर अधिकार करने के लिए तट पर रस्सी लगा कर सब से आगे वह चढ़ रहा था। अन्त में वह ऊपर पहुँच गया, परन्तु शेष सैनिक, रस्सी टूट जाने के कारण, ऊपर न पहुँच सके। इधर शत्रुओं के बाणों की वर्षा बराबर हो रही थी। इतने में एक बाण सिकन्दर के कंधे पर आकर लगा, जिससे वह घायल हो गया, पर बहुत जल्द उसके सिपाही पहुँच गये; और उसे उठा कर तम्बू में ले आये। इसके बाद क्रोध में आकर उन्होंने शत्रु के सब सिपाहियों को काट डाला। बाद को आराम होजाने पर अलेक्ज़ेंडर फिर आसपास के लोगों से लड़ता हुआ, वापस चला गया।

भारतवर्ष पर अलेक्ज़ेंडर ने व्यर्थ ही चढ़ाई की थी। यहां के किसी राजा से उसका बैर या प्रीति नहीं थी। ऐसी अवस्था में जब कि वह हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करके आया, तब तो उसकी इस चढ़ाई को लुटेरे और उच्छृङ्खल लोगों के

शिरोह की ही उपमा देनी चाहिये। जो हो, उसकी चढ़ाई से हानि के साथ साथ कुछ लाभ भी अवश्य हुए। इस चढ़ाई के कारण यूरोपियन लोगों का भौगोलिक और सृष्टिज्ञान बढ़ा, यूरोप और एशिया का परस्पर-व्यवहार आरम्भ होगया, जिस से सारे जगत् के व्यापार की बड़ी उन्नति हुई। सिंधु नदी के मुहाने पर अलेक्ज़ेंडर ने व्यापार के लिए एक मज़बूत क़िला बनवाया, वहां से उसने, निआर्कस नामक सरदार के अधिकार में जहाजों का एक बेड़ा देकर, उसे किनारे ही किनारे जल-मार्ग का पता लगाने के लिए पहले ईरान की खाड़ी और पीछे यूफ्रेटिस नदी के द्वारा आगे भेजा। इस यात्रा के कारण ईरान की खाड़ी से भारत का माल बाबिलोन, और उधर के अन्य शहरों में ले जाने का, तथा वहां से लाल समुद्र होते हुए इजिप्ट में पहुँचाने का बड़ा सुभीता हो गया। इजिप्ट में आया हुआ माल नहरों के द्वारा नील नदी में लाकर, फिर वहां से जहाजों के द्वारा अलेक्ज़ेंड्रिया को, और फिर वहां से सारे यूरप को भेजने लगे। पूर्वीय व्यापार के सिकन्दर के निकाले हुए ये मार्ग पंद्रहवीं सदी तक जारी रहे। इसके बाद जब यूरोपियन लोगों को अफ्रिका के दक्षिणी सिरे से घूम कर भारत-महा-सागर में आने का जलमार्ग मिल गया तब उपर्युक्त स्थलमार्ग बन्द हो गये।

यूफ्रेटिस नदी से ऊपर आने पर अलेक्ज़ेंडर की सेना को बड़े बड़े रेतीले मैदान पार करने पड़े। जिससे सैनिकों को बड़ा कष्ट हुआ, और पानी के बिना अनेक लोगों के प्राण गये। अन्त में अलेक्ज़ेंडर अपनी मुख्य सेना को लेकर ईरान की राजधानी (सूज़ा ?) में पहुँचा। वहां उसने, कुशलतापूर्वक पहुँच

जाने के हर्ष में, बड़ा उत्सव किया। वहीं उसने, एक स्त्री के रहते, दूसरी से विवाह करने की प्राच्य रीति को स्वीकार करके डरायस की बड़ी लड़की स्टाटीरा से विवाह किया, और अपने बड़े बड़े सरदारों का विवाह भी उसने कुलीन ईरानी और मीडियन स्त्रियों से करा दिया। यूरोपियन और एशियन लोगों में विवाह की चाल डालने का उसने बड़ा प्रयत्न किया। वह समझता था कि, इससे हमारा राज्य चिरस्थायी हो जायगा।

इसके बाद अलेक्ज़ेंडर बहुत जल्द बाबिलोन गया। उसकी इच्छा वहीं स्थायी रूप से निवास करने की, तथा बाबिलोन को अपने साम्राज्य की मुख्य राजधानी बनाने की था। तद्नुसार उसने वहां अनेक नवीन कार्य प्रारम्भ किये। टाइग्रस और यूफ्रेटिस के बीच की जो पुरानी नहरें बन्द होगई थीं, उन्हें उसने दुरुस्त कराया। निस्सन्देह, उसके प्रयत्न यदि सिद्ध हो गये होते तो बाबिलोन का प्राचीन वैभव फिर उसे प्राप्त हो जाता। पर बहुत जल्द ज्वर के कारण उसका देहान्त हो गया। सन् ईसवी के ३७३वें वर्ष पूर्व उसकी मृत्यु हुई। उस समय उसकी अवस्था पूरी ३३ वर्ष की भी न थी। इजिप्ट के मेंफिस नामक स्थान पर उसकी अन्त्यविधि हुई; उसकी लाश वहां से लाकर अलेक्ज़ेंड्रिया में गाडी गई। उसका सारा जीवन युद्ध और राज्यविस्तार में व्यतीत हुआ। पर हाथ की तलवार म्यान में जाते ही उसका वह वैभव क्षण भर भी नहीं टिक सका; किन्तु छाया के समान जहां का तहां ही लुप्त होगया।

उन्नीसवां अध्याय।

—:०:—

मासिडोनियन राज्य के टुकड़े।

(ई० स० के ३२३ से ३१६ वर्ष पहले।)

—:०:—

अलेक्ज़ेंडर सारे ग्रीस देश पर राज्य करता था। हां, स्पार्टा के राजा ने उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की। एशिया की चढ़ाइयों में सब ग्रीक रियासतों ने सिकन्दर को सहायता दी; पर स्पार्टा ने नहीं दी। यही नहीं, किन्तु उसके हेलेस्पांट पार होते ही स्पार्टा ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचना आरंभ कर दिया; और ईराननरेश से पाये हुए द्रव्य के बल से उसपर चढ़ाई करने की तैयारी की। इस षड्यंत्र में कुछ ग्रीक रियासतों ने भी सहायता पहुँचाई; पर अनेक रियासतों ने अलेक्ज़ेंडर का पक्ष नहीं छोड़ा। एथेन्स भी तटस्थ ही रहा। आर्केडिया के सारे शहर स्पार्टा से मिल गये। केवल मेगालोपोलिस नहीं मिला। अतएव स्पार्टा के राजा तृतीय एजिस ने उक्त शहर को घेर लिया। मेगालोपोलिस के निवासियों ने मासिडोनिया के अधिकारी ऍंटिपेटर से सहायता मांगी; और जब तक वहां से कोई सहायता नहीं आई, बड़ी शूरता से अपनी रक्षा की। सहायता आ जाने पर जो लड़ाई हुई उसमें एजिस मारा गया। इसके बाद स्पार्टा ने जब अपने पचास सरदार मासिडोनियन लोगों के अधिकार में देकर यह

वचन दिया कि, अब कभी तुम्हारे साथ उपद्रव न करेंगे तब उन्होंने स्पार्टा को क्षमा प्रदान की।

इधर एथेन्स में डेमास्थेनिस की प्रतिष्ठा पहले ही के समान थी। पर मेगालोपोलिस की लडाई के थोडे ही समय के पश्चात् उस पर यह अपराध लगाया गया कि अलेक्ज़ेंडर के विरुद्ध एथेन्स में बलवा कराने के लिए उसने घूस ली है। यद्यपि उसके इस अपराध के लिए आधार कुछ भी न था, फिर भी उस पर ढाई लाख रुपया जुरमाना किया गया। डेमास्थेनिस के पास इतना धन नहीं था, अतएव उसे एथेंस का त्याग करना पड़ा, और वह इजीना द्वीप में जाकर रहने लगा।

फिलिप और अलेक्ज़ेंडर का समय ग्रीस में बडा महत्वपूर्ण समझा जाता है। उस समय ग्रीस देश में अनेक प्रसिद्ध ग्रंथकार हो गए। उनके नाम और ग्रंथ अब भी आदरणीय माने जाते हैं। अलेक्ज़ेंडर का गुरु अरिस्टाटल महान् तत्ववेत्ता था। अलेक्ज़ेंडर की शिक्षा समाप्त होने पर वह एथेन्स में आया। वहां की सरकार ने उसे अच्छी सहायता दी, और वहां उसने लायसियम नामक शिक्षण-संस्था कायम की। उक्त प्रसिद्ध विद्यालय के प्रांगण में घने वृक्षों की छाया में घूमते हुए वह एथेंस के विद्यार्थियों को पढाया करता था। आकेडेमी नामक एक दूसरा विद्यालय था। वहां का अध्यापक प्रसिद्ध तत्ववेत्ता प्लेटो था। इस विद्यालय का 'आकेडेमी' नाम पडने का कारण इस प्रकार बतलाते हैं कि, स्पार्टा के राजा मेनिलास की अभिलाषा हेलन के साथ विवाह करने की थी। हेलन बडी सुंदरी थी। परन्तु थीसियन उसे भगा

कर एटिका प्रान्त में ले गया ; और वहीं छिपा रखा। हेलन के दो भाई थे। उन्होंने उसका बहुत पता लगाया ; पर कुछ लाभ न हुआ। तब आकेडेमास नामक एक ग्रीक योद्धा ने उसका पता उन्हें बताया; और वह मिल गई। आकेडेमस के इस उपकार के स्मरणार्थ यह निश्चय किया गया कि, स्पार्टन यदि कभी एटिका प्रांत में चढ़ाई करें, तो आकेडेमस के स्थान का कभी अपमान न करें। आगे चल कर आकेडेमस की इस ज़मीन पर 'आलिव' नामक वृक्षों का बाग लगाया गया; और आकेडेमस नामक एक पाठशाला भी वहां स्थापित की गई। बस, तभी से पाठशाला के अर्थ में 'आकेडेमी' शब्द का प्रचार होने लगा।

यूक्लिड नामक एक और विद्वान् पुरुष भी उसी समय हुआ। यह बड़ा गणितज्ञ था। इसका निवासस्थान अलेक्ज़ेंड्रिया था। इसके विषय में एक कथा इस प्रकार प्रचलित है कि, ईजिप्ट के राजा टालेमी ने यूक्लिड से पूछा कि, "भूमिति क्या सरल नहीं की जा सकती ?" उसने उत्तर दिया कि, "विद्या का मार्ग एक है। उसमें सरल और कठिन का भेद नहीं है।"

बड़े बड़े कवि और चित्रकार भी इस समय बहुत से हुए। चित्रकारों में एपिलीस बहुत प्रसिद्ध है। सफेद, लाल, पोला और काला--इन्हीं चार रंगों का उपयोग ग्रीक चित्रकार करते थे। परन्तु इन्हीं चार रंगों से वे उत्तम ऐतिहासिक और पौराणिक चित्र तैयार करते थे। ये चित्र काठ के पटों पर चित्रित किये जाते थे। युद्ध इत्यादि के समय पर शत्रु के द्वारा बहुधा ये नाश किये जाते थे।

अलेक्ज़ेंडर की मृत्यु का समाचार पाते ही एथेन्स ने स्वतंत्रता प्राप्त करने की फिर कोशिश की। वहां की सरकार ने एक बड़ी जलसेना तैयार करके चालीस वर्ष से कम अवस्था के सब लोगों को युद्ध के लिए बुलाया। उसने अन्य रियासतों के पास अपने प्रतिनिधि भेज कर निवेदन किया कि "ग्रीक रियासतों की स्वतंत्रता फिर से प्राप्त करने के लिए एथेन्स अगुआ होता है, आप उसकी सहायता करें।" इन प्रतिनिधियों के साथ डेमास्थेनिस भी गया; और अपनी वक्तृत्वशक्ति से उसने अधिकांश को अपने पक्ष में कर लिया। उसकी इस कार्यकुशलता से प्रसन्न होकर एथेन्स-सरकार ने उसे क्षमा प्रदान की; और उसे लाने के लिए इजीना को जहाज भेजा। कुछ दिन बाद वह पिरियस में आ उतरा; और फिर वहां से बड़े समारोह के साथ एथेंस आया।

इधर एशिया में इस बात को लेकर बड़ी गड़बड़ी मची कि, अलेक्ज़ेंडर के राज्य पर कौन बैठाया जाय। रानी रोक्ज़ाना का पुत्र और अलेक्ज़ेंडर का सौतेला भाई एरिडियस (Aridaeus) ये दोनों राज्य के अधिकारी थे। इनमें पहला तो अत्यन्त अल्पवयस्क और दूसरा मूर्ख तथा बेसमझ था। इस लिए इस बात को लेकर सेना के अधिकारियों में झगड़ा होने लगा कि इन दोनों में किसे राजसिंहासन दिया जाय। अन्त में यह निश्चय हुआ कि, एरिडियस राजा बनाया जाय। तदनुसार फिलिप नाम धारण करके वह एशिया के राज्यसिंहासन पर आरूढ़ हुआ। पर उसके कर्तृत्ववान न होने के कारण सारा अधिकार सेनापति पर्डिकास ने अपने ही हाथ में रक्खा इधर मासिडोनिया का राजकाज अँटिपेटर के अधिकार में

था; और इजिप्ट का कार्य टालेमा नामक सरदार के हाथ में था। इस भिन्न भिन्न व्यवस्था के कारण बड़ी गड़बड़ी मची। प्रत्येक अधिकारी के मन में यही इच्छा उत्पन्न हुई कि, सब राज्य उसी को मिल जाय। इस अभिलाषा को पूर्ण करने के लिए सब ने इतने दुष्कृत्य किये कि जिनका कुछ ठिकाना नहीं। गुप्त अथवा प्रकट रूप से किसी को मार डालना उस समय इतना सहज हो गया कि, स्वाभाविक मृत्यु से मरने वाले उस समय बहुत थोड़े दिखाई देने लगे। सम्पूर्ण राज्य में अप्रबंध और गड़बड़ी मच गई।

पर्डिकास ने तो क्रूरता की हद कर दी। एशिया के नवीन जीते हुए प्रदेशों में अलेकज़ेंडर ने अनेक नवीन शहर और नवीन ग्रीक बस्तियां बसाई थीं। इन स्थानों में प्रायः लड़ाई में गये हुए लोग बसाये गए थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने स्वदेश वापस जाने की इच्छा प्रकट की, जिसे वहां के ग्रीक अधिकारियों ने स्वीकार नहीं किया। उन्होंने बलवा मचा दिया, जिसे शान्त करने के लिए पर्डिकास ने सेना भेजी। बलवाई पराजित हुए, और सेना के नायक पायथोन (Pithon) ने उन्हें क्षमा प्रदान की। परन्तु पर्डिकास ने गुप्त रूप से आज्ञा भेजी कि, निःशस्त्र होते ही सब बलवाई मार डाले जायँ। पायथोन ने बड़ा प्रयत्न किया कि, इस प्रकार की कतल न होने पावे; पर सब व्यर्थ हुआ। पर्डिकास समझता था कि, इस प्रकार की कतल से उसका प्रभाव जम जायगा; मासिडोनिया की गद्दी कभी न कभी उसे अवश्य मिल जायगी।

इधर मासिडोनिया का अधिकारी ऍंटिपेटर ग्रीक रिया-

सतों से युद्ध कर रहा था। उसका सामना करने के लिए एथीनियन लोग दूसरी सेना लेकर थर्मापिली की घाटी में लिओस्थेनिस की अधीनता में एकत्र हुए। उनमें जो एक लड़ाई हुई उसमें एथीनियन लोगों की जीत हुई, और ऍटि-पेटर थेसली प्रान्त के लारिया नामक शहर में भाग गया। ग्रीक लोगों ने उस शहर को घेर लिया। पर शीघ्र ही मासि-डोनिया से जब ऍटिपेटर की सहायता के लिए सहायक सेना आ पहुँची तब तो एथिनियन लोगों ने सधि के लिए प्रार्थना की। ऍटिपेटर ने, प्रत्येक रियासत से, अपने सुभीते के अनु-सार पृथक पृथक सधि की। एथीनियन लोगों के साथ जिन शर्तों पर सधि हुई उनमें एक मुख्य शर्त यह थी कि, एथेंस की प्रजासत्ताक राज्यव्यवस्था तोड दी जावे, और सभा में मत देने का अधिकार जो अनेक लोगों को प्राप्त है वह छीन लिया जावे। अर्थात् सोलन की कानून के अनुसार, वही लोग मत दे सकें कि, जिनके पास किसी निश्चित परिमाण में सम्पत्ति हो।

एथेंस के लोगों पर दाब रखने के लिए, म्यूनिचिया के बन्दर में, ऍटिपेटर ने अपनी सेना रख दी। इसके बाद उसने एथेंस में बलवा करनेवाले लोगों के नेताओं को अपने हाथ में लेना चाहा, पर वे सब भाग गये। इस लिए, ऍटिपेटर ने उनको पकडने के लिए अपने सिपाहियों को रवाना किया। डेमास्थेनिस इजीना के निकट कालौरिया नामक टापू के एक मन्दिर में छिपा हुआ था। ऍटिपेटर के सिपाही वहां उसे ढूँढते हुए आ पहुँचे। परन्तु उसने विष खाकर आत्महत्या कर ली। (ई० स० के ३२२ वर्ष पूर्व।)

इसके बाद ऍंटिपेटर को शीघ्र ही ज्ञात हुआ कि, पर्डिकास मासिडोनिया का राज्य हड़प करने की अभिलाषा रखता है। अतएव उसने इजिप्ट के राजा टालेमी की सहायता से उस पर धावा कर दिया। पर्डिकास ने भी बड़ी भारी सेना के साथ इजिप्ट पर चढ़ाई की, पर वह अपने क्रूर कर्मों के कारण इतना अप्रिय होगया था कि, उसी के कई सैनिक अधिकारियों ने उसका खून किया।

अब सारा अधिकार ऍंटिपेटर के हाथ में आगया, परन्तु उसका यह वैभव बहुत दिनों तक नहीं टिका। एक वर्ष के भीतर ही उसकी मृत्यु होगई। तब अलेक्ज़ेंडर का एक पुराना सेनापति पोलिपर्चोन (Polyperchon) राज्य का अधिकारी बनाया गया। पर ऍंटिपेटर के पुत्र केसँडर को यह प्रबन्ध पसन्द न आया। उसने यह सोच कर कि राज्य पर हमारा अधिकार है, पोलिपर्चोन से झगड़ा आरम्भ किया। केसँडर बड़ा पराक्रमी और पर्डिकास के समान ही दुष्ट एवं क्रूर था। अपनी इच्छा पूर्ण करने के लिए वह चाहे जैसा अधम कार्य करने को तैयार रहता था। लगभग दो वर्ष तक उन दोनों में झगड़ा होता रहा, और अंत में केसँडर ही विजयी हुआ। पोलिपर्चोन के हाथ में जो थोड़े-बहुत शहर थे वे भी केसँडर की ओर जा मिले।

इस युद्ध में चूंकि दो प्रसिद्ध स्त्रियां शामिल थीं, अतएव इतिहास में इसको विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। उन दो स्त्रियों में से एक सिकन्दर की मा आलिंपियास और दूसरी एरिडियस की स्त्री यूरिडिस थी। पर्डिकास का खून होजाने पर यूरिडिस ने प्रयत्न किया कि, एशिया का राज्य उसे प्राप्त

होजाय। अतएव आगे बढ़ कर उसने अपने आवेशपूर्ण भाषण द्वारा सेना में जोश चढ़ाया; और उसे अँटिपेटर के साथ लड़ने के लिए प्रवृत्त किया। अलेक्ज़ेंडर की मृत्यु के बाद उसने केसँडर से मित्रता कर ली और बड़ी भारी सेना के साथ वह उसे सहायता देने के लिए ग्रीस को रवाना हुई। इधर से पोलिपर्चोन उसका सामना करने के लिए गया। उसके साथ आलिंपियास थी। वह भी यूरिडिस के ही समान शूर थी; और स्वयं सेना का संचालन करती थी। इन दोनों सेनाओं में यदि लड़ाई हुई होती, तो अवश्य ही ये दोनों स्त्रियां समरांगण में एक दूसरे पर अस्त्र चलाती हुई देखी जातीं, पर विचित्रता यह हुई कि अलेक्ज़ेंडर की मां को सामने देखते ही यूरिडिस की सेना उस पर हथियार न चला सकी। अतएव यूरिडिस अनायास ही आलिंपियास के हाथ आगई। आलिंपियास ने उसे और उसके पति को अंधेरी कोठरी में डाल दिया। वहीं आगे चल कर उन दोनों का खून हुआ।

आलिंपियास बड़ी क्रूर स्त्री थी, और उसके पापों का फल भी उसे शीघ्र ही मिल गया। केसँडर मासिडोनिया आया, और पिडना शहर को घेर लिया। आलिंपियास पिडना ही में थी। कुछ दिन युद्ध होने के बाद जब पिडना के लोगों को अन्न-पानी न मिलने लगा तब वे केसँडर की शरण आये। शरण आते समय यह निश्चय हुआ था कि, आलिंपियास के शरीर को कुछ धक्का न पहुँचाया जाय। परन्तु केसँडर ने उसे न्यायालय में उपस्थित करके उसके अपराधों की जांच की, और उस पर अलेक्ज़ेंडर, उसकी रानी, केसँडर के भाई और कई अन्य मनुष्यों के खून करवाने का अपराध सिद्ध

किया। अन्त में उसे मृत्युदण्ड दिया गया। उसे मारने के लिए कई सिपाही शस्त्र लेकर उसके पास गये, पर उनका हाथ उस पर नहीं उठा। परन्तु उनमें कुछ ऐसे भी थे जिनके सम्बन्धियों को आलिंपियास ने मरवा डाला था। इस लिए वे उसे देखत ही उस पर टूट पडे, और उसे काट डाला। कहते हैं, इस अवसर पर भी आलिपियास ने बडा साहस दिखलाया था। (ई० स० के ३१६ वर्ष पूर्व)।

इसके बाद केसॅडर सम्पूर्ण राज्य का स्वामी बन गया। अलेक्ज़ेंडर की स्त्री रोक्ज़ाना और उसके छोटे लड़के को उसने अफिपोलिस में क़ैद कर रक्खा। फिर उसने अलेक्ज़ेंडर की सौतेली बहन थेसलोनिका से विवाह करके उसके स्मरणार्थ थेसलोनिका नामक शहर बसाया। इसके बाद उसने थीब्स शहर को, जिसे अलेक्ज़ेंडर ने सत्यानाश कर डाला था, फिर से पूर्ववत् बनवाना आरम्भ किया।

बीसवां अध्याय।

अलेक्ज़ेंडर के बाद के राजा लोग।
(ई० स० के ३१६ से २८० वर्ष पहले तक।)

जब कि यूरोप में उपर्युक्त घटनाए हो रही थीं, इधर एशिया में अटिगोनस और यूमीन्स (Antigonus and Eumenes) नामक सिकन्दर के दो सरदारों में राज्यप्राप्ति के लिए लड़ाई

होने लगीं, और यूरप में जब कि आलिपियास का बध हुआ उसी समय अटिगोनस की जीत हुई, और वह एशिया में प्रमुख बन बैठा। यह सब प्रतिस्पर्धियों में विशेष शक्तिमान् था, अतएव इसके विरुद्ध केसॅडर, टालेमी, लिजिमेकस (Lysimachus) और सेल्युकस ने एक बड़ा भारी षड्-यन्त्र रचा।

ग्रीस देश में इस समय चारों ओर बड़ी गड़बड़ी मची हुई थी। जो पुरुष पराक्रमपूर्वक आगे बढ़ कर ग्रीस को स्वतन्त्रता प्राप्त करा देने की प्रतिज्ञा करता वही ग्रीक रियासतों की सहायता पा जाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि सब रियासतों में युद्ध और मन्त्रिसभाओं में कलह का प्रारम्भ होगया। एशिया और यूरोप दोनों जगह अनेक लड़ाइयां हुईं। कभी इस पक्ष को जय मिलता तो कभी उस पक्ष को। अन्त में युद्ध से सब त्रस्त हो गये, और ई० स० के ३११वें वर्ष पहले सब ने सन्धि कर ली, जिसमें यह निश्चय हुआ कि, केसॅडर मासिडोनिया प्रान्त के रीजेंट अर्थात् प्रतिनिधि का काम करे, लिजिमेकस के हाथ में थ्रेस प्रांत बहुत दिनों से था। अतएव वह उसी के पास रहे, टालेमी इजिप्ट का कारबार देखे, और आंटिगोनस एशिया का राज्य सम्हाले। इस सन्धि में यह स्पष्ट लिखा था कि, ग्रीक शहर स्वतन्त्र हैं, पर वास्तव में केसॅडर यूरोप की ग्रीक रियासतों पर अपनी सत्ता चलाने लगा, और उधर टालेमी ने इजिप्ट की ग्रीक बस्तियों को स्वतन्त्र न होने दिया।

इस सन्धि के थोड़े ही दिन पश्चात् केसॅडर की आज्ञा से, अलेक्ज़ेंडर की रानी राक्ज़ाना का पुत्र, जो अब कुछ बड़ा

हो रहा था, मार डाला गया। इससे केसँडर का पथ बहुत कुछ निष्कंटक हो गया।

इसके बाद कुछ ही दिनों में फिर युद्ध आरम्भ हो गया, जिसमें ऑंटिगोनिस के पुत्र डिमेट्रियस की प्रसिद्धि हुई। इस युद्ध में महत्व की घटना "होड्स का घेरा" है। इसके पहले ही डिमेट्रियस ने केसँडर के पंजे से एथेन्स को छुड़ा लिया; और वहां प्रजासत्ताक राज्यव्यवस्था पूर्ववत् जारी की।

केसँडर और टालेमी ने जब समस्त ग्रीक रियासतों में अपनी अपनी सेना रख कर उनका बन्दोबस्त किया तब एथेंस की तरह उनको भी छुड़ाने के लिए डिमेट्रियस अपनी सेना सहित एथेंस आया। वहां उसका बड़ा सत्कार हुआ। केसँडर का कारबारी एथेन्स में था, उसे एथेन्स छोड़ कर जाना पड़ा। उस समय राज्यशासन के लिए लोकसभा फिर बनाई गई, जिससे एथीनियन लोग इतने प्रसन्न हुए कि, उन्होंने अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित करने के लिए डिमेट्रियस और उसके पिता के मन्दिर बनवाये; और देवता के समान उनकी पूजा करने लगे। (ई० स० के ३०० वर्ष पहले।)

इसके बाद अगले वर्ष डिमेट्रियस ने टालेमी को जलयुद्ध में पराजित किया। इधर उसके पिता ऑंटिगोनस ने राज-पद धारण किया। टालेमी, लिज़िमेकस और सेल्युकस ने भी उसी का अनुकरण किया। सेल्युकस ने बाबिलोनिया का राज्य प्राप्त करके उसकी बड़ी उन्नति की थी। उसने अपने को "सिरिया के राजा" की उपाधि से विभूषित किया। यही सिरियन राजघराने का मूल पुरुष है।

ई० स० के ३०१ वर्ष पूर्व इप्सस के युद्ध में ऑंटिगोनस

मारा गया। उसका राज्य सेल्युकस के हाथ लगा, जिससे उसकी शक्ति और बढ़ गई। इस तरह एशिया में अलेक्ज़ेंडर का जितना राज्य था वह सब सेल्युकस को मिल गया। अलेक्ज़ेंडर के पश्चात् विशेष पराक्रमी और चतुर राज्यकर्ता यही हुआ। यह क्रूर नहीं था। ग्रीक सभ्यता का एशिया में प्रचार करने के लिए इसने प्रयत्न किया। उसके समय में ग्रीक लोगों में कलाकौशल की बड़ी उन्नति हुई। प्रत्येक प्रान्त में उसने मासिडोनिया और ग्रीस के लोगों को लाकर बसाया, जिनकी आगे चलकर वहां बड़ी उन्नति हुई। आंटिओक नामक शहर इसी प्रकार बसाया गया था। यह सिरिया की प्रसिद्ध राजधानी थी। ग्रीक लोगों को ईसाई धर्म का पहला उपदेश यहीं मिला; और ईसा मसीह के भक्तों को 'ईसाई' नाम पहले पहल यहीं प्राप्त हुआ।

इतिहास में सेल्युकस के वंशज सेल्युसिडी कहलाते हैं। इन्होंने २४० वर्ष सिरिया का राज्य किया। इनके अन्तिम राजा को रोमन सरदार पांपे ने जीता। तभी से सिरिया प्रान्त रोमन राज्य में शामिल होगया।

डिमेट्रियस ने जब कैसेंडर के ज़ुल्मों से एथेन्स को छुड़ाया तब उसके पिता ने उसे होड्स द्वीप को ज़ीतने के लिए भेजा। डिमेट्रियस ने होड्स द्वीप को जा घेरा; और एक वर्ष तक युद्ध करता रहा। होड्स-निवासियों ने अपने बचाव के लिए खूब प्रयत्न किया। वहां की सरकार ने प्रकट किया कि, जो गुलाम शूरता और सच्चाई के साथ लड़ेंगे उनको स्वतन्त्र नागरिकों के अधिकार मिलेंगे। लड़ाई में काम आये हुए लोगों के कुटुम्ब का पालन-पोषण सरकार करेगी। वह उनके लड़कों

को शिक्षा इत्यादि देगी ; और लड़कियों का विवाह अपने पास से कर देगी। लड़कों के बड़े होने पर सरकार उनको एक एक जिरह-बख़्तर पारितोषिक देगी। इसी प्रकार के अनेक प्रलोभन देकर वहां की सरकार ने लोगों को खूबही उत्तेजित किया। अतएव लोग बड़ी शूरता से लड़ते रहे।

इस चढ़ाई में डिमेट्रियस ने यंत्रशास्त्र-विषयक ज्ञान का खूब ही परिचय दिया। "शहर जीतने वाले" बड़े बड़े यंत्र उसने बनाये। परन्तु उनसे कुछ लाभ न हुआ। ह्रोड्स के निवासियों को अन्न और युद्ध सामग्री इजिप्ट से मिलती गई। इसके सिवा उन्होंने इस वीरता से युद्ध किया कि, डिमेट्रियस को सन्धि करने के लिए लाचार होना पड़ा। चलते समय उसने अपने सब यंत्र ह्रोड्स-निवासियों को भेट कर दिये। उन यंत्रों को बेचने से जो द्रव्य एकत्र हुआ, उससे ह्रोड्स वासियों ने सूर्य की एक मूर्ति बनवाई, जो संसार के सप्ताश्चर्यों में से एक है।

ह्रोड्स से डिमेट्रियस ग्रीस को वापस आगया; और फिर केसँडर से युद्ध आरंभ किया। अनेक बड़ी बड़ी रियासतों से उसने मासिडोनियन सेना को निकाल बाहर किया; और उन रियासतों को स्वतंत्र कर दिया। इसके बाद उसने कारिंथ में सब रियासतों की एक सभा की ; और सब से सेनापति का पद स्वयं प्राप्त कर लिया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उन रियासतों को दूसरे के हाथ से छुड़ाकर उसने स्वयं अपने हाथ में ले लिया। आखिर नतीजा वही रहा।

इसी समय के लगभग एपिरस का राजा पिह्रस अपने वीरतापूर्ण कार्यों से खूब प्रसिद्धि प्राप्त कर रहा था। डिमे-ट्रियस ने यह सोच कर, कि उसकी सहायता से हमें बड़ा

लाभ होगा, उसकी बहिन से विवाह कर लिया। इधर एशिया में सेल्यूकस और लिज़िमेकस ने सलाह कर के डिमेट्रियस के पिता ऑंटिगोनस पर चढ़ाई कर दी। इसलिए उसने अपने बेटे को सहायता के लिए बुलाया। परन्तु इप्सस की लड़ाई में ऑंटिगोनस मारा गया और उसका सारा राज्य सल्यूकस और लिज़िमेकस ने आपस में बांट लिया। डिमेट्रियस भाग गया; परन्तु ग्रीस में उसे आश्रय नहीं मिला। यहां तक कि, एथेंस के लोग, जो कि डिमेट्रियस का मन्दिर बना कर अभी उसकी पूजा करते थे, उन्होंने भी उसे अपने शहर में नहीं आने दिया।

अब केसँडर की सत्ता फिर ग्रीक रियासतों में चलने लगी। परन्तु ई० स० के २९६वें वर्ष पूर्व उसकी मृत्यु होगई, इससे डिमेट्रियस को एक बार फिर अपनी सत्ता स्थापन करने का अवसर मिला। अतएव बड़ी भारी सेना साथ में लेकर उसने एटिका प्रान्त में प्रवेश किया और उसको विध्वंस कर के जल और स्थल दोनों ओर से एथेंस को घेर लिया। उसके पास जलसेना बहुत थी, अतएव उसने इजिप्ट से सामग्री का आना बन्द कर दिया, और इस कारण एथेंस पर अधिकार करने में उसे कुछ भी विलम्ब न लगा। डिमेट्रियस ने फिर, बड़े समारंभ के साथ, नगर में प्रवेश किया, परन्तु उसने किसी को कुछ कष्ट नहीं दिया। उसकी सब से बड़ी इच्छा यह थी कि, मासिडोनिया का सिंहासन प्राप्त किया जाय। यह इच्छा उसकी शीघ्र ही पूरी हुई।

केसँडर के दो लड़के मासिडोनिया के सिंहासन के लिए परस्पर लड़ते थे। उनमें से एक ने, जिसका नाम अलेक्ज़ेंडर

था, डिमेट्रियस और पिह्रस से सहायता मांगी। पिह्रस पहले आया और अलेक्ज़ेंडर को सिंहासन पर बिठा दिया। बाद को डिमेट्रियस आया और अपना विचार पूर्ण होता हुआ नहीं देखा। अतएव वह मन ही मन पिह्रस पर बड़ा कुपित हुआ; और फिर युवा अलेक्ज़ेंडर का खून कर के सेना की सहायता से, मासिडोनिया के सिंहासन पर बैठा।

डिमेट्रियस का शासन क्रूरता के लिए प्रसिद्ध है। उसने अपने सुखचैन के लिए प्रजा पर नाना प्रकार के कर लगा कर धन वसूल किया। उसने केवल सात वर्ष तक राज्य किया; पर इतनी ही अवधि में वह बड़ा अप्रिय होगया। इसके अतिरिक्त ग्रीक रियासतों और पिह्रस के साथ उसका युद्ध भी जारी था। पिह्रस उसका कट्टर शत्रु था। ई० स० के २८७वें वर्ष पूर्व सेना में एक बलवा हुआ। उस समय डिमेट्रियस भेष बदल कर भाग गया। अतएव उसका राज्य पिह्रस के हाथ लगा। इधर डिमेट्रियस भाग कर एशिया में गया; और वहां उसने अपने पिता के राज्य का कुछ भाग प्राप्त करने का प्रयत्न किया; परन्तु सेल्यूकस ने उसको पकड़ कर सिरिया प्रांत में भेज दिया, जहां उसकी मृत्यु हो गई। पिह्रस भी मासिडोनिया का राज्य बहुत दिनों तक नहीं करने पाया। उसका राज्य लिज़िमेकस ने छीन लिया। तब पिह्रस एपिरस प्रान्त में चला गया; और वहां उसने कुछ दिन शांतिपूर्वक राज्य किया। इधर इटली के दक्षिण में टारेंटम नामक ग्रीक शहर पर जब रोमन लोगों ने चढ़ाई कर दी तब वहां के लोगों ने सन् ईसवी के २८०वें वर्ष पूर्व पिह्रस से सहायता मांगी। इसी कारण रोम के इतिहास में उसका नाम प्रसिद्ध

है। उसकी बड़ी इच्छा थी कि, रोम राज्य को जीत कर सिसली और कार्थेज पर अधिकार किया जाय; और फिर अन्त में सारा ग्रीस अपने क़ब्जे में कर लिया जाय।

इक्कीसवां अध्याय।

—:o:—

गाल लोगों की चढ़ाई।

(ई० स० के २७९-२४६ वर्ष पूर्व तक।)

—:o:—

पिह्रस के इटली चले जाने पर ग्रीस देश पर एक दूसरे ही शत्रु ने चढ़ाई कर दी। गाल नामक एक जाति के जङ्गली लोग बड़े शूर-वीर थे। उन्होंने ई० स० के २७९वें वर्ष पूर्व मासिडोनिया पर चढ़ाई करके सारा देश नष्ट कर डाला। दूसरे वर्ष उन्होंने फिर चढ़ाई की। उनके सरदार का नाम ब्रेनस था। वह जब अपनी सेना लेकर थर्मापिली की घाटी तक आ गया तब उसको रोकने के लिए ग्रीक सेना आगे बढ़ी। दोनों दलों में युद्ध हुआ; और गाल लोग पराजित हुए। उनके बहुत से सैनिक मारे गये; और उन्हें लौट जाना पड़ा। फिर भी ब्रेनस ने लड़ाई जारी रखी। उसने अपना एक दल इटोलिया प्रांत में भेजा, जिसने वहां के शहरों को लूट कर उनकी दुर्दशा प्रारम्भ की। इधर इटोलिया के लोग थर्मापिली की लड़ाई में फँसे हुए थे। वे अब अपने बाल-

बच्चों की रक्षा के लिए लौट आये। ब्रेनस की चाल सफल हो गई। पहले जब ईरान और स्पार्टा में युद्ध हुआ था तब स्पार्टा के राजा लिओनिडास को थर्मापिली की घाटी में धोखा देकर, जिस मार्ग से ईरानी सेना ने चढ़ाई की थी, वही मार्ग ब्रेनस को भी मिल गया, और उसी के द्वारा उसने अपनी सेना आगे बढ़ा ली। यह बात ग्रीक लोगों को पहले ही से मालूम होगई, अतएव वे एथेंस के जहाजों पर चढ़कर भाग गये। अब गाल लोग डेल्फाय की ओर मंदिर लूटने के लिए बढ़े। मार्ग के सब प्रदेश उन्होंने भयंकर क्रूरता के साथ जलाकर और लूटकर सत्यानाश कर दिये। इसके बाद जब वे डेल्फाय के मंदिर के पास पहुँचे तब वहां की सुन्दर मूर्तियों, बड़े बड़े रथों और भक्तों की दी हुई अन्य सामग्रियों की ओर संकेत करके ब्रेनस ने कहा, "यहां के देवता इतने धनवान हैं कि, अपनी ओर से हमें इनको कुछ अर्पण करने की आवश्यकता नहीं, किन्तु यही हमें कुछ अर्पण करें।" इधर यह बातचीत हो रही थी कि, इतने में डेल्फाय की सेना ने पीछे की एक पहाड़ी पर से एकदम गाल लोगों पर हम्ला करके उनको पराजित कर दिया। इस लड़ाई में ब्रेनस स्वयं घायल हुआ; और इस हार से लज्जित होकर उसने आत्महत्या कर ली। बाद को उसके अन्य साथी भग चले; पर ग्रीक सेना ने उनका पीछा करके उनमें से अधिकांश को मार डाला।

इधर रोम के युद्ध में पिहस को यद्यपि सफलता प्राप्त नहीं हुई; तथापि उसने इटली और सिसली में ऐसा कुछ पराक्रम दिखलाया कि, वहां उस समय वह एक बड़ा शूरवीर

गिना जाने लगा। एपिरस में लौट आने पर उसने मासिडोनिया पर चढ़ाई की; उसमें वह विजयी हुआ, तथा मासिडोनिया का राज्य उसे फिर मिला। परन्तु साथ ही एक झगड़ा फिर उसे लग गया। स्पार्टा के एक राजा की मृत्यु होगई। किन्तु उसके पुत्र क्लिओमिनस को गद्दी नहीं मिली; एरियस (Areus) नामक उसका चचेरा भाई सिंहासन पर बैठ गया। इस लिए एरियस से राज्य प्राप्त करने के लिए क्लिओमिनस ने पिह्रस की सहायता चाही। पिह्रस बड़ी भारी सेना के साथ लेकोनिया प्रान्त में गया। उस समय एरियस कहीं बाहर गया हुआ था, और लेकोनिया नगर का प्रबन्ध ठीक नहीं था। फिर भी नगर-वासियों ने, एरियस के लौटने तक बड़ी वीरता के साथ नगर की रक्षा की। बाद को एरियस ने लौटने पर पिह्रस को मार भगाया।

इसी समय के लगभग आर्गास राज्य के दो हक़दारों में गद्दी के लिए झगड़ा आरम्भ हुआ। उनमें से एक ने पिह्रस से सहायता मांगी। पिह्रस सेना के साथ तुरन्त ही आर्गास के लिए रवाना हुआ। परन्तु बीच में उसकी बाट स्पार्टनों ने रोक ली। अतएव वह उनसे लड़ कर नगर में प्रविष्ट हुआ। स्पार्टन भी उसके पीछे ही पीछे चले गये, और चारों ओर से उसे घेर लिया। इस विपत्ति को देखकर पिह्रस ने अपनी सेना को लौटने की आज्ञा दी, पर नगर के दरवाजे में ग्रीक सेना का एक हाथी राह रोक कर बैठ गया; और दूसरा हाथी पिह्रस की सेना में घुसकर उसका सत्यानाश करने लगा। इसी गड़बड़ में एक मनुष्य पिह्रस पर वार करने के लिए दौड़ा। पिह्रस उसे रोकता ही था कि, इतने

में उक्त मनुष्य की मां ने, जो पास ही घर के ऊपर खड़ी थी, एक खपड़ा लेकर इस खूबी के साथ पिहस के ऊपर फेंका कि, वह तुरन्त ही घोड़े से नीचे गिर पड़ा। उसके गिरते ही लोगों ने उसका शिरच्छेद कर डाला। इतिहास में पिहस की मृत्यु एक महत्वपूर्ण घटना है। क्योंकि उसकी मृत्यु से ग्रीक फिर अपनी स्वतंत्रता के लिए मासिडोनियन लोगों से झगड़ने लगे। यह झगड़ा बहुत दिनों तक जारी रहा; पर अन्तिम निर्णय कुछ भी न हुआ; और बीच ही में ग्रीक और मासिडोनियन दोनों को रोमन लोगों ने जीत लिया।

इस समय ग्रीक लोगों की बड़ी दुर्दशा थी। चारों ओर डाकू लोग लूट-मार कर रहे थे। ये लुटेरे कभी इस पक्ष से और कभी उस पक्ष से युद्ध में शामिल रहते थे। प्रत्येक नगर में कोई न कोई छोटे-बड़े अधिकारी जुल्मी पैदा हो गये; और प्रजा को खूब सताने लगे। इससे आर्किया (Achæa) प्रान्त के शहरों ने अपना एक गुट बनाया। उसे इतिहास में "आकियन गुट" कहते हैं।

यह गुट ई० स० के २८०वें वर्ष पहले स्थापित हुआ। पहले तो केवल चार ही नगरों का एका था; पर धीरे धीरे दूसरों ने भी अपने अपने अन्यायी अधिकारियों को निकाल बाहर किया, और इस गुट में शामिल हो गये। फिर क्रमशः अन्य प्रान्तों के नगरों का भी इस गुट में प्रवेश हुआ। अन्त में सम्पूर्ण ग्रीक रियासतों के एक हो जाने का समय आ गया; और यदि ऐसा हुआ होता तो यह ग्रीक राष्ट्र मासिडोनिया और रोम दोनों के लिए भारी हुआ होता।

आरेटस नामक एक बुद्धिमान और उदार नवयुवक था। इसी ने उपर्युक्त ऐक्य के बढ़ाने का भारी प्रयत्न किया। यह पिलापोनेसस प्रान्त के सिकियन (Cicyon) नगर के अधिकारी क्लिनियस का पुत्र था। आरेटस जब सात वर्ष का था तभी उसके पिता का खून होगया और उसकी मौसी ने बड़ी युक्ति से उसके प्राण बचाये। वह उसे गुप्त रीति से आर्गास ले गई; वहीं वह बड़े होने तक रहा। ग्रीस देश की उतरती कला को देख उसे बड़ा दुःख हुआ, अतएव उसने उक्त राष्ट्र के बचाने का उद्योग आरंभ किया। उसने पहले अपने जन्मस्थान सिकियन को ही उसके अत्याचारी अधिकारी के हाथ से छुड़ाने का प्रयत्न किया। इसके लिए उसने कुछ गुलाम और देशनिकाले का दण्ड पाये हुए लोगों को एकत्र किया। एक दिन रात को वह अपने साथियों को लेकर गुप्त रीति से रस्सी के द्वारा कोट की दीवाल पर चढ़ा, और नगर के अधि-कारी निकोक्लिस (Nicocles) के घर को जा घेरा। परन्तु निकोक्लिस छिपकर भाग गया। अब नगर में चारो ओर यह खबर फैल गई कि क्लिनियस का बेटा नगर के उद्धारार्थ आया है। फिर क्या था, नगरवासियों ने चारो ओर से उसका जयजयकार शुरू कर दिया। आरेटस ने वहां लोकसत्ताक राज्यव्यवस्था आरंभ की, जिसमें लोगों ने उसी को मुख्य अधिकारी बनाया।

इस राज्यक्रांति में लगभग छै सौ देशनिकाले का दण्ड पाये हुए लोग अपने नगर में आगये। उनके घर-द्वार और जायदाद, जो दूसरों को दे दी गई थी, उन्हें फिर से दिलाने में आरेटस को बड़ा प्रयास उठाना पड़ा। इजिप्ट का राजा

लोगों की वह तेजस्विता, जो पहले कभी थी, अब बिलकुल नहीं रही थी।

जमीन के स्वामित्व के सम्बन्ध में एक नवीन कानून बन जाने से धनवान और गरीब लोगों में और भी अधिक भेद बढ़ गया। पहले किसी मनुष्य के मर जाने पर उसकी जमीन उसके वारिस को मिलती थी, जिसे वह न किसी को दे सकता था, और न बेच सकता था। किन्तु अब यह कानून बन गया कि, मालिक अपनी ज़मीन की चाहे जैसी व्यवस्था कर सकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि, बहुत लोगों के अधिकार से ज़मीन निकल गई, और वह एक अथवा कुछ थोड़े से लोगों के हाथ में आगई। इस समय असली स्पार्टनों के लगभग सात सौ कुटुम्ब थे, इनमें से केवल सौ के पास थोड़ी बहुत ज़ायदाद रह गई थी; शेष सब भिखारी और कर्ज़दार होगए थे।

ई० स० के २४४वें वर्ष पूर्व स्पार्टा की ऐसी ही परिस्थिति थी। इसी वर्ष चौथा एजिस स्पार्टा की गद्दी पर बैठा। यह चतुर था; और इसकी इच्छा थी कि, पहले के समान ही हमारे देश का वैभव बढ़े। उसने इस प्रकार का कानून बन जाने के लिए बड़ा प्रयत्न किया कि जमीन का विभाग पहले ही के समान हो जावे; और थोड़ी बहुत जमीन सब के पास रहे। यहां तक कि, वह अपनी निज की भी बड़ी भारी स्थावर सम्पत्ति छोड़ देने के लिए तैयार हो गया; पर बड़े बड़े ज़मींदारों को उसका उद्देश्य पसन्द न आया। विशेषतः उसके जोड़ीदार राजा लियोनिडास को तो उसका उद्देश्य बिलकुल ही न भाया। परिणाम यह हुआ कि वह अपने स्वदेशाभिमान

के कारण ही अनेक लोगों का कोपभाजन बन बैठा; और चार वर्ष भी राज्य न कर पाया था कि, उस पर सरकारी कायदों की अवहेलना करने का दोषारोपण किया गया; और ईफोर्स ने उसके लिए प्राणदण्ड की आज्ञा दी। तदनुसार उसकी मां और उसकी सहायक आर्जी के साथ उसका शिरच्छेद किया गया। लियोनिडास अब अकेला ही राज्य करने लगा। बस तभी से स्पार्टा पर दो राजाओं के एक साथ राज्य करने की चाल बन्द होगई।

इसी समय रोमन और कार्थेजियन लोगों में युद्ध जारी था। इस युद्ध को 'प्यूनिक युद्ध' कहते हैं। स्पार्टा का सेनापति ज़ांटिपास इस युद्ध में लियोनिडास से तंग आकर स्पार्टा की नौकरी छोड़ कार्थेज से जा मिला और उसने रोमन लोगों को पराजित किया। रोम का सेनापति रेग्युलस था। एजिस के मारे जाने पर उसकी स्त्री के साथ लियोनिडास ने अपने पुत्र क्लियोमिनिस का विवाह कर दिया। इस स्त्री में स्वदेशाभिमान कूट कूट कर भरा हुआ था। इसने अपने नवीन पति के हृदय में अपने विचार इस तरह भर दिये कि, जिस उद्योग में एजिस मारा गया था, उसी के आरंभ करने के लिए क्लियोमिनिस भी तैयार होगया। उसे अच्छी तरह मालूम था कि, पुरानी राज्यपद्धति के अनुसार काम करने के लिए मंत्रिसभा कभी तैयार न होगी, पर उसने सोचा कि, कम से कम सैनिक भाव लोगों में कायम रखने के लिए तो पुरानी पद्धति का स्वीकार करना ही चाहिए; क्योंकि इसी पद्धति के कारण आज तक स्पार्टा में सैनिक भाव इतना बना हुआ था; और राज्य की इतनी उन्नति हुई थी।

इसी लिए, अपने पिता की मृत्यु के पश्चात्, राज्य की बागडोर अपने हाथ में आजाने पर, क्लियोमिनिस ने आकियन गुट से युद्ध आरंभ कर दिया। दोनों ही पक्षों का उद्देश पिलापोनेसस-सहित सारी रियासतों को अपने संघ में शामिल कर लेना था। अर्थात् आकियन गुट और उसके नेता आरेटस का इरादा स्पार्टा को अपने गुट में शामिल कर लेने का था; और स्पार्टा चाहता था कि सब रियासतें केवल उसी के अधिकार में रहें। इन्हीं कारणों से आरेटस और क्लियोमिनिस की ठन गई।

पहले पहल क्लियोमिनिस की जीत रही, और उसने समझा कि अब हमारी शक्ति खूब बढ़ गई है; अतएव उसने अपने सोचे हुए सुधार भी आरंभ कर दिये। दस वर्ष सतत परिश्रम कर के उसने अनेक परिवर्तन किये; पर साथ ही रक्तपात भी खूब हुआ। क्योंकि सारी सत्ता ईफोर्स के हाथ में थी; और इन ईफोर लोगों को नीचा दिखाये बिना नवीन सुधार करना असम्भव था। एक दिन रात को अपने कुछ सिपाहियों को साथ में ले क्लियोमिनिस ईफोर लोगों के क्लब में गया, और उनमें से चार को एकदम मार डाला, और पांचवां एक मंदिर में छिप कर बच गया। दूसरे दिन उसने अस्सी नगरवासियों को देश से निकाल दिया और सब का ऋण दूर कर के सारी जमीन को सब लोगों में बराबर बराबर बांट देने का प्रबंध किया। जिन अस्सी मनुष्यों को उसने देश से निकाल दिया था उन का भी हिस्सा उसने इसमें रक्खा। क्योंकि सारी व्यवस्था ठीक हो जाने पर वह उन लोगों को फिर बुला लेना चाहता था। प्राचीन काल में सब

के एक साथ बैठ कर भोजन करने की चाल थी; और बालकों को छुटपन ही से कष्ट सहने की आदत डलवाते थे। ये सब चालें उसने फिर से प्रचलित कीं। (ई० स० के २२५ वर्ष पहले)। इधर उससे लड़ने के लिए आरेटस ने मासिडोनिया के राजा आँटिगोनस की सहायता मांगी। आँटिगोनस स्वयं बड़ा महत्वाकांक्षी था उसने समझा कि, इससे सारे ग्रीस देश पर अधिकार जमाने का अच्छा अवसर मिलेगा, अतएव उसने आरेटस को सहायता पहुँचाई। यह युद्ध तीन वर्ष तक फिर चला। अन्त में लेकोनिया की सीमा पर सेलासिया में क्लियोमिनिस पराजित हुआ और स्पार्टा आँटिगोनस के अधिकार में आया। उसने क्लियोमिनिस के सारे सुधार रद्द कर दिये; और वही पहले की दुर्व्यवस्था फिर जारी कर दी। क्लियोमिनिस इजिप्ट भाग गया, जहाँ उसने अन्त में आत्म-हत्या कर ली।

कुछ काल के बाद मासिडोनिया के राजा आँटिगोनस की भी मृत्यु होगई; और उसका भतीजा पाँचवां फिलिप गद्दी पर बैठा। उस समय उसकी अवस्था केवल सत्रह वर्ष की थी। फिर भी वह बड़ा शूर और बुद्धिमान था। उसने आकियन गुट को बड़ी सहायता दी। इन युद्धों में ग्रीस की अत्यन्त हानि हुई। ई० स० के २१७वें वर्ष पहले इन लड़ाइयों का अन्त हुआ।

इसी समय रोम और कार्थेज में द्वितीय प्यूनिक युद्ध बड़े जोर-शोर से हो रहा था। कार्थेज का सेनापति हानिबाल, अपनी सेना के सहित आल्प्स पर्वत पार कर के इटाली आ पहुँचा। कानी नामक मुकाम पर बड़ा भारी युद्ध

हुआ, जिसमें रोमन पराजित हुए। तुरन्त ही फिलिप ने वकील भेज कर हानिबाल से मैत्री के लिए प्रार्थना की। यह प्रतिनिधि अपना कार्य समाप्त करके लौटा आ रहा था कि, रोमन लोगों ने उसे पकड़ कर रोम भेज दिया। उसके पास जो कागज़-पत्र प्राप्त हुए, उनसे रोमन लोगों को भावी अरिष्ट की सूचना मिली।

फिलिप जब पहले पहल राज्य करने लगा तब यह आशा थी कि, वह बड़ा चतुर और योग्य राज्यकर्ता होगा। पर बहुत जल्द उसके स्वभाव में परिवर्तन होगया; और वह स्वच्छन्दी तथा अन्यायी बनने लगा। आरेटस ने उसे बहुतेरा समझाया; पर प्रभाव उलटा पड़ा; फिलिप बहुत चिढ़ गया। यहां तक कि कुपित होकर उसने आरेटस को विष देकर मार डाला। आरेटस का शव उसकी जन्मभूमि सिकियन में ले जाकर लोगों ने बड़े समारम्भ के साथ उसकी अन्तिम क्रिया की; और उसकी समाधि पर मन्दिर बना कर उसकी पूजा करने लगे। उसकी पूजा के लिए एक पुजारी नियत किया गया; और आगे कितनी ही शताब्दियों तक लोग आरेटस का जन्मदिन मनाते रहे, तथा जिस दिन उसने जुलमी लोगों से अपनी जन्म-भूमि सिकियन शहर को छुड़ाया था उस दिन भी लोग विशेष उत्सव करते रहे।

तेईसवां अध्याय।

———:o:———

स्पार्टा के जुल्मी अधिकारी।

(ई० स० के २१३-१८३ वर्ष पूर्व तक।)

———:o:———

आरेटस की मृत्यु के पश्चात् अनेक वर्षों तक छोटे-मोटे बहुत से युद्ध हुए। इन युद्धों में कभी कभी रोमन लोग बीच में पड़ते; और किसी न किसी पक्ष को सहायता देकर फिलिप को सदा पराजित करने का प्रयत्न करते थे।

एक बार फिलिप ने एटिका प्रान्त पर चढ़ाई की, पर एथेन्स नगर में जब उसका प्रवेश न हो सका तब उसने कुपित होकर उक्त प्रान्त के अनेक पवित्र और सुन्दर स्थानों का नाश कर डाला, क़बरें और मूर्तियां तोड़ डालीं; और आकेडेमी तथा लायसियम के बाग और मंदिरों को जला दिया। इसके बाद छोटे छोटे गांवों में जाकर उसने उनका सर्वनाश कर दिया, इस प्रकार उसने अनेक अत्यन्त प्राचीन सुन्दर और क़ीमती कामों का सत्यानाश कर दिया।

ग्रीस देश के शासन में एथीनियन लोगों की प्रधानता अब बहुत दिनों से नहीं रही थी। उनका व्यापार और सारा राज्य नष्ट हो चुका था। उनकी वह भारी जलसेना अब नहीं रही थी; किन्तु अब सिर्फ तीन जहाज उनके पास थे। और उन के निज के, कम उपजाऊ प्रदेशों के सिवा उनके पास और कोई अच्छे प्रदेश नहीं थे। इजिप्ट और अन्य स्थानों के राजा लोग उन पर दया दिखा कर उन्हें द्रव्य और अन्न के द्वारा

सहायता पहुँचाते थे। एथेन्स राज्य की प्राचीनता और पूर्ववैभव पर ध्यान रख कर लोग उसे मान देते थे।

इधर स्पार्टा के लोगों ने राजा को निकाल दिया, ईफोर्स लोगों का शासन बन्द कर दिया, और अल्पसत्ताक राज्य-पद्धति चलाई। पहले अधिकारी मेचानिडास ने भाड़े के सिपाहियो से सहायता लेकर कठोर शासन आरम्भ किया, और आसपास के प्रान्तों पर अपना खूब आतङ्क जमा लिया। अन्त मे आकियन गुट के सेनापति फिलोपिमेन के साथ उस का युद्ध हुआ, जिसमें मेचानिडास मारा गया। इसके बाद नाबिस अधिकारी हुआ। यह इतना क्रूर था कि, इसके सामने, रोमन राजा लोग, जो बड़े क्रूर समझे जाते थे, कुछ न थे। उसने सैनिकों की सहायता से सब धनवान् लोगों को देश से निकाल बाहर किया, और अन्य लोगों पर मनमाना अत्याचार करके खूब धन प्राप्त किया। उसने मदिरों को लूट लिया, और स्पार्टा में सब प्रकार के दुष्ट और बदमाश लोग भर दिये। गुलामों से उसने अपने दुष्ट कार्यों में सहायता ली, और इसके बदले उन्हें गुलामी से मुक्त करके उन्हें कुछ ज़मीन की आमदनी बांध दी।

फिलिप और रोमन लोगों में युद्ध जारी ही था। ई० स० के १६८ वर्ष पहले आकियन गुट से मैत्री करने के लिए रोम का वकील आया। इस विषय पर ग्रीस देश में बडी चर्चा शुरू हुई। अंत में सधि हो गई; और आकियन रियासतों ने फिलिप का पक्ष छोड़ कर रोम का पक्ष स्वीकार किया। इस का कारण उन्होंने यह प्रगट किया कि यदि वे फिलिप का पक्ष पकड़े रहेंगे तो वह फिर आगे पीछे ग्रीस देश को जीत लेगा।

अगले वर्ष रोमन लोगों ने सिनोसिफेली नामक स्थान में फिलिप पर विजय प्राप्त किया। इस समय रोमन लोगों का सेनापति फ्लामिनायनस था। युद्ध के बाद जो सन्धि हुई उसमें यह निश्चय हुआ कि, मासिडोनियन लोगों के जितने नगर ग्रीस में हैं, वे सब रोम के अधिकार में दे दिये जावें, सब कैदी बिना दण्ड लिये छोड़ दिये जावें, पांच जंगी जहाज और एक राजा का जहाज छोड़ कर अन्य सब जलसेना रोम के अधिकार में दे दी जावे, और एक हज़ार टालेंट, अर्थात् पचास लाख रुपये, फिलिप दण्ड दे। यह संधि कारिंथ में हुई। उस समय वहां खेल कूद का उत्सव होरहा था और सब जगह के लोग एकत्र हुए थे। सब लोग उत्सुकतापूर्वक इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि, देखें अब रोमन लोग क्या करते हैं। खेल आरंभ होने के पहले चोबदार ने तुरही बजा कर प्रकट किया कि, रोमन लोगों ने मासिडोनियन लोगों को जीत कर सारे ग्रीस देश को स्वतंत्र कर दिया है और सैनिक खर्च अथवा अन्य किसी प्रकार के कर का भार भी उन्होंने ग्रीक लोगों पर नहीं डाला।" इस आघोषणा से चारों ओर आनन्द छा गया। खेल समाप्त होने पर ग्रीस देश के उद्धारक रोमन सेनापति फ्लामिनायनस पर लोगों ने खूब पुष्पवर्षा की।

यह समाचार सारे देश में शीघ्र ही फैल गया; और चारों ओर जयजयकार मच गया। उस आनन्द में ग्रीक लोगों ने यह न सोचा कि जिन्होंने उनको एक फन्दे से छुड़ाया वही उन्हें गुलाम बनावेंगे।

स्पार्टा के अधिकारी नाबिस ने आर्गास पर अधिकार कर लिया था, इसलिए कारिंथ की संधि के बाद फ्लामिनायनस ने स्पार्टा पर चढ़ाई कर दी। उसने शहर को चारों ओर से घेर लिया; और एकदम आक्रमण करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। नाबिस को, विवश होकर, आर्गास और लेकोनिया के सब बंदर और अपने सब जंगी जहाज छोड़ देने पड़े; तथा ढाई लाख रुपये दण्ड देकर फ्लामिनायनस से संधि करनी पड़ी। इसके बाद जब कि रोमन सेनापति आर्गास गया, तब वहां के लोगों ने उसे नायमियन खेल में अग्रस्थान दिया (ई० स० के १६२ वर्ष पहले।)

रोमन सेना के चले जाने पर नाबिस ने अपने बंदरों को फिर से प्राप्त करने का उद्योग किया। पर वह सफल नहीं हुआ; और आकियन सेनापति फिलोपिमेन ने उसे पराजित किया। इसके बाद शीघ्र ही नाबिस का खून भी होगया। इस पर स्पार्टा के राज्यप्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी मची। परिणाम यह हुआ कि, ई० स० के १६२वें वर्ष पहले स्पार्टनों को भी आकियन गुट में शामिल होना पड़ा।

इसी समय के लगभग सिरिया के राजा अंटिओकस ने ग्रीस देश पर चढ़ाई की। वह ग्रीस देश में रोमन लोगों की प्रधानता नहीं रखना चाहता था। पर उसका यह उद्देश सिद्ध नहीं हुआ। कुछ रियासतें उसके पक्ष में मिल गईं; पर आकियन, एथीनियन और मासिडोनियन लोगों ने रोम का पक्ष नहीं छोड़ा। अंत में थर्मापिली की घाटी में पराजित होकर अंटिओकस एशिया को लौट गया।

इसके बाद शीघ्रही स्पार्टा में नये झगड़े शुरू हुए। नाबिस ने जिन लोगों को नई जमीन दी थी उनमें यह डर पैदा होगया कि, देशनिकाले का दण्ड पाये हुए लोग वापस आकर अपनी ज़मीन ले लेंगे। अतएव उन्होंने बलवा मचा दिया और फिलापिमेन के कुछ साथियों को मार डाला। इसलिए फिलापिमेन ने स्पार्टा पर चढ़ाई कर दी; और उस पर अपना अधिकार जमा लिया। बलवाइयों को उसने कठोर दण्ड दिया। उनके मुख्य मुख्य अस्सी सरदारों को उसने फांसी दे दी, और जिन्हें नाबिस ने स्वतंत्रता दी थी उन सब को देश से निकाल दिया। स्पार्टा की किलेबन्दी उसने गिरा दी। तीन सहस्र मनुष्यों को, जिन्होंने शहर छोड़ने से इन्कार किया, उसने गुलाम बनाकर बेच दिया। देश से निकाले हुए लोगों को उसने वापस बुला लिया। लायकरगस के कायदों को बंद करके आकियन गुट के कायदे उसने जारी किये। सारांश यह कि, आज कितनी ही शताब्दियों से स्पार्टन लोगों ने अपनी जिन विशिष्ट बातों को स्थिर रक्खा था वे सब नष्ट होगईं।

इसके छै वर्ष बाद फिलोपिमेन, मेसीन में एक बलवे का प्रबन्ध करते समय पकड़ा गया। वह कैद में डाल दिया गया, और अन्त में विष पिला कर मार डाला गया। उसके बाद लायकोर्टास सेनापति हुआ। उसने मेसेनियन लोगों से ख़ूब बदला लिया—उनके मुखियों को पकड़ कर मार डाला। (ई० स० के १८३ वर्ष पूर्व)।

चौबीसवां अध्याय ।

रोम का अधिकार ।
(ई० स० के १७९-१४६ वर्ष पहले)

ई० सन् के १७९वें वर्ष पहले मासिडोनिया के राजा पांचवें फिलिप का देहान्त होगया। इसके बाद उसका लड़का पर्सियस (Perseus) सिंहासन पर बैठा। फिलिप के मरते समय उसका राज्य खूब उन्नतावस्था में था। प्रत्येक से टक्कर लगाने की उसमें शक्ति थी। परन्तु रोमन लोगों के सामने उसकी नही चली। अन्त में उसके मरने पर रोमन लोगों ने पर्सियस से युद्ध प्रारम्भ किया।

इस समय इटली, सिसली, सार्डिनिया, स्पेन और एशिया-माइनर का कुछ भाग रोमन लोगों के अधिकार में आ गया था। अब उन्हें मासिडोनिया सहित समस्त ग्रीस देश जीतने की उत्कंठा हुई। ई० स० के १७१वें वर्ष पहले वह युद्ध आरम्भ हुआ।

आकियन गुट के सरदार अब इस कठिनाई में पड़े कि इस समय वे रोमन लोगों में मिलें अथवा उदासीन रहें। लायकोर्टास और उसके मित्रों ने उदासीन रहने की सम्मति दी, परन्तु दूसरे दल के नेता कालिक्रेटिस ने रोमन लोगों को सहायता देने की सलाह दी। बहुत चर्चा होने के बाद लायकोर्टास के विचार सब को पसन्द पड़े, और रोमन वकील

मार्शस (Marcius) को उक्त निश्चय की सूचना देने के लिए आकियन गुट ने अपने वकील पोलिबियस को मासिडोनिया भेजा। हां, उस वकील ने रोमन लोगों को यह भी सूचित कर दिया कि, हम सहायता देने को भी तैयार रहेंगे।"

पर्सियस और रोमन लोगों का यह युद्ध चार वर्ष तक होता रहा। इस अवधि में रोम-पक्ष के ग्रीक नगरों को रोमन सेना के जुल्म और लूट से बड़ा कष्ट हुआ। बड़े बड़े आदमियों के घर में रोमन खलासी मनमाने तौर पर जाकर रहने लगे। "मान न मान, मैं तेरा मेहमान" की लोकोक्ति चरितार्थ होने लगी। इससे वहां के प्रतिष्ठित कुटुम्बों को बड़ी मान-हानि सहनी पड़ी। किसी शहर के जीतने पर वहां के लोगों को यहां तक कष्ट दिया जाता था कि स्त्रियों और वृद्ध पुरुषों पर भी किसी को दया न आती थी।

ई० स० के १६८वें वर्ष पूर्व पीडना की लड़ाई में इस युद्ध का फैसिला हुआ। रोमन राजनीतिज्ञ एमिलियस पालस की जीत हुई। पर्सियस कुटुम्ब सहित रोमन सेनापति के अधीन हुआ। उसने पर्सियस के साथ बहुत अच्छा बर्ताव किया। दूसरे वर्ष पालस ग्रीक रियासतों में दौड़ा करते हुए सब के उलहने सुनता रहा। इसके बाद वह अँफिपोलिस गया। वहां दस रोमन अधिकारी नियत करके उसने मासिडोनिया के राज्यशासन का प्रबन्ध किया। प्रान्त के चार विभाग कर के उसने प्रत्येक विभाग पर मासिडोनियन लोगों की एक एक कौंसिल नियत कर दी। ये चारों भाग एक दूसरे से सर्वथैव अलग थे। यहां तक कि, एक भाग के लोग दूसरे

भाग के साथ विवाह तक नहीं कर सकते थे; और न घर इत्यादि बना कर सम्पत्ति कमा सकते थे।

एक बात में यह नूतन राज्य-व्यवस्था बहुत लाभदायक सिद्ध हुई। रोमन लोगों ने कर बहुत कम लगाया। यहां तक कि मेसिडोनिया के राजा को जितना कर देना पड़ता था उससे आधा रोमन लोग लेने लगे। मेसिडोनिया की यह नवीन राज्यव्यवस्था जिस समय निश्चित हुई, उस समय ग्रीक लोगों ने बड़े बड़े खेल-तमाशे कर के अपनी प्राचीन उत्सवप्रियता व्यक्त की।

इटली वापस आने के पहले, पालस रोमन सेनेट की आज्ञा से, एपिरस प्रान्त में गया। वहां उसने पर्सियस के पक्ष के सत्तर नगरों को धूल में मिला दिया। रोमन सैनिकों ने इन नगरों को लूट कर उनके कोट गिरा दिये; और वहां के लोगों को गुलाम के तौर पर बेच दिया।

एमिलियस पालस के रोम वापस आने पर लोग बड़े समारोह के साथ उसे नगर में ले गये। उसके रथ के पीछे मासिडोनिया का कैदी राजा अपने बाल बच्चों सहित पैदल चल रहा था। रोम में पहले तो वह एक अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया गया; पर पीछे से शीघ्र ही उसका छुटकारा हो गया; और उसे आल्बा में रहने की आज्ञा मिली। वहीं उसकी मृत्यु हुई।

पीडना के विजय के बाद आकियन गुट के, लगभग एक हजार लोगों को कालिक्रेटिज ने रोम का शत्रु ठहराया, और उन्हें पकड़ कर रोम भेज दिया। वहां से उन्हें इटली के भिन्न भिन्न नगरों में रहने की आज्ञा दे कर देशनिकाले का दण्ड

दिया गया। इन लोगों में पोलिबियस नामक एक इतिहास-कार भी था। पालस के पुत्र फेबियस और सिपियो की सिफारिश पर पोलिबियस को रोम में ही रहने की आज्ञा मिल गई। पोलिबियस सदैव सिपियो के साथ उसकी सब चढ़ाइयों में उपस्थित रहता था। ई० स० के १४६वें वर्ष पूर्व, जब सिपियो ने कार्थेज को जलाया; तब भी पोलिबियस उप-स्थित था।

कार्थेस को पराजित करने के कुछ वर्ष पहले सिपियो ने सेन्सर (Censor) केटो से प्रार्थना करके, देशनिकाले का दण्ड पाये हुए ग्रीकों को स्वदेश वापस भेजने की आज्ञा सेनेट से प्राप्त कर ली। इससे, उन ग्रीक लोगों को, जो बेचारे अब तक जीवित थे, बहुत दिनों बाद फिर एक बार स्वदेश लौट जाने का अवसर मिल गया। इसके बाद पोलिबियस ने केटो से प्रार्थना की कि, इन सब को इनके पहले के अधिकार भी दे दिये जावें तो बड़ा अच्छा हो; परन्तु इस पर उस वृद्ध राजनीतिज्ञ ने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया, 'भाई, इतने ही में संतोष रक्खो, नहीं तो जो कुछ मिला है, वह भी चला जावेगा।"

रोमन लोगों ने ग्रीस पर धीरे धीरे अपना खूब प्रभाव जमा लिया। उन्होंने अपनी प्रधानता और भी बढ़ाने के लिए आकियन गुट में फूट डाल कर कारिंथ, स्पार्टा और आर्गास को उससे अलग कर दिया। आकियन लोगों को यह फूट पसंद न आई; और उन्होंने रोम के साथ युद्धघोषणा कर दी। परन्तु बहुत जल्द इस पर उनको पछताना पड़ा; क्योंकि जिन बड़े बड़े लोगों ने युद्ध के लिए उनको उभाड़ा था

वहीं नाना प्रकार के जुल्म करके लोगों से, खर्च के लिए, द्रव्य वसूल करने लगे ; और उनके गुलामों को जबरदस्ती सेना में भरती करने लगे। पर उनके ये सब प्रयत्न व्यर्थ थे। रोमन सेनापति मिटेलस विजयी हुआ ; और आकियन गुट की संयुक्त सेना को पराजित करके उसने कारिंथ नगर में प्रवेश किया, तथा उस नगर को लूट कर और जला कर उसने मटिया-मेट कर दिया (ई० स० के १४६ वर्ष पहले।)

कारिंथ के लोग गुलाम बना कर बेच दिए गए। वहां के कलाकौशल के अनेक सुदर और प्रसिद्ध स्थान रोमन लोगों के हाथ में आ गए। परन्तु रोमन लोगों में अभी इतनी सभ्यता न आई थी कि, वे उनका मूल्य समझते। अभी उनमें कला-कौशल और भाषा-सम्बन्धी प्रेम उत्पन्न होने में और दो सौ वर्ष लगे। सच पूछिए तो ग्रीस देश को जीतने ही के कारण उनका सुधार हुआ; और रोमन राष्ट्र की प्रसिद्धि हुई। कारिंथ के अनेक चित्र और मूर्तियां ममियस के हाथ में पड़ गईं, जिनमें से कितने ही उत्तमोत्तम चित्र और मूर्तियां उसने पर्गमोस (Pergamos) के राजा के हाथ बेच दीं ; और बाकी चीज़ें जहाज़ों में भर कर रोम भेज दीं। हां, जहाज़ वालों से इतना उसने अवश्य कह दिया था कि इनमें धक्का न लगने पावे। पोलिबियस अपने इतिहास में स्पष्ट लिखता है कि, "अनेक कीमती चित्रों पर पट रख कर पांसों से खेलते हुए मैंने स्वयं रोमन लोगों को देखा है।" इससे साफ़ जान पड़ता है कि वे लोग उन चित्रों की कदर नहीं जानते थे।

ममियस ग्रीस में दो वर्ष रहा। उसे प्रो० कांसल अर्थात् सूबेदार का पद मिला था। सन् ईसवी के १४५वें वर्ष पूर्व

ग्रीस के राज्यशासन का प्रबन्ध करने के लिए रोम से अच्छे अच्छे चतुर मनुष्यों की कमेटियां भेजी गई। थेसली और एपिरस के दो प्रान्तों को छोड़ कर शेष सारा ग्रीस मासिडोनिया प्रान्त में आ गया था।

पचीसवां अध्याय।

रोम के शासन में ग्रीस की दशा।
(ई० स० के पहले १४६-१४५३ तक।)

रोमन लोगों के अधिकार में आ जाने पर ग्रीस देश की प्राचीन स्वतन्त्रता नष्ट हो गई। फिर भी वहां के लोगों की स्थिति बदलने में बहुत समय लगा। ऊपर ऊपर तो भिन्न भिन्न ग्रीक रियासतों की राज्यव्यवस्था प्रजासत्ताक ही थी, पर वास्तव में सारा प्रबन्ध रोमन अधिकारियों के इच्छानुसार होता था।

आज अनेक शताब्दियों से एथेन्स नगर, सारे ग्रीस देश में ही नही, प्रत्युत सारे जगत् में विद्या का आदिस्थान माना जाता था। रोम के धनवान् युवक अपनी विद्या पूर्ण करने के लिए एथेंस जाया करते थे। होरेस और सिसरो ने भी अपनी विद्या एथेंस में ही आकर पूर्ण की थी। ग्रीक लोगों के धर्माचार रोमन लोगों ने कुछ नहीं बदले। उनके राष्ट्रीय उत्सव

भो पहले ही के समान जारी रहे; और रोमन भी उनमें शामिल होते रहे।

रोमन लोगों की अधीनता पहले पहल ग्रीक लोगों को दुस्सह नहीं जान पड़ी। रोमन लोगों ने जो दूसरे देश जीते थे उनकी बात जुदी थी; और ग्रीस की बात जुदी। अन्य देश बिलकुल असभ्य अवस्था में थे। अतएव नूतन सुधार करने के लिए रोमन लोगों को वहां जबरदस्ती करनी पड़ी; परन्तु यहां तो विजित लोगों को सुधारने का प्रश्न ही न था; किन्तु इसके विरुद्ध विजेता लोगों को ही उनसे बहुत कुछ सीखना था।

रोमन लोगों के अधिकार में लगभग साठ वर्ष रहने के पश्चात् ग्रीकों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए फिर एक बार प्रयत्न किया। पर उनका सारा परिश्रम व्यर्थ गया। रोमन सेनापति सिला एक बड़ी भारी सेना लेकर ग्रीस में आया; और उसने सब बलवाई नगरों को पराजित करके उन्हें अपने अधिकार में कर लिया। एथेन्स भी रोमनों के अधिकार में आ गया। एथेंस के लोगों को सिला ने यह अधिकार दिया कि, वे अपने अधिकारी आप चुन लिया करें; और अपने लिए कायदे-कानून भी आप ही बना लिया करें। इसके बाद उसने पिरियस को जीता; और उसकी किलेबन्दी गिरवा दी। कुछ दिनों के बाद ग्रीकों का स्वातंत्र्य-विषयक प्रयत्न सर्वदा के लिए बंद हो गया। (ई० स० के ८७ वर्ष पहले)

रोमन लोगों ने चूंकि यह कठोर प्रबन्ध कर दिया था कि ग्रीक रियासतें अपनी निज की सेना न रखें, इस लिए अब चारों ओर समुद्री डाकुओं का उपद्रव शुरू हो गया। सरकार

की कठोरता भी बहुत असह्य हो गई। अधिकारी लोग नियत कर से अधिक द्रव्य वसूल करने लगे। बड़े आदमी द्रव्य देकर रोमन नागरिकत्व का हक हासिल कर सकते थे, अतएव वे कर के बोझ से बच जाते थे। इससे सारा कर गरीबों के ही मत्थे आता था। इन कारणों से सर्वसाधारण लोगों को अत्यन्त कष्ट होने लगा। इसके अतिरिक्त चूंकि उपरोक्त रीति से एकत्र किया हुआ सारा द्रव्य रोम भेज दिया जाता था, अतएव देश की दरिद्रता और भी अधिक बढ़ने लगी। व्यापार, सपत्ति और लोकसख्या, सब में कमी होने लगी, और अनेक ग्रीक शहर उजड गये। जहा देखो वहां उजाड बस्तिया और बिना जुती-बोई जमीन का दु.खद दृश्य दिखाई देने लगा।

जूलियस सीजर ने कारिंथ में फौजी ढग की किलेबन्दी बनवाई। परन्तु इसके लिए चूंकि पूरा पूरा द्रव्य न था, अतएव देहात के लोगों ने कबरों तक के पत्थर उसके लिए निकाल दिए। तथापि कितने ही लोग अपना पूर्ववैभव दिखलाने का ढोंग करते थे, और उनको थोडी-बहुत स्वतत्रता भी थी। कम से कम, अपने अधिकारी आप नियुक्त करना, और सडकें, पाठशाला तथा मन्दिर इत्यादि स्थानिक उपयोग के कार्यों के लिए कर लगा कर द्रव्य एकत्र करना इत्यादि कार्य वे कर सकते थे।

अफिक्टियोनिक कौंसिल का कार्य पहले ही के समान हुआ करता था। डेल्फाय के मदिर में जाकर ग्रीक लोग भविष्य-वाणी अब भी सुना करते थे। एथेंस की एरियोपेगस सस्था और स्पार्टा की सब सस्थाएं भी पहले ही के समान अपने

अपने कार्य किया करती थीं। फिर भी ग्रीकों की गरीबी बढती ही गई। रोमन साहूकारों से उन्होंने कर्ज लिया, जिसे चुकाने में उनको अपनी जायदादें बेचनी पडीं। बडी बडी जमीन विदेशियों के हाथ में चली गईं, और ग्रीक लोग केवल किसान बन गये।

कई रोमन राजाओं ने ग्रीस देश में अनेक सत्कार्य भी किये। उदाहरणार्थ, हेड्रियन ने अनेक भव्य मंदिर बनवाये, कारिंथ में सार्वजनिक स्नानगृह बनवाये, और उत्तर की ओर पेलापोनेसस तक गाडी का रास्ता तैयार करा दिया। मार्कस आरेलियस ने एथेन्स में पाठशालाएं बनवाईं और शिक्षकों का वेतन बढा दिया। अन्य कई राजाओं ने भी समय समय पर कुछ अच्छे काम किये। फिर भी अन्य राष्ट्रों के मुकाबिले ग्रीस देश का जो ह्रास होरहा था, वह बंद नहीं हुआ।

आर्केडियस और होनोरियस नामक राजाओं के शासन-काल में गाथ लोगों ने ग्रीकों पर चढाई की। इन जंगली लोगों ने एथेन्स को लूटा, सारे देश को धूल में मिला दिया, और अनेक लोगों को पकड़ ले जाकर गुलाम की तरह बेच दिया। उसी समय से गाथ लोग सदैव ग्रीकों को सताने लगे। अंत में उन्होंने रोमन राज्य तक को विध्वंस किया।

इसी समय के लगभग ग्रीस देश में, विशेषतः उसके पूर्वी भाग में, ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ हुआ। यूरोपियन ग्रीस में प्राचीन काल का धर्म लुप्त होकर राजा कान्स्टेंटाइन के समय में ईसाई धर्म का सब जगह प्रवेश होगया। दूसरा एक बडा परिवर्तन यह हुआ कि, रोमन राज्य की राजधानी रोम से उठकर बायजांटियम शहर में चली गई। सन् ३३१

ई० में राजा ने राजधानी का वह शहर फिर से बनवाया और इसका नाम कान्स्टेंटिनोपल रखा।

उस समय से रोमन राज्य के दो टुकडे होगये, एक पूर्व की ओर का और दूसरा पश्चिम की ओर का। पूर्वीय राज्य में ग्रीस का समावेश हुआ, और उसका शासन ग्रीक राजाओं के हाथ में रहा। इस प्रकार राज्य के विभाग होजाने पर गाथ लोगो के नायक अलेरिक ने ग्रीस पर चढाई की। उस समय, बहुत दिनों की शान्ति से ग्रीस देश धनवान होगया था। परन्तु इन जगली और लुटेरे गाथ लोगों ने देश की ऐसी दुर्दशा की, कि फिर वह कभी उठ नहीं सका।

थीब्स नगर की किलेबदी बडी मजबूत नवीन बनी थी। अतएव अलेरिक ने उस पर चढाई करने का प्रयत्न नहीं किया। एथेन्स से भी उसने छेडछाड नहीं की। परन्तु शेष एटिका प्रांत को उसने धूल में मिला दिया। इल्युसिस नगर और वहां के मदिर का नाश होगया, और सारा पेलापोनेसस प्रांत युद्ध में जल भुन कर विध्वन्स होगया। कारिंथ, अर्गास और स्पार्टा के शहर मटियामेट होगये। इसके सिवा, और भी कितने धन और जन का नाश हुआ, इसका कुछ ठिकाना नहीं। इस लडाई के कारण ऊचे दरजे के ग्रीक लाग ता सर्वथा नष्ट होगये, अनेक लोग तलवार से काट डाले गये, और जो बचे उनकी जायदाद तथा गुलाम छीन लिये जये, अतएव वे किसान बन गये। कुछ देश छोड कर चले गये।

उधर जब कि अलेरिक और उसके गाथ लोग ग्रीस देश को सत्यानाश कर रहे थे, इधर एशिया में हूण नामक एक दूसरे ही जगली लोग सिरिया देश को लूटने लगे। ग्रीस और

मासिडोनिया प्रांतों को भी इसी प्रकार के जंगली लोगों ने नाश कर डाला।

ग्रीस देश में गुलामों और निम्न जाति के लोगों में सर्वदा एक प्रकार का भेद बना रहता था। इस भेद को मिटाने के लिए रोमन लोगों ने समय समय पर अनेक कायदे बनाये। उन्होंने यह भी कानून बनाया कि, मालिक अपने गुलामों से खेती के काम के सिवाय दूसरे काम न लें, जो किसी जमीन को लगातार तीस वर्ष तक जोतता बोता रहा है, उससे वह जमीन न ली जावे, और उसके वंशज भी,—चाहे अन्य बातों में वे कितने ही स्वतंत्र क्यों न हों,—उसे न छोड़ें। इस कानून का फल यह हुआ कि, निम्न जाति के लोग और गुलाम मिल कर एक होगये, और उनसे एक तीसरा नवीन वर्ग 'सर्फ' अर्थात् नौकरों का बन गया।

यद्यपि ग्रीस देश में ईसाई धर्म का प्रचार आरंभ होगया था, तथापि निम्न श्रेणी के लोग मूर्तिपूजा के उत्सव और विधि किया ही करते थे। राजा जस्टिनियन के समय तक यही हाल रहा। जस्टिनियन ने मूर्तिपूजा बिलकुल बन्द कर दी, और देश में कई ईसाई मंदिर तथा मठ बनवा दिये।

तथापि उसने ग्रीस देश पर बड़े बड़े अत्याचार किये। उसने स्वतंत्र नगरों की सम्पत्ति हरण कर ली, और उनके सारे स्वत्व छीन लिये। इसके बाद करों का बोझा बहुत बढ़ गया, जिससे लोग दरिद्र होगये, और अपने पूर्वजों की विद्या और कलाकौशल भूल कर अज्ञानी बन गये। जस्टिनियन के समय में रेशम के कीड़ों से रेशम तैयार करने की विद्या यूरप

में आई, और तभी से सारे ग्रीस देश में इस व्यवसाय का प्रचार होगया।

ग्रीस की लोकसंख्या जब कम होगई तब उत्तर की ओर से नवीन लोग देश में आगये, और पहले जो इलिरियन तथा अन्य जंगली लोग अलबेनियन नाम से देश में रहते थे, उनको उन्होंने दक्षिण की ओर भगा दिया। उस जगह प्राचीन और नवीन लोगों का मिश्रण हुआ। अतएव वर्तमान ग्रीक लोगों की उत्पत्ति इसी मिश्रण से हुई है। वे असली हेलन लोगों के वंशज नहीं हैं। गुलामों की संख्या धीरे धीरे नष्ट होगई। जर्मनी के जंगलों से हथियारबन्द लोगों की नवीन टोलियां आईं, जो थेसली और मासिडोनिया प्रांत में बस गईं।

ग्रीक नगरों और ग्रीक सभ्यता के ह्रास का मुख्य कारण यह है कि देश के चलतू मार्ग अच्छी दशा में नहीं रखे गये। रास्तों के खराब होजाने के कारण भिन्न भिन्न प्रान्तों का परस्पर व्यवहार छूट गया। इसी से हेलास अथवा ग्रीस के ग्रीक लोग कांस्टंटिनोपल के ग्रीक लोगों से बिलकुल भिन्न जाति के होगये।

पूर्वी रोमन राज्य, अर्थात् ग्रीस देश का रोमन राज्य, अन्त में डूब गया। अरब और तुर्किस्तान के मुसलमान प्रबल होकर अनेक शताब्दियों तक उक्त राज्य पर चढ़ाई करते रहे। उन्होंने इजिप्ट और सिरिया में ग्रीक सभ्यता का नाम-निशान तक नहीं रक्खा। ग्रीक लोगों की आबादी भी प्रायः उन्होंने नष्ट कर दी। अंत में सन् १४५३ में ग्रीस का रोमन राज्य भी तुर्कों ने जीत लिया, और कांस्टंटिनोपल में अपना अड्डा जमाया, जो अब तक उनके हाथ में है।

छब्बीसवां अध्याय।

ग्रीस के अर्वाचीन इतिहास का सारांश।

कांस्टेंटिनोपल को जीत कर तुर्कों ने यूरोप में जब अपना राज्य स्थापित किया, तब ग्रीक लोग भी उनके अधिकार में आगये। तुर्कों ने देश भर में अपनी जाति के अधिकारी नियुक्त किये, जो पाशा के नाम से प्रसिद्ध हुए। ये अधिकारी, लोगों पर नाना प्रकार के जुल्म करते रहे। प्रत्येक बस्ती पर जो अधिकारी नियत हुए उन्हें आगा कहने लगे। वे पाशाओं के नीचे काम करने लगे। वे तथा अन्य सब अधिकारी प्रजा पर खूब जुल्म करते रहे।

ग्रीक और तुर्क लोगों में धर्मभेदों के कारण कभी ऐक्य तो हुआ ही नहीं। उनमें विवाह-सम्बन्ध होना बिलकुल असम्भव था। ग्रीक लोगों के हृदय में मुहम्मद पैगम्बर के प्रति श्रद्धा नहीं थी, अतएव इन दोनों जातियों में सदैव के लिए भेद पड़ गया।

तुर्कों के शासन में ग्रीक लोग अत्यन्त अज्ञानी और दरिद्री होगये। उनका देश जो पहले इतना सधन, सघन और भव्य था, अब बिलकुल उजाड़ दिखाई देने लगा। बड़ी बड़ी सभ्य इमारतें गिर गईं; और ग्रीक कलाकौशल के प्राचीन नमूने प्रायः नष्ट होगये। पेलापोनेसस प्रान्त को तुर्क लोग मोरिया

कहने लगे। वहां एक भी जगह नहीं रही। कुछ थोड़े थोड़े प्राचीन वैभव के चिन्ह भर दिखाई दे रहे थे।

हां, नीचे के प्रायद्वीप की अपेक्षा उत्तरी ग्रीस की दशा कुछ अच्छी थी। एथेंस में बहुत से प्रतिष्ठित कुटुम्ब रहते थे, और एटिका की अनेक बस्तियों में भी लोग सुखी थे। त्योहार के दिन नाना प्रकार के खेल और उत्सव हुआ करते थे। तथापि देश की गिरी दशा के चिन्ह जहां तहां स्पष्ट दिखाई देते थे।

समशीतोष्ण वायु और उपजाऊ धरती के कारण देश में अन्न खूब होता था। सरसों, चावल, कपास और तम्बाकू वहां के मुख्य पदार्थ हैं। एटिका प्रान्त में लोग पहले ही के समान आलिव फल और रेशम के लिए शहतूत के वृक्ष लगाते थे। अनेक लोग पशु पालने और मछली मारने का व्यवसाय करते थे। शेष लोग लकड़ी बेच कर अपना उदर-निर्वाह करते थे।

प्राचीन काल के समस्त बड़े बड़े नगर अब कुग्रामों की दशा में आये। इनमें से अनेक गावों में ग्रीक व्यापारी और अन्य धनवान लोग रहते थे। तथापि इनमें से प्रायः अनेक लोगों के घर भिखारियों की झोपड़ी से अच्छे न थे।

रोमन राज्य में ग्रीक लोग रोमन ढंग के कपड़े पहनते थे। तुर्की राज्य में उन्होंने तुर्की पहनावा स्वीकार किया। गरीब लोग सिर में टोपी और अंग में एक छोटा सा कुर्ता पहनने लगे।

सन् १७७२ में रूस के भड़काने से ग्रीक लोगों ने तुर्की सरकार के विरुद्ध बलवा किया, जिसे तुर्की सरकार ने शान्त

कर दिया। तथापि सब ग्रीक लोगों के मन में स्वतन्त्र होने की उत्कट इच्छा उत्पन्न होगई। परिणाम यह हुआ कि, सन् १८१७ में उन्होंने फिर दूसरा बलवा किया। उनका मुखिया आल्बियन सरदार अली पाशा था। उसकी सहायता से बलवाइयों ने कई वर्ष तक तुर्की सरदार से झगड़ा किया। आखिर सन् १८२२ में जो लड़ाई हुई उसमें अली पाशा मारा गया। तथापि ग्रीक लोगों ने अपना उद्योग नहीं छोड़ा। पहले पहल इस झगड़े की ओर किसी ने विशेष ध्यान नहीं दिया; पर धीरे धीरे ग्रीक लोगों के विषय में यूरोपियन राष्ट्रों में, विशेषतः फ्रान्स और इङ्गलैंड में, बड़ी सहानुभूति उत्पन्न हुई। इस लिए ग्रीक लोगों की सहायता करने के लिए कई राष्ट्रों के लोग स्वयं ग्रीस में गये; और कई राष्ट्रों ने चन्दे कर के उन्हें धन की सहायता भेजी।

इस प्रकार छै वर्ष और न्यूनाधिक वेग से लड़ाई होती रही। तुर्क लोगों ने एथेंस को घेर कर शहर पर अधिकार कर लिया। अब ग्रीक लोगों का पक्ष गिरने लगा। ऐसे संकट के समय ग्रीक लोगों ने काउंट केपो डिस्ट्रियास (Count Capo d' Istrias) नामक एक ग्रीक महाशय को, जो रूस के यहां नौकर था, वापस बुला कर अपने कार्य पर नियुक्त किया। उसने प्रेसिडेंट (राष्ट्रपति) का पद धारण करके एक प्रकार की सुयंत्रित राज्यप्रणाली निर्मित की; और जो लोग स्वतन्त्रता के लिये भिन्न भिन्न स्थानों में लड़ रहे थे उन सब को संगठित करके एक उत्तम सेना तैयार की।

इस प्रकार केपो डिस्ट्रियास ने ज्यों ही राज्यप्रणाली को सुयंत्रित किया, त्यों ही ग्रेटब्रिटन, रूस और फ्रांस ने तुर्कों के

विरुद्ध, ग्रीक लोगों का पक्ष ग्रहण किया। इन राष्ट्रों ने सुलतान को सूचित किया कि नियमित कर-भार लेकर ग्रीस देश को स्वतंत्रता दे दी जावे। सुलतान ने यह सूचना स्वीकार नहीं की। इस पर उपर्युक्त राष्ट्रों ने खुल्लमखुल्ला युद्ध प्रारम्भ कर दिया। सन् १८२७ में नेवेरिनो के उपसागर में एक बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसमें इजिप्ट और टर्की की जलसेना नष्ट होगई। इसके दो वर्ष बाद रूस ने तुर्की सेना पर विजय प्राप्त किया। अतएव सन् १८२६ में सुलतान को यह स्वीकार करना पड़ा कि ग्रीस देश स्वतंत्र है।

सब राष्ट्रों ने इस नवीन ग्रीक राज्य की मर्यादा निश्चित कर दी। उसे पहले का 'हेलास' नाम दिया गया; और बवेरिया के राजा का दूसरा लड़का ओथो सन् १८३२ में गद्दी पर बैठाया गया। परन्तु यह राज्यप्रणाली लोगों को पसन्द नहीं आई। पहले ही वर्ष लोगों ने राजा को पदच्युत कर दिया।

एक वर्ष बाद डेन्मार्क के राजा का द्वितीय पुत्र, पहला जार्ज, "हेलेन्स के राजा" के नाम से एथेंस की गद्दी पर आया। उसी समय से अनेक सुधार प्रारम्भ हुए। तथापि, उत्तम सृष्टिवैभव और समशीतोष्ण वायु के होते हुए भी, ग्रीस देश के अनेक भाग अब भी गिरी दशा में हैं। कारिंथ की संयोगभूमि से जलमार्ग खोदा गया है। व्यापार के नवीन नवीन उपाय प्रारम्भ हो गए हैं। ग्रीक लोग राजकाज में दक्षता दिखला रहे हैं; और राष्ट्रीय शिक्षा के लिए भी यत्न कर रहे हैं। फ्रांस, इङ्गलैंड, और रूस ने यूरप की प्राचीन सभ्यता के मुख्य स्थल-इस ग्रीस देश का उद्धार करके बड़ा पवित्र कार्य किया। तथापि यूरप में इस समय जो महा युद्ध हो रहा है,

उसके कारण भविष्य में यूरप के नकशे में क्या क्या परिवर्तन होते हैं, सो अभी देखना चाहिये।

प्राचीन नगर-राज्यों का अन्तःस्वरूप।

—○:o:○—

मान लीजिए कि, हम एथेंस; कारिंथ अथवा रोम के समान, प्राचीन काल के, किसी नगर में उपस्थित हैं; और तब देखिये कि, हम को क्या क्या दृश्य दिखाई देते हैं।

हमारा सर्वस्व यह शहर है। हमारा सारा देश, हमारा सारा राज्य, हमारे सब लोग और धर्म, सब कुछ, इसी एक शहर में है। शहर के बाहर हमारा कुछ नहीं। सब व्यवहार सिर्फ इसी एक शहर में है। किसी एक देवी अथवा देवता ने प्राचीन काल में इस शहर को बसाया, उस देवता का यहां खूब प्रभाव है। उसकी पूजा-अर्चा यहां सदैव होती रहती है। उस देवता के सहायक अन्य अनेक देवता भी हैं। उन सब की मूर्तियां और मन्दिर शहर में जगह जगह हैं। मन्दिर, बाग, फुलवाड़ियां, गुफाएँ, पहाड़ियां, तलाव, झरने, इत्यादि भिन्न भिन्न पवित्र स्थान भी भिन्न भिन्न देवताओं के निर्माण किये हुए जहां तहां मौजूद हैं। एथिनी देवी ने यहां ज्योंहीं एक भाला मारा, त्योंही भूमि से एक वृक्ष उत्पन्न हो गया; और वही यह 'आलिव' वृक्ष है। किसी और दूसरे देवता ने पानी का यह झरना उत्पन्न कर दिया है। देखिये, इस गुफा में अमुक साधु ने बैठकर तपस्या की थी। यह एक पत्थर है,

जो आप ही आप उठ आया। इसी प्रकार के अनेक दृश्य हैं। इन देवताओं की पूजा में सिर्फ नगर-निवासी ही सम्मिलित हो सकते हैं। गुलामों को नागरिकों के हक हासिल नहीं हैं। इसी प्रकार, अन्य शहरों से, किसी कारणवश जो पर-कीय लोग यहां आते हैं, उन्हें भी यहां कोई हक हासिल नहीं हैं। यहां के लोग अपना शहर छोड़ कर, सदैव के लिए, कहीं बाहर नहीं जा सकते; और यदि वे जावें तो मानो उनका देशनिकाला हो गया; और वे अपने अधिकारों से वंचित हुए। इसे आप एक प्रकार का सांसारिक मरण समझिये। उसे फिर कहीं आश्रय नहीं मिल सकता। मान लीजिए, एक मनुष्य किसी दूसरे शहर में महमान के तौर पर गया; अब उसे उस शहर के समाज में अथवा वहां के उत्सवों में स्थान नहीं मिलेगा। उसका वहां पूरा वहिष्कार ही समझिये।

शहर में प्रति वर्ष अनेक उत्सव और समारम्भ होते हैं। उस समय चित्र, मूर्तियां, इत्यादि रख कर स्थान को साजते और सुशोभित करते हैं। सब कठिनाइयों को एक ओर रख कर उत्सव में प्रत्येक को अवश्य जाना चाहिए। सब उत्सव खुले स्थान में होते हैं। देवता, की सवारी निकलती है। वाद्य, भजन, मंत्रघोष, इत्यादि खूब होता है। व्याख्यान होते हैं। इन उत्सवों के निमित्त धनवान और भक्त लोग, मन्दिर, चौकें, फौवारे, नाटकगृह, इत्यादि अपने व्यय से बनवाकर लोकोपयोग के लिए देते हैं। दीपोत्सव, नाच, रंग, खेल, बाज़ी, नाटक, कुश्ती, मुठभेड़, इत्यादि उत्सव के अंग हैं।

इनको सब लोग स्वतंत्रतापूर्वक देख सकते हैं, किसी को कुछ देना-लेना नहीं पड़ता।

गरीबों के लिए ऐसे उत्सवों का विशेष रूप से कराना धनवान् लोगों का कर्तव्य है। धनवानों को गरीबों का सब प्रकार से ध्यान रखना चाहिये। रोम नगर में धनवान् वकील गरीबों के मुकदमे बिना कुछ लिये ही लड़ देते हैं। गरीबों को मदद करना; उनको सब प्रकार के सुभीते कर देना, उनके लिए स्नानगृह इत्यादि बनवा देना, बड़े पुण्य का कार्य है। धनवान् लोग अपने बाग़-बगीचे गरीबों के लिए खुले रखते हैं। वे अपने घर, महल, हवेलियां, बँगले, इत्यादि स्थान और सारी सम्पत्ति, अपने बाद, गरीबों के लिए दे जाते हैं। मुख्य मुख्य लोगों को सार्वजनिक उत्सवों में मुख्य भाग लेना पड़ता है। वे व्याख्यान देते हैं, जिससे लोगों का स्वाभिमान जागृत रहता है, जो कि खास खास संकटों के अवसर पर और भी अधिक प्रदीप्त होता है। पेरिक्लीज़ डेमास्थेनिस, सिपियो, इत्यादि के उत्तमोत्तम भाषण सुन कर किसके हृदय में स्वाभिमान की ज्योति प्रज्वलित न होगी।

राज्य प्रबन्ध में प्रत्येक नगरनिवासी को अधिकार रहता है। आजकल की तरह उसे अपने प्रतिनिधि नहीं चुनने पड़ते। सब लोग एक होकर अपने कानून बनाते हैं—अपने राजनियम निर्धारित करते हैं। मानो सारा नगर आज कल का एक क्लब है। शहर का विस्तार भी कुछ बहुत बड़ा नहीं है। लाख-पचास हजार लोग हुए, तो बहुत हैं। चारों ओर नगरकोट बना हुआ है। कोट के बाहर बस्ती नहीं है। सब

जंगल है। शहर की सफाई ऐसी कुछ अपूर्व रहती है कि आजकल के आरोग्य-विभाग को उस पर बहुत ही आश्चर्य होगा। शहर, नदी, तालाब अथवा अन्य किसी स्थान में यदि कोई मलीनता अथवा दुर्गन्धि फैलावेगा तो उन स्थानों के देवता उस पर अवश्य ही कुपित होंगे। इस डर से सब लोग स्वच्छता रखते हैं। अर्थात् सारे व्यवहार धार्मिक बन्धनों से नियमित किये हुए हैं। आज-कल बड़े बड़े शहरों में गरीब लोगों को अत्यन्त मलीन और गन्दी दशा में रहना पड़ता है। ग्रीक लोगों का यह हाल नहीं है। ग्रीक लोग कभी ऐसे गन्दे नहीं रहेंगे। उन्हें कोई समाज में आने ही नहीं देगा। इस लिए शरीर और वस्त्र धोना, घिसना, मलना, साफ करना, ग्रीक लोगों का सब से बड़ा उद्योग है। स्त्री हो, चाहे पुरुष हो, स्नान किये बिना कोई नहीं रहेगा। रोमन लोगों को तो स्नान करने का बड़ा ही शौक है। ऐसे बड़े बड़े अनेक स्नान-गृह शहर में मौजूद हैं कि, जिनमें पांच पांच हज़ार लोग स्नान कर सकते हैं; और वहीं नाटक, खेल, व्याख्यान इत्यादि होते रहते हैं।

परन्तु इतने ही से यह न समझना चाहिए कि, ग्रीक लोगों में कोई अनिष्ट रिवाज नहीं है। युद्ध और लड़ाई-झगड़े सदैव होते रहते हैं। क्षुद्र से क्षुद्र कारण इसके लिए पर्याप्त होता है। जहां एक नगर ने दूसरे नगर को जीता, कि, बस वह नगर धूल में मिला ही समझिये। फिर उसका वहां नाम-निशान भी नहीं रहने पाता इसके सिवाय प्रत्येक शहर में गुलामों की संख्या भी बहुत बड़ी रहती है। नब्बे फी सदी गुलामों की बस्ती समझिए। इन गुलामों की दशा पशुओं

के समान ही रहती है। उन्हें कोई अधिकार नहीं रहते। ईश्वर ने मानों उन्हें सिर्फ इसी लिए उत्पन्न किया है कि, वे अपने मालिक के लिए अपना पसीना बहावें; और उनकी डांट सहें। स्त्रियों की दशा भी प्रायः गुलामों के समान ही समझिये। घर की नौकर स्त्रियां ही हैं। अब बतलाइए, इन प्राचीन नगर-राज्यों को अर्वाचीन काल की 'राष्ट्र'-संज्ञा किस प्रकार दी जा सकती है?

तरुण-भारत-ग्रन्थावली।

इस ग्रन्थावली में विशेषकर इतिहास, जीवनचरित्र और नीति के उत्तमोत्तम ग्रन्थ निकलते हैं। जो सज्जन आठ आना प्रवेश फीस एक बार भेज कर स्थायी ग्राहक बन जाते हैं, उनको ग्रन्थावली की सब पुस्तकें पौन मूल्य पर मिलती रहती हैं। पिछली पुस्तकें लेना न लेना ग्राहकों की इच्छा पर है, पर अगली पुस्तकें उनको अवश्य लेनी पड़ती हैं। जब कोई नवीन पुस्तक निकलती है, तब उसकी सूचना १०-१२ दिन पूर्व स्थायी ग्राहकों को भेज दी जाती है। इसके बाद पुस्तक वी० पी० से भेजी जाती है। अब तक निम्नलिखित पुस्तकें निकल चुकी हैं।

१—अपना सुधार।

यह पुस्तक प्रो० जान स्टुअर्ट ब्लेकी के "सेल्फ कलचर" के आधार पर लिखी गई है। इस में शारीरिक, मानसिक और आचरण-सम्बन्धी सुधार के अनुभवजन्य उपाय बताये गये है। इसके एक बार पढ जाने से ही नवयुवकों के चरित्र पर बहुत सुन्दर प्रभाव पडता है। मूल्य ॥=) आने।

२—फ्रांस की राज्यक्रांति।

अठारहवीं शताब्दी में राजकीय अत्याचारों से त्रस्त होकर फ्रास की प्रजा ने जो राज्यक्राति की थी, और जिसका असर यूरप के सम्पूर्ण देशों पर पड कर जनसत्ता की लहर प्रबल वेग से बह निकली, उसी का अत्यन्त मनोरञ्जक वृत्तान्त इस पुस्तक में दिया हुआ है। "सरस्वती" पत्रिका

ने इस पुस्तक की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि, "इतिहास होने पर भी इस पुस्तक के पढ़ने में उपन्यास का सा आनन्द आता है।" आप इस पुस्तक को मँगा कर एक बार अवश्य पढ़ें। मूल्य १=)।

३—महादेव गोविन्द रानाडे।

राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और औद्योगिक चारों विषयों में भारत की उन्नति के लिए पूर्ण प्रयत्न करने वाले महात्मा रानाडे का यह सुविस्तृत चरित्र बड़ी ही मार्मिक और ओजस्विनी भाषा में लिखा गया है। इसके पढ़ने से पाठकों के हृदय में स्वदेशाभिमान और स्वदेशभक्ति की ज्योति जागृत हुए बिना नहीं रहती। महात्मा रानाडे और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रमाबाई रानाडे के दो सुन्दर चित्र भी पुस्तक में यथास्थान दिये गये हैं। मूल्य ॥।) आने।

४—एब्राहम लिंकन।

जिस महात्मा ने एक झोपड़ी में जन्म लेकर अपने उद्योग, साहस, सदाचार और परोपकार के बल पर अमेरिका के राष्ट्रपति (प्रेसिडेन्ट) की पदवी प्राप्त की, उसी महात्मा का यह स्फूर्तिदायक चरित्र है। इसी महात्मा ने अनेक कष्ट सह कर अपने देश से गुलामी की घृणित प्रथा का सदैव के लिए निर्मूलन किया। अपने देश के लिए अन्त में अपने प्राण तक न्योछावर कर दिये! ऐसे स्वदेशहितैषी महात्मा का जीवन-चरित्र किसके लिए अनुकरणीय न होगा। अवश्य पढ़िये। मूल्य सिर्फ ॥=) आने।

५—ग्रीस का इतिहास।

यूरप में रोम और ग्रीस की सभ्यता अत्यन्त प्राचीन समझी

जाती है। ग्रीस की सभ्यता तो भारत की प्राचीन सभ्यता से बहुत कुछ मेल रखती है। सो उसी ग्रीस देश की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक क्रान्तियों का उपदेशप्रद वर्णन इस ग्रन्थ में दिया गया है। पुस्तक राष्ट्रीय विद्यालयों के लिए बहुत ही उपयोगी है। मूल्य १=)।

६—रोम का इतिहास।

ग्रीस देश की तरह रोम का भी प्राचीन इतिहास हमने प्रो० ज्वाला प्रसाद जी एम० ए० से लिखाकर निकाल दिया है। हिन्दी के ऐतिहासिक साहित्य में यह ग्रन्थ भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है। इतिहासप्रेमियों को इन ग्रन्थों का प्रचार बढ़ा कर ग्रन्थावली की सहायता करनी चाहिए। मूल्य १) रुपया।

७—दिल्ली अथवा इन्द्रप्रस्थ।

इस ग्रन्थ में दिल्ली का प्राचीन और अर्वाचीन इतिहास, वहां के दर्शनीय स्थलों का मनोरंजक वर्णन बड़ी ही मार्मिकता के साथ साहित्यिक भाषा में लिखा गया है। पुस्तक के अन्त में महाभारत काल से लेकर अब तक के राजाओं की नामावली भी वंशानुक्रम से दे दी गई है। बड़े महत्व की पुस्तक है। मूल्य ॥) आने।

८—इटली की स्वाधीनता।

मेज़िनी, ग्यारीबाल्डी, काबूर इत्यादि देशभक्तों ने अपनी मातृभूमि इटली को परकीय ज़ुल्मी शासन से मुक्त कर के स्वतंत्र कैसे बना दिया—इसका मनोरंजक और उपदेशप्रद

इतिहास इस पुस्तक में पंडित नन्दकुमार देव शर्मा ने बड़ी जोशीली भाषा में लिखा है। पुस्तक एक बार पढ़ते ही बनती है। मूल्य ॥) आने।

९—सदाचार और नीति।

इस पुस्तक में नौ निबन्धों के द्वारा सदाचार और नीति का मार्मिक विवेचन किया गया है। आत्मनिरीक्षण, आत्म-सयमन, श्रद्धा, समाज-निर्बन्ध, इत्यादि इसके निबन्ध एक से एक बढ़ कर हैं। आबालवृद्ध स्त्री पुरुष सब के लिए, इस पुस्तक की शिक्षा एक समान ही उपयोगी है। चरित्रगठन का अत्यन्त अनुपम ग्रन्थ है। मूल्य १) रुपया।

१०—मराठों का उत्कर्ष।

यह पुस्तक देशभक्त रानाडे के "राइज आफ मराठा पावर" का अनुवाद है। इसमें यह दिखलाया गया है कि, छत्रपति शिवाजी महाराज ने किस प्रकार हिन्दू साम्राज्य स्थापित किया, और उस समय देश की सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक स्थिति कैसी थी। पुस्तक ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्व की है, और शिवाजी से लेकर पेशवाओं तक के महाराष्ट्र साम्राज्य पर इससे बहुत अच्छा प्रकाश पडता है। पुस्तक सजिल्द है। मूल्य १॥) रुपया।

मिलने का पता—

व्य , तरुण-भारत-ग्रन्थावली,

दारागंज, प्रयाग।